परोपकाराय सताम् विभूतयः



श्रीमद्देवेन्द्रसूरिविरचितम्

चैत्यवंदनादि भाष्यत्रयम्.

स्वधर्मी भाइओ व्हेनोने भणवा निमित्ते

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता.

श्री जैन श्रेयस्कर मंडळ तरफथी

वेणीचंद सुरचंद शाह.—म्हेसाणा.

आवृत्ति बीजी. | कीं. ०-६-० प्रत १०००.

अमदावाद-श्री 'सत्यविजय' प्रिन्टिंग प्रेसमां
शा. सांकलचंद हरीलाले छाप्युं.
पांचकुवा-नवादरवाजा.

संवत् १९६९. वीर संवत् २४३९. सने १९१३.

 वांचो. 

पुस्तकने जेम तेम ज्यां त्यां रखडतुं मूकवुं नहि.

अशुद्ध हाथे पुस्तकने अडकवुं नहि, तेमज

उघाडे मुखे पुस्तक वांचवुं नहि.

सर्वेऽपि सन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः;
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चित्पापमाचरेत्. १

भावार्थः—सर्व कोइ प्राणी सुखी थाओ, सर्व जीवो निरोगी थाओ, सर्व प्राणीओ कल्याण पामो, कोइ पण जीव पापनुं आचरण न करे ?

धर्मबिन्दु.



प्रस्तावना.

ए तो सर्व कोइने सुविदितज छे के जेम जेम जमानो बदला-तो जाय छे तेम तेम भाषानो फेरफार काळ क्रमे थतो जाय छे, तेटला माटे चालु जमानानी भाषामां लखायेला ग्रंथो जनसमूहने विशेष उपयोगी थाय एटला माटे पूर्वाचार्य कृत ग्रंथो चालु ज-मानानी कसायली कलमथी लखायेला भाषांतरो साथे अथवा नवीन शैलीथी विद्वान् मुनि महाराज तथा श्रावक वर्यना लखे-ला ग्रन्थोने छपावी विना मूल्ये के अल्प मूल्ये आपवाना हेतुथी अमारो प्रयास आज केटलांक वर्ष थयां चालु छे. ज्ञान दान ए मोक्ष प्राप्तिनो सरळ मार्ग छे तेटला माटे सर्व कोइने ओछा खर्चथी वधारे लाभ आवा पुस्तको द्वारा मळे ए सवड प्रथम सा-चवानो अमारो खास उद्देश छे.

व्यावहारिक के धार्मिक कोइ पण जातनी क्रिया तेनो संपूर्ण हेतु स्वरुप, विधि, फळ वगेरे समज्या विना करवामां आवे तो तेथी जोइए तेटलो लाभ प्राप्त थतो नथी, तथा धर्म पामवाने पुष्टालंबनरुप देवगुरुनी भक्ति अने तपश्चर्या छे. तेथी तेनुं दरेक बाबतनुं हेतु साथेनुं ज्ञान बाळजीवोने सेहेलाइथी मळे तेटला माटे अमोए अमारी ग्रंथमाळाना २३ मा मणकातरिके श्री चैत्य-वंदनादि भाष्यत्रयं अर्थ साथे प्रसिद्ध करेल छे.

आ ग्रंथना प्रणेता आश्री थोडुंक वर्णन अत्र आपवुं प्रासं-गिक छे. श्री तपगच्छरुपी गंगा प्रवाहने हिमालय तुल्य श्रीमद् जगच्चंद्र सूरि के जेमने आयंबिल तपना प्रभावथी चित्तोडना

राणाए वश थइ ' तपा ' एवुं बिरुद आप्युं (जेथी तपगच्छ-नाम पड्युं) अने ते राणानी सभामां दिगंबराचार्यो साथे वाद करतां हिरा पेठे जे अभेद्य रह्याथी जेमने 'हिरला जगच्चंद्र सूरि' एवुं पण बिरुद राणाश्रीए आप्युं हतुं. तेमना शिष्य श्रीमद् देवेंद्र सूरिए त्रय भाष्यात्मक आ ग्रंथ रचेलो छे. उक्त महात्माए आ सिवाय १ वृंदारुवृत्ति २ सारवृत्ति दशा ३ कर्मग्रंथ दीपास्त-मोपहा ४ सिद्धपंचाशिका, ५ श्राद्धदिनकृत्यसूत्रवृत्ति ६ धर्म-रत्नवृत्ति ७ नविन कर्म ग्रंथ पांच वृत्ति सहित,८ सिद्ध दंडिका-स्तव ९ सुदर्शन चरित्र १० सिरिउसहवद्धमाण प्रमुख स्तवनो वगेरे ग्रंथो बनावी महद् उपकार कर्यो छे. तेमने ' विद्यानंद ' अने 'धर्मकिर्त्ति' उपाध्याय नामना बे शिष्यो हता. धर्मकिर्त्तिने पाछळ-थी सूरिपद मळ्युं त्यारे तेमनुं ' [illegible]घोषसूरि ' एवुं नाम पड्युं. तेओ देवेंद्रसूरिनी पाटे आव्या. तेमणे पण शत्रुंजयादि तीर्थना कल्पो, चोविशजिननी स्तुति नंदिस्तुति वगेरे संस्कृत ग्रंथो तथा केटलाएक प्राकृत प्रकरणो अवचूरि साथेना बनावेला छे.

आ ग्रन्थमां चैत्यवंदन, गुरुवंदन अने पच्चख्खाण एम त्रण भाष्य अनुक्रमे मूळ अर्थ अने विवेचन साथे आपवामां आवेल छे.' चैत्यवंदन भाष्य' मां चैत्यवंदन करती वखत ध्यान राखवा योग्य बाबतोनुं २४ द्वार वडे वर्णन करेल छे, ते आ प्रमाणे—१ दश त्रिक, २ पांच अभिगम, ३ कइ दीशाए रही चैत्यवंदन कर-४ त्रण प्रकारना अवग्रह; ५ त्रण प्रकारनी वंदना, ६ प्रणि-

आवतां सूत्रोना अक्षरो, ९ पदो अने १० संपदा (विसामां) नी संख्या—मान, ११ पांच दंडक, १२ देववंदनना बार अधिकार, १३ चार वंदन करवा योग्य, १४ स्मरण करवा योग्य केटला? १५ चार प्रकारे जिन, १६ चार थोयना हेतु, १७ आठ निमित, १८ बार हेतु, १९ काउस्सग्गना १६ आगार, २० काउस्सग्गना १९ दोष, २१ काउस्सग्गनुं प्रमाण, २२ स्तोत्र—स्तवन केवां प्रकारनां थवां जोइए, २३ सात वखत चैत्यवंदन अने २४ त्याग करवा योग्य दश आशातना. ए प्रकारना वर्णनथी प्रथम भाष्य पूर्ण थाय छे. त्यार पछी 'गुरुवंदनभाष्य' शरु थाय छे. तेमां त्रण प्रकारनुं वंदन, तेमां थोभवंदन पैकी वखत पंचांग प्रणाम शा हेतुए करवो, द्वादशावर्त्तवंदन केवी रीते थाय, केवा प्रकारनुं वंदन करवुं ? पांच प्रकारना वंदन कोने, कोणे, शामाटे, केटलीवार करवा ? वंदनना बावीश द्वार जेवां के—वांदणाना पांच नाम, पांच उदाहरण, पांच अवंदनीय, पांच वंदनीय, चार अदाता, चार वंदनना दाता, पांच स्थानके वंदननो निषेध, चार स्थानके वंदननी आज्ञा, आठ कारणे वांदणा देवा, पचीश आवश्यक, मुहपत्तिनी २५ पडिलेहणा, शरीरनी २५ पडिलेहणा, बत्रीश दोष रहित वंदन करवुं, वांदणाथी निपजता छ गुण, गुरु स्थापनानुं वर्णन, बे अवग्रह, वंदन सूत्रना २२६ अक्षर, २५ गुरु अक्षर, पद ५८, छ गुरु वचन, वर्जवा योग्य आशातना तेत्रीश, बे प्रकारनो संक्षिप्त प्रतिक्रमण विधि, एम बावीस द्वारनुं स्वरूप अनुक्रमे वर्णवीने गुरुवंदन

भाष्य' सम्पूर्ण थाय छे, त्यार बाद ' पच्चख्खाण भाष्य ' शरु थाय छे. जेमां दश प्रकारनां पच्चख्खाण, पच्चख्खाणना चार विधि, आहारना प्रकार, बावीश आगार, दश विगइ, त्रीश निवियातां, बे प्रकारना भांगा, छ प्रकारनी शुद्धि, अने पच्चख्खाणनुं फळ, ए द्वारो अनुक्रमे वर्णवेला छे.

त्यार बाद अभ्यासीओने शाब्द बोध साथे अर्थ शीखवा सुगम पडे माटे भाष्य पछी उपदेश रत्नकोष अने रत्नाकर पञ्चविंशतिका अर्थ साथे दाखल करेल छे. नीतिमय व्यवहार चलाववानुं इच्छता दरेक मध्यस्थ जनोने उपदेश रत्नकोषना दरेक हितवचन हृदयमां धारण करी तेने आचारमां लाववा जरुर छे.

ए रीते एकंदर अत्यंत उपयोगी आ विधि प्रतिपादक ग्रन्थ दरेक जिनआज्ञा रुचि भाइ व्हेनोने खास भणवा योग्य छे, तेम छतां प्रमादवशात् अगर मति मंदताथी अभ्यास न करी शके तेवोओए पण खास करीने बे चार वखत पण आ ग्रन्थनुं वांचन मनन करवानी आवश्यकता छे.

आ विषयने उपयोगी श्रीमान हरिभद्र सुरिकृत पूजा पंचाशक, चैत्यवंदन पंचाशक अने दीक्षा पंचाशकना मुनिश्री 'कर्पूरविजयजी महाराजना लखेला' भाषांतरो अमारा तरफथी प्रगट थयेला भाष्यत्रयमूना गुजराती पुस्तकमां आपेलां छे, ते, तथा ' जैनहितबोध'मां विविध विषय संग्रहना हेडींग नीचे दशत्रिक, पांच अभिगम, ३३ आशातना, देव गुरुना अवग्रहनी मर्यादा, अष्ट प्रकारी पूजाना पवित्र हेतु वगेरे बाबतनो घणो

स्फूट सरळ उल्लेख उक्त मुनिश्रीए करेलो छे ते खास मनन करवा 'योग्य होवाथी तेने संपूर्ण वांचवा माटे खास भलामण करवामां. आवे छे.

आ ग्रन्थनी पहेली आवृत्तिनी १२५० नकल 'श्रीमन्महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी जैन संस्कृत पाठशाळा मेसाणा ' तरफथी छपाइ हती पण ते बधी बुको थइ रहेवाथी आ बीजी आवृत्ति अमोए छपावी छे.

श्रीमद्देवेन्द्रसूरि कृत भाष्य उपर ' श्री ज्ञानविमळसूरिए बनावेला 'टबा' अने 'सोमसुंदर सुरिकृत अवचूरिनी' जुनी प्रतोना आधारे आ आवृत्तिमां मूळ तेमज बाळावबोधमां केटलोक सुधारो कर्यो छे जेथी प्रथम आवृत्ति करतां आ आवृत्ति सर्व कोइने विशेष आवकार दायक थइ पडशे.

आ ग्रन्थ छपाववामां श्री कच्छ—नळीआ निवासी शेठ हीरजी लुंभाना धणीयाणी बाइ टीकाबाइ तरफथी रु. ५०) तथा श्री लोदरा निवासी शेठ जेचंद खीमचंद तरफथी रु.५०) मळी रु. १००) नी अमोने मदद मळी छे जेथी मुनिमहाराजाओने आ ग्रन्थ भेट दाखल आपी शकाशे.

छेवटे द्रव्य सहाय आपनारा सद् गृहस्थोनो अंतःकरणथी आभार मानी, ग्रन्थ छपाववामां मतिमंदताथी,के द्रष्टि दोषथी जे भूलो रही होय तेने माटे त्रिविध मिच्छामि दुक्कडं आपी, विद्वानोने सुधारीने वांचवानी वीनंति करी विरमीए छीए. इतिशम्.

ली० प्रसिद्ध कर्त्ता.

विषयानुक्रम.





श्रीदेवेंद्रसूरिविरचितं चैत्रवंदनादिभाष्यत्रयम्

बालावबोधसहितं प्रारभ्यते.

तत्र प्रथमं

श्रीचैत्यवंदनभाष्यं प्रारंभोऽयं

ग्रंथकर्ता मंगलाचरण माटे गाथा कहे छे.

वंदित्तु वंदणिज्जे, सव्वे चिइवंदणाइ–सु-
वियारं ॥ बहु–वित्ति–भास–चुण्णी–सुयाणुसारे-
ण–वुच्छामि ॥ १ ॥

बालावबोध कर्तानुं मंगलाचरण कहे छे.

प्रणम्य प्रणतानंद–कारकं विघ्नवारकं ॥
श्रीमद्विजयदेवाह्वं, लसद्भावणयधारकम् ॥ १ ॥

मेरुधीरं स्फुरद्धीरं, गम्भीरं नीरधीशवत् ॥ भाष्य-त्रयार्थ-बोधाय, बालबोधो विधीयते ॥ २ ॥

भक्तजनोने आनंदना करनार अने विघ्नने दूर करनार अने देदीप्यमान लावण्यने धारणकरनार पूज्य विजयदेव नामना मारा गुरुने अने मेरुपर्वत जेवा धैर्यवाळा, महासागरनी पेठे गंभीर अने देदीप्यमान एवा वीरभगवानने नमस्कार करीने त्रण भाष्यना अर्थनो बोध थवा माटे बालावबोध करवामां आवे छे. २

अर्थ—(वंदणिज्जे के०) वंदनीयान् एटले वांदवा योग्य एवा जे (सव्वे के०) सर्वे श्रीतीर्थंकरदेव अथवा श्री अरिहंतादिक (सव्वे के०) सर्वे पांचे परमेष्ठी तेमने (वंदित्तु के०) वंदित्वा एटले वांदीने (चिइवंदणाइ के०) चैत्यवंदनादिक एटले चैत्यवंदन तथा आदिशब्दथी गुरुवंदन अने पच्चक्खाण पण लेवां; ते रूप (सुवियारं के०) सुविचारं एटले रूडा विचारप्रत्ये (बहु के०) घणा एवा जे (वित्ति के०) वृत्ति, (भास के) भाष्य अने (चुण्णी के०) चूर्णि तथा निर्युक्ति प्रमुख ग्रंथो तद्रूप (सुयाणुसारेण

के०) श्रुतने अनुसारे (वुछामि के०) कहीश. परंतु महारी मतिकल्पनाये नहीं कहीश. एटले धर्मरुचि जीवोने पंचांगी सम्मत चैत्यवंदनादिकनो विधि कहीश. कारण के समकितनुं बीज तो शुद्ध देव, शुद्ध गुरु अने शुद्ध धर्मनुं स्वरूप जाणवुं, अने सद्दहवुं ते छे. माटे प्रथम अढार दोष रहित, निष्कलंक एवा जे श्रीअरिहंत ते शुद्ध देव छे. तेना स्थापनादिक चारे निक्षेपा वांदवा योग्य छे, तो इहां चैत्यशब्दे श्रीअरिहंत तथा श्रीअरिहंतनी प्रतिमा जाणवी. तेनी जे वंदना करवी, ते विधि सहित करवी; ते विधि कहीश ॥ इति ॥ १ ॥

हवे ते चैत्यवंदननो विधि मूल तो चोवीश द्वारे सचवाय छे, ते चोवीशना वली उत्तर ज्ञेद २०७४ थाय छे. माटे चोवीश द्वारनां नाम, प्रत्येक द्वारना उत्तर ज्ञेदनी संख्या सहित चार गाथाये करी कहे छे.

ग्गह तिहा उ वंदणया ॥ पणिवाय–नमुक्कारा, वन्ना सोल–सय–सीयाला ॥ २ ॥ इगसीइ सयं तु पया, सगनउइ संपयाउ पणदंमा ॥ बार अहिगार चउवं,–दणिज्ज सरणिज्ज चउ-ह जिणा ॥ ३ ॥ चउरो थुइ निमित्तठ, बारह हेऊ अ सोल आगारा ॥ गुणवीस दोस उस्स-ग्गमाण थुत्तं च सगवेला ॥ ४ ॥ दसआसायणचाउ, सव्वे चिइवंदणाइ ठाणाइं ॥ चउ-वीस डुवारेहिं, डुसहस्सा हुंति चउसयरा ॥५॥ इति दारगाहा ॥

अर्थ–प्रथम देव वांदतां नैषेधिकी आदि (दहतिग के०) दश त्रिक साचववा जोइये, तेनुं द्वार कहीश, बीजुं (अहिगमपणगं के०) अन्निगमपंचक एटले पांच अन्निगमनुं द्वार कहीश, त्रीजुं देव वंदन करतां स्त्रीने कयी दि शाये अने पुरुषने कयी दिशाये उन्ना रहेवुं जोइये, ते (डुदिसि के०) द्विदिशि एटले बे दिशाउनुं द्वार कहीश, चोथुं जघन्य, मध्यम

अने उत्कृष्ट एवा (तिउग्गह के०) त्रण प्रकार ना अवग्रहनुं द्वार कहीश, पांचमुं (तिहा उ वंदणया के०) त्रिधा तु वंदनया एटले त्रण प्रकारे वली चैत्यवंदना करवी. तेनुं द्वार कहीश, छठुं पंचांग एटले पांच अंगे (पणिवाय के०) प्रणिपात करवो, तेनुं द्वार कहीश, सातमुं (नमुक्कारा के०) नमस्कार करवानुं द्वार कहीश, आठमुं देववंदनना अधिकारे जे नवकार प्रमुख नव सूत्रो आवे छे, तेना (वण्णा के०) वर्ण एटले अक्षर ते (सोलसयसीयाला के०) सोलसो ने सुमतालीश थाय, तेने गणी देखाडवानुं द्वार कहीश ॥ २ ॥

नवमुं देववंदनना अधिकारे नवकार प्रमुख नव सूत्रोनां (इगसीइसयं के०) एकसोने एक्यासी (तु के०) वली (पया के०) पदो थाय छे ते देखाडवानुं द्वार कहीश, दशमुं एज नव सूत्रोनां (सगनउइ के०) सप्तनवति एटले सत्ताणुं (संपयाउ के०) संपदाउ थाय छे, ते देखाडवानुं

द्वार कहीश, अगीयारमुं नमुत्थुणादिक (पणदंमा केº) पांच दंमकनुं द्वार कहीश, बारमुं चैत्यवंदनने विषे पांच दंमकमां (बार अहिगार केº) बार अधिकार आवे छे, तेनुं द्वार कहीश, तेरमुं (चउ वंदणिज्ज केº) चार वांदवा योग्य तेनुं द्वार कहीश, चौदमुं उपद्रव टालवा निमित्ते एक (सरणिज्ज केº) स्मरण करवा योग्य जे सम्यग्दृष्टि देवो तेमनुं द्वार कहीश, पन्नरमुं नाम स्थापनादिक (चउह जिणा केº) चार प्रकारना जिननुं द्वार कहीश ॥ ३ ॥

सोलमुं (चउरो थुइ केº) चार स्तुति कहेवानुं द्वार कहीश, सत्तरमुं देव वांदवामां पापखपणादिक (निमित्तठ केº) निमित्त आठ छे, तेनुं द्वार कहीश, अढारमुं फल साधवा निमित्ते (बारहेऊ केº) बार हेतुनुं द्वार कहीश, (अ केº) वली उंगणीशमुं अपवादे काउस्सग्गना (सोलआगारा केº) सोल आगारनुं द्वार कहीश, वीशमुं काउस्सग्गमां (गुणवीसदोस केº)

उगणीश दोष उपजे तेनुं द्वार कहीशं, एकवीसमुं (उस्सग्गमाण के०) काउस्सग्गना प्रमाणनुं द्वार कहीश, बावीशमुं श्रीवीतरागनुं (थुत्तं के०) स्तवन केवा प्रकारे करवुं? तेनुं द्वार कहीश, त्रेवीशमुं (अ के०) वली दिन प्रत्ये चैत्यवंदन (सगवेला के०) सात वेला करवुं, तेनुं द्वार कहीश ॥ ४ ॥

चोवीसमुं देववंदन करतां देरासरमां तांबूल प्रमुख (दसआसायणचाउ के०) दश आशातनानो त्याग करवो, तेनुं द्वार कहीश, एम (सव्वे के०) सर्वे (चिइवंदणाइ ठाणाइं के०) चैत्यवंदननां स्थानक ते (चउवीसडुवारेहिं के०) चोवीश द्वारे करीने (डुसहस्सा के०) बे हजारनी ऊपर (चउसयरा के०) चुम्मोतेर (हुंति के०) थाय ॥ ५ ॥ (दारगाहा के०) ए द्वारनी गाथाउ चार जाणवी ॥

चोवीश द्वारनां उत्तरभेदसहित यंत्रनी स्थापना.

अंक. मूलद्वारनां नाम. उत्तरभेदनी संख्या. सरवालो

हवे ए चोवीशे द्वारना उत्तर भेदनुं स्वरूप अनुक्रमे देखाडता थका प्रथम दश त्रिकोनुं द्वार कहता छतो बे गाथाये करी दश त्रिकोना नाम कहे छे.

तिन्नि निसीही तिन्नि उ, पयाहिणा तिन्नि

चेव य पणामा ॥ तिविहा पूया य तहा, अव-त्थ-तियं-भावणं चेव ॥ ६ ॥ तिदिसि-निरक्ख-ण-विरई, पयभूमि-पमज्जणं च तिक्खुत्तो ॥ व-न्नाइ- तियं मुद्दा,-तियं च तिविहं च पणि-हाणं ॥ ७ ॥

अर्थ-प्रथम देरासरे जातां (तिन्निनिसी-ही के०)त्रणवार नैषेधिकी कहेवी, बीजी देरा-सरे (तिन्नि उ के०) त्रण वली (पयाहिणा के०) प्रदक्षिणा देवी, त्रीजी (तिन्नि के०) त्रण वार (चेवय के०) ए निर्धार वाचक श-ब्द छे (पणामा के०) प्रणाम करीयें, चोथी (तिविहा के०) त्रण प्रकारनी अंगपूजादिक पूया के०) पूजा करवी, पांचमी (य के०) वली (तहा के०) तथा प्रभुनी पिंडस्थावस्था-दिक [अवत्थतियभावणं के०] अवस्थात्रयनुं भाववुं (चेव के०) निश्चे जाणवुं. ॥

छठी चार दिशिमांथी मात्र भगवान् जे दिशिये बेठेला होय, तेज एक दिशिनी सामुं

जोवुं, अने शेष (तिदिसिनिरक्खणविरई के०) त्रण दिशिनी सन्मुख जोवानुं विरमण करवुं, सातमी (पयभूमिपमज्जणं के०) पग मूकवानी भूमिनुं प्रमार्जन ते (च के०) वली (तिक्खुत्तो के०) त्रण वार करवुं, आठमी (वन्नाईतियं के०) वर्णादिकना आलंबन त्रण कहेशे (च के०) वळी नवमी (मुद्दतियं के०) त्रण मुद्रा कहेशे, दशमी (तिविहं के०) त्रण प्रकारें (च के०) वळी (पणिहाणं के०) प्रणिधान कहेशे. जे त्रण बोलनो समुदाय तेने त्रिक कहीये, ए दश त्रिकनां नाम कह्यां ॥ ७ ॥

हवे प्रथम निसीहि त्रण कये कये स्थानके करवी ? ते कहे छे.

घर-जिणहर-जिणपूया-वावारच्चायर्ज नि-सीहि-तिगं ॥ अग्गद्दारे मज्के, तइया चिइ-वं-दणा-समए ॥ ८ ॥

अर्थ—जे सावद्य व्यापारनो मन, वचन अने कायाये करी निषेध करवो, तेने निसीहि

कहीये, ते एक पोताना (घर के०)घरनां बीजी (जिणहर के०) जिनघर ते देरासरनां, त्रीजी (जिणपूत्र्आ के०) श्री जिनेश्वरनी पूजानां, जे (वावार के०) व्यापार एटले ए त्रणना जे व्यापार तेने (चायर्ज के०) त्यागवाथकी नि-सीहितिगं के०) नैषेधिकीत्रिक थाय! तेमां प्र-थम निसीहि ते पोताना घर, हाट, परिवारा-दिक संबंधी जे सावद्य व्यापार ते सर्व निव-र्त्तावबा माटे श्री जिनमंदिरने (अग्गद्दारे के०) अग्रद्वारे कहे. एटले देरासरनां मूल बारणे दरवाजामां पेसतांज कहे, पण इहां श्रीजिनघरने पुंजवा समारवा संबंधि तथा पूजा संबंधि सर्व व्यापार आदरे. तथा बीजी निसीहि ते जिनघर संबंधी व्यापारथी निवर्त्तवा रूप देरासरनी (मज्जे के०) मध्य गन्नारामां पेसतां कहे, तिहां देरासर पम्या आखम्यानी चिंतानो तथा देरासरमां पुंजवादिकनो त्याग करीने द्रव्य पूजादिकनो प्रारंज्न करे; एम सर्व प्रकारनीपूजा

विधिसहित साचवी रह्या पछी (तइया. के०) त्रीजी निसीहि जे जिनपूजा संबंधि व्यापारना त्याग रूप छे, ते (चिइवंदणासमए के०) चैत्यवंदन करवाना अवसरे कहे, इहां द्रव्यपूजा व्यापार सर्व निवर्त्तावीने केवळ भावपूजारूप चैत्यवंदन स्तवनादिकनो एकाग्र चित्ते करी पाठ करे, ए रीते त्रण निसीहि साचवे.

अथवा मन, वचन अने कायाये करी घर संबंधी व्यापार निषेधवारूप त्रण निसीहि देरासरना अग्रद्वारमां कहेवी, अने तेज प्रमाणे मनादिक त्रणे योगे देरासर संबंधी व्यापार त्यागवा आश्रयी त्रण निसीहि गभारामां कहेवी; तथा वळी चैत्यवंदनादि कहेवाने अवसरे पण मन, वचन, कायाये करी जिनपूजा व्यापार त्यागरूप त्रण निसीहि कहेवी. ए रीते दरेक वखते मन, वचन अने कायाना योगे करी त्रण त्रण निसीहि कहेवी. अथवा दरेक वखते एकज निसीहि कहेवी. परंतु घर संबंधी, देरा संबंधी अने जिन

पूजा संबंधी व्यापार निषेध करीये ठीये,एम सम-
जीने देरासरमां पेसतांज त्रणे निसीहि कही
देवी नहीं, ए तात्पर्य छे. पौषधमां दर्शन करवा
जतां देहेरासरमां प्रवेश करतां अने चैत्यवंदन
अवसरे एम बे निसीहि कहेवी, केमके द्रव्य
पूजा करवानी नथी. ए प्रथम निसीहि त्रिक
कह्युं. ॥ ८ ॥

हवे बीजुं प्रदक्षिणात्रिकनुं नाम प्रथम
सामान्ये छठी गाथामां कहेलुं छे, तेनो प्रगट
अर्थ छे, माटे जूडुं वखाण्युं नथी. तथापि चै-
त्यना दक्षिण जागथी त्रण प्रदक्षिणा देवी,एटले
संसारना जवभ्रमण टालवारूप जावनाये श्री
प्रतिमाजी महाराजनी जमणी बाजुथी अनुक्रमे
ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधनारूप त्रण
फेरा फरवा, ए बीजुं प्रदक्षिणात्रिक जाणवु.

हवे त्रीजुं प्रणामत्रिक कहे छे.

अंजलि बद्धो अद्धो,-णउ अ पंचंगउ

तिपणामा ॥ सवत्र वा तिवारं, सिराइं-नमणें पणाम-तियं॥ ए ॥

अर्थ--श्रीजिन प्रतिमा देखी बे हाथ जोमी ललाटे लगामी प्रणाम करीये ते प्रथम (अंजलिबद्धो के०) अंजलिबंध प्रणाम कहीये, तथा कटिदेशथी उपरलुं अर्धुं शरीर तेने लगारेक नमामी प्रणाम करीये, अथवा ऊर्ध्वादि स्थानके रह्यां थकां कांइक शिर नमामीये, तथा शिरकरादिके करी ज्ञूमिका पादादिकनुं फरसवुं ते बीजो (अद्धोणउ के०) अर्द्धावनत प्रणाम कहीये, तथा (अ के०) वली बे जानु, बे कर अने पांचमुं उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच अंग नमामी खमासमण आपीये, ते त्रीजुं (पंचंगउ के०) पंचांग प्रणाम जाणवो. ए (तिपणामा के०) त्रण प्रणाम जाणवा.

(वा के०) अथवा (सवत्र के) सर्वत्र प्रणाम करवासमये (तिवारं के०) त्रण वार (सिराइनमणे के०) मस्तकादिक नमामवे करी

एटले शिर, कर अंजली प्रमुखे करी जे त्रण वार नमन आवर्त्त करवुं ते (पणामतियं के०) प्रणामत्रिक जाणवुं. ए त्रीजुं प्रणामत्रिक कह्युं.

हवे चोथुं पूजात्रिक कहे छे.

अंगग्गज्ञावज्ञेया, पुप्फाहार–थुइहिं पूयतिगं ॥ पंचोवयारा अठो–वयार सवोवयारा वा ॥ १० ॥

अर्थ–(अंगग्ग के०) अंगने अग्र एटले पहेली अंगपूजा अने बीजी आगल ढोवारूप अग्रपूजा तथा त्रीजी चैत्यवंदनरूप(ज्ञाव के०) ज्ञावपूजा ए त्रण (ज्ञेया के०] ज्ञेदथकी अनुक्रमे (पुप्फाहारथुइहिं के०) पुष्पाहारस्तुतिज्ञिः एटले पहेली पुष्प केसरादिक अने बीजी आहार फलादि ढोकवे तथा त्रीजी स्तुति करवे करीने (पूयतिगं के०) पूजा त्रिक थाय छे.

तेमां प्रथम अंगपूजा ते श्रीवीतरागनी पूजा अवसरे मनःशुद्धि, वचनशुद्धि, कायशुद्धि, वस्त्रशुद्धि, नीतिनुं धन, पूजाना उपकरणनी

शुद्धि अने भूमिशुद्धि, ए सात वानां शुद्ध करी धवलं निर्मल सुपोत धोतीयां पुरुष पहेरे, अने जेनो आठपडो मुखकोश थाय, एहवुं एक-साडी उत्तरासंग धारण करे, एवी रीते पुरुषे पूजा अवसरे बे वस्त्र राखवां, अने स्त्रीने तो विशेष वस्त्रादिकनी शोभा जोइये, तथापि हमणा संप्रदाये त्रण वस्त्र पहेरी पूजा करे, ए रीते वस्त्र पहेरी आशातना टाळतो थको प्रथम मोरपींछीए करी श्रीजिनबिंबने पुंजे, पुंजवाथी मांडी न्हवण, अंगलूहणां धरतो, विलेपन, भूषण, अंगरचना करतो, पुष्प चडावतो, जिनहस्तमां नालिकेरादिक स्थापतो, धूपाक्षेप, सुगंधवासक्षेपणादिक करतो पूजा करे; ए सर्व अंगपूजा जाणवी.

बीजी अग्रपूजा; तेमां धूप, दीप, नैवद्यादि शब्दे आहार ढोकन, पुष्प प्रकर–गंथिम, वेढिम, पूरिम, संघातिमादि भेद, जल–लवणोत्तारण, आरती, मंगलदीपक, अष्टमंगलाभरण ए सर्व बीजी अग्रपूजा जाणवी.

त्रीजी नावपूजामध्ये—गीत, गान, नाटक, छत्र, चामर, विंजवादि तथा देवद्रव्य वधारवा प्रमुख सर्व नावपूजा जाणवी. ए पूजात्रिक कह्युं. अथवा करवा, कराववा अने अनुमोदवारूप ए पण त्रिविध पूजा जाणवी.

अथवा एक विघ्नोपशामिनी, बीजी अभ्युदय साधिनी, त्रीजी निवृत्तिदायिनी, ए पूजात्रिक जाणवुं. यदुक्तं ॥ विग्घोवसामिगेगा, अप्नुदयसाहणि नवे बीया ॥ निव्वुइकरणी तइया, फलयाउ जहड नामेहिं ॥१॥ इत्यावश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥

(वा के०) अथवा (पंचोवयारा के०) पंचोपचारा पूजा ते १ गंध, २ माल्य, ३ अधिवास, ४ धूप, ५ दीप. अथवा १ कुसुम, २ अक्षत, ३ गंध, ४ धूप, ५ दीप ए पांच प्रकारे पण प्रथम अंगपूजा जाणवी.

बीजी (अडोवयार के०) अष्टोपचार एटले १ कुसुम २ स्कय ३ गंध ४ पईव, ५ धूव ६ नै-

वेज्ज ७ जल ० फलेहिं पुणो ॥ अठविह कम्म-महणी, अठुवयारा हवइ पूया ॥ १ ॥ इति आवश्यकनिर्युक्तिवचनं, ए आठ प्रकारे पूजा जाणवी.

त्रीजी (सव्वोवयारा के०) सर्वोपचारा एटले सर्वोपचारपणे पूजा ते प्रणाममात्रादिक सर्व लोकोपचार विनय ते सर्व पूजा जाणवी. अथवा जेटली वस्तु मळे तेणे करीने पूजा करवी, ते सर्वोपचार पूजा जाणवी. तिहां १ न्हवण, २ विलेपन, ३ देवडुष्यवस्त्र, तथा चक्षुयुगल, ४ वास पूजा, ५ फूलपगर, ६ फूलमाल, ७ छूटां फूल, ० चूर्ण-घनसारादि, तथा आंगी रचनादि, ए ध्वजारोपण, १० आज्ञरण, ११ फूलघर, १२ फूलनो मेघ, १३ अष्टमंगल रचना, १४ धूप दीप आरती मंगल दीपादिक नैवेद्य ढोकन, १५ गीतगान, १६ नाटक, १७ वाजित्र. ए सत्तर प्रकारे पूजा, तथा वली २१ प्रकारे पूजा, तेनां नाम कहे छे. १ स्नात्र, २ विलेपन, ३ ज्ञूषण, ४ फल, ५ वास, ६ धूप, ७ दीप, ० फूल, ए तंडुल, १० पत्र, ११ पूगी,

१२ नैवेद्य, १३ जल, १४ वस्त्र, १५ ठत्र, १६ चामर, १७ वाजिंत्र, १८ गीत, १९ नृत्य, २० स्तुति, २१ देवद्रव्यकोशवृद्धि, एवं एकवीश ज्ञेद, तथा एकशो आठ प्रकारादि ए सर्व बहुविध पूजा जाणवी. ए रीते पंचोपचार, अष्टोपचार अने सर्वोपचार मली त्रण ज्ञेदे पूजा जाणवी.ए चोथुं पूजात्रिक कह्युं ।१०।

हवे पांचमुं अवस्थात्रिक कहे ठेः

ज्ञाविज्ज अवबतियं, पिंमब पयब रूवरहियत्तं ॥ ठउमब केवलित्तं, सिद्धत्तं चेव तस्सब्बो ॥ ११ ॥

अर्थ—हे ज्ञव्यजीव ! तुं (ज्ञाविद्य के०) ज्ञाव्य. श्रीज्ञगवंतनी (अवबतियं के०) त्रण अवस्था प्रत्ये, एटले त्रण अवस्थानी ज्ञावना ज्ञाविये, ते कहे ठे. प्रथम (पिंमब के०) पिंमस्थावस्था ज्ञावीये, बीजी (पयब के०) पदस्थ अवस्था ज्ञावीये, त्रीजी (रूवरहियत्तं के०) रूपरहितत्वं एटले रूपरहित एवी रूपातीत अवस्था ज्ञावीये; तिहां जे पिंमस्थावस्था ते (ठउम

के०) ब्बस्थावस्थाये ज्ञाविये, तीर्थंकर पदनां पिंम जे शरीर तीर्थंकरनामकर्मयोग्य बे, ते पिंमस्थावस्था बे अने पदस्थावस्था ते (केवलित्तं के०) केवलज्ञान अवस्थाये ज्ञावीये एटले केवलज्ञान पाम्या पबी प्रज्ञु पदस्थ थया ते, पदस्थ अवस्था तथा रूपातीतावस्था ते (सिद्धत्तं के०) सिद्धत्वं एटले सिद्धपणानी अवस्थाये ज्ञाववी, कारण के सिद्धपणुं जे बे, ते रूपथकी अतीत बे, माटे सिद्धरूपपणुं ज्ञावतां रूपातीत अवस्था कहीये. ए (चेव के०) निश्चे (तस्सबो के०) ते पिंमस्थादिक त्रण अवस्थानो अर्थ जाणवो ॥११॥

॥ हवे ए त्रणे अवस्था क्यां क्यां ज्ञाववी? तेनां ठाम कहे बे.

न्हवणच्चगेहिं बउम,–ब्रवब पमिहारगेहिं केवलियं ॥ पलियंकुस्सग्गेहि य, जिणस्स ज्ञाविज्ज सिद्धत्तं ॥ १२ ॥

अर्थ–(न्हवणच्चगेहिं के०) स्नपनार्चकैः एटले न्हवण, पखाल, अर्चादि पूजाना अवसरे, पूजा

करनारा पूजक पुरुषोये (जिणस्स के०) श्रीजिनेश्वरनी (छउमछ्वछ के०) छद्मस्थावस्थाने भाववी, ते छद्मस्थावस्थाना त्रण भेद छे, एक जन्मावस्था, बीजी राज्यावस्था अने त्रीजी श्रमणावस्था. तेमा प्रभुने न्हवण अर्चादिक प्रक्षालन करतां जन्मावस्था भाववी, अने मेरुपर्वतनी उपर जे जन्म महोत्सव भाववो ते पण जन्मावस्थाज जाणवी.

तथा मालाधारादि, पुष्प, केशर, चंदन अने अलंकारादि चढावतां राज्यावस्था भाववी. वळी भगवंतना शिरकेश, श्मश्रु कूर्च रहित एवा मस्तकमुखादिक देखीने श्रमणावस्थानी भावना भाववी. ए प्रथम छद्मस्थावस्था त्रण भेदे विवरीने कही.

तथा किंकली (अशोकवृक्ष), कुसुमवृष्टि अने दीव्यध्वनि प्रमुख (पम्हिारगेहिं के०) आठ महाप्रातिहार्यें करीने युक्त भगवानने देखीने बीजी पदस्थावस्था एटले (केवलियं के०) केवलीपणानी अवस्था भावीये.

तथा (पलियंक के०) पर्यंकासने करी स-हित एटले पलोंठी वाळीने बेठा एवा (उस्सग्गेहि के०) काउस्सग्गीयाने आकारे बिंब देखवे करीने (य के०) वली (जिणस्स के०) जिननी (सिद्धत्तं के०) सिद्धत्व एटले सिद्धपणानी अव-स्था अर्थात् रूपातीतपणानी अवस्था (भा-विज्ज के०) भाववी. केम के ? केटलाएक तीर्थं-करो पर्यंकासने काउस्सग्ग मुद्राये मुक्ति गया छे, माटे ज्योतिरूप अवगाहना भाववी. आ गाथामां भाविज्ज ए क्रियापद सर्वत्र संगत करवुं. ए पां-चमुं अवस्थात्रिक कह्युं ॥ १२ ॥

हवे छठुं त्रण दिशी जोवाथी निवर्त्तवानुं त्रिक कहे छे.

उड्ढाहो तिरिआणं, तिदिसाण निरक्कणं चइज्जहवा ॥ पच्छिम दाहिण वामण, जिणमुह-नत्थ-दिट्ठि-जुअं ॥ १३ ॥

अर्थ—श्रीजिनप्रतिमा जुहारतां प्रभु उपर एकांत ध्यान राखवा निमित्ते एक (उड्ढा के०)

ऊर्ध्वदिशि, बीजी (अहो के०) अधोदिशि अने त्रीजी (तिरिआणं के) तीर्ठी दिशि ते आकुं अवलुं, ए (तिदिसाण के०) त्रणदिशिनुं (निरकणं के०) जोवुं (चइज्ज के०) ठांमवुं एटले वर्जन करवुं. (अहवा के०) अथवा (पच्छिम के०) पाठली पूंठनी दिशिये (दाहिण के०)जमणी दिशिये तथा (वामण के०)मावी दिशिये एटले जे दिशाये श्रीज्ञगवंतनी प्रतिमा होय, ते दिशि टालीने शेष पूंठनी बाजु तथा जमणी बाजु अने मावी बाजु, ए त्रण दिशाये जोवानुं वर्जन करवुं, मात्र (जिणमुह के०) श्री जिनेश्वरना मुखने विषे पोतानी (दिठि के०) दृष्टिने (नछ के०) न्यस्त एटले स्थापी राखेली होय तेणे करी (जुउ के०) युक्त एटले सहित एवो थको वंदन करे. एटले जिनप्रतिमा उपर पोतानां लोचन थापी एकाग्र मन करे, परंतु आकुं अवलुं अरहुं परहुं जूवे नहीं. ए ठहुं त्रण दिशि निरीक्षण वर्जवानुं त्रिक कह्युं ॥ १३ ॥

हवे सातमुं पदज्ञूमिप्रमार्जनत्रिक कहे ठे, ते आंवी रीते के—श्रीजिनवंदनाये इरियावहि पडिक्कमतां तथा चैत्यवंदन करतां जीवयत्नाने अर्थे रूडे प्रकारे दृष्टिवडे जोइने पद स्थापवानी ज्ञूमि त्रण वार पुंजवी. तिहां गृहस्थ होय तो वस्त्रांचले करी पुंजे, अने साधु होय तो रजोहरणे करी पुंजे. ए सातमुं त्रिक थयुं.

हवे आठमुं आलंबनत्रिक अने नवमुं
मुद्रात्रिकनुं स्वरूप कहे ठे.

वन्नतियं वन्नञा,—लंबणमालंबणं तु प-
मिमाई ॥ जोग जिण मुत्तसुत्ती, मुद्दाज्ञेएण
मुद्दतियं ॥ १४ ॥

अर्थ—(वन्नतियं के०) वर्णत्रिक कयुं ते कहे ठे. (वन्नञालंबणं के०) वर्णार्थालंबनं एटले एक वर्णालंबन, बीजुं अर्थालंबन, तिहां नमुञुणादिक सूत्र ज्ञणतां तेमां आवेला जे हलवा ज्ञारे अक्षर ते न्यूनाधिकरहितपणे यथास्थित बोलवा, तथा संपदा प्रमुखनुं बराबर चिंतन राखवुं, ते प्रथम

वर्णालंबन जाणवुं, अने जे नमुत्थुणं प्रमुख सू-
त्रो भणतां तेना अर्थ हृदयमां भाववा, ते बीजुं
अर्थालंबन जाणवुं, तथा (आलंबणं तु के०)
आलंबन ते वली (पडिमाई के०) प्रति-
मादि एटले जिनप्रतिमा तथा आदि शब्द
थकी भाव अरिहंतादिकनुं तथा स्थापनादिकनुं
पण ग्रहण करवुं, तेनुं जे स्वरूप-आलंबन धारवुं,
ते त्रीजुं प्रतिमालंबन जाणवुं. ए आठमुं आलं-
बनत्रिक कह्युं.

हवे नवमुं मुद्रात्रिक कहे छे. एक (जोग
के०] योगमुद्रा, बीजी (जिण के०) जिनमुद्रा
अने त्रीजी (मुत्तसुत्ती के०) मुक्ताशुक्ति मुद्रा,
ए (मुद्दाभेएण के०) योग मुद्रादिकना भेदे करी
ने (मुद्दतियं के०) मुद्रात्रिक जाणवुं ॥ १४ ॥

हवे प्रथम योगमुद्रानुं स्वरूप कहे छेः

अन्नुन्नंतरिअंगुलि, कोसागारेहिं दोहिं
हत्थेहिं ॥ पिट्टोवरि कुप्परि सं,-ठिएहिं तह
जोगमुद्दत्ति ॥ १५ ॥

अर्थ--(अन्नुसंतरिअंगुलि के०)अन्योन्यांतरितांगुलि एटले ब हाथनी दशे अंगुलिने अन्योन्य ते मांहोमाहे अंतरित करी छे जिहां एवी अने (कोसागारेहिं के०) कमलना डोडाने आकारे जोडीने कीधा एवा (दोहिं हत्थेहिं के०) बे हाथे करीने, ते बेहु हाथ केहवा? तो के (पिट्टोवरि के०) पेट उपर (कुप्परि के०) कोणी ते (संठिएहिं के०) संस्थित एटले रही छे जेनी एवा प्रकारे रहेवे करी (जोगमुद्दत्ति के०) योगमुद्रा इति एटले योग मुद्रा एम होय. ए पहेली योगमुद्रानुं स्वरूप कह्युं ॥ १५ ॥

हवे बीजी जिनमुद्रानुं लक्षण कहे छे.

चत्तारि अंगुलाइं, पुरउ ऊणाइं जत्थ पच्छिमउ ॥ पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा ॥ १६ ॥

अर्थ--(जत्थ के०) यत्र एटले जिहां (पायाणंके०) पगनाजे (पुरउ के०) आगलु लनाअं-

लिनी बाजु तरफना पहोंचाने मांहोमाहे (चत्तारि अंगुलाइं के०) चार आंगुलनो आंतरो राख्यो होय, अने पगना (पच्छिमउ के०) पाछलनी पानीनी बाजुना भागमां मांहोमांहे चार आंगुलथी कांइक (ऊणाइं के०) ऊणो आंतरो राख्यो होय ए रीते पग राखीने (उस्सग्गो के०) काउस्सग्ग करीये (एसा के०) ए प्रकारे (पुण के०) वली (जिणमुद्दा के०) जिनमुद्रा (होइ के०) होय॥

हवे त्रीजी मुक्ताशुक्तिमुद्रा कहे छे.

मुत्तासुत्तीमुद्दा, जछ समा दोवि गप्भिआ हछा ॥ ते पुण निलाम्हदेसे, लग्गा अन्ने अलग्ग त्ति ॥ १७ ॥

अर्थः-(जछ के०) जिहां (दोवि के०) बेहु पण (हछा के०) हाथ ते (समा के०) सरखा बराबर (गप्भिआ के०) गर्भितपणे राखी (ते के०) ते बे हस्त (पुण के०) वली (निलाम्हदेसे के०) ललाटना देश एटले ललाटनां मध्य भागने विषे (लग्गा के०) लगाड्या

होय, वली (अन्ने के०) अन्य एटले बीजा केटलांएक आचार्यों कहे छे के (अलग्गत्ति के०) अलगाड्या होय एटले ललाटदेशथी दूर राख्या होय. इति एटले ए प्रकारे (मुत्तासुत्तीमुद्दा के०) मुक्ताशुक्तिनामे मुद्रा कहीये. एमां अंगुलिना छिद्र विना जेम मोतीना छीपनो जोमो मळेलो होय, तेवा आकारे हाथ राखवा, ए मुद्रानुं ए लक्षण छे ॥ १७ ॥

हवे ए त्रण मुद्रा मांहेली कइ मुद्राये कइ क्रिया करवी ते कहे छे.

पंचंगो पणिवाउ, थयपाढो होइ जोगमुद्दाए ॥ वंदण जिणमुद्दाए पणिहाणं मुत्तसुत्तीए ॥ १८ ॥

अर्थ—एक इच्छामि खमासमणनो पाठ तेने (पंचंगो पणिवाउ के०) पंचांग प्रणिपात कहीये. बीजो (थयपाढो के०) स्तवपाठ ते श्रीजिनेश्वरना गुणनी स्तुति ते स्तवनादिनो पाठ करवो ते (जोगमुद्दाए के०) योगमुद्राये करीने (होइ

के०) होय, तथा (वंदण के०) वांदणा देवां अने काउस्सग्ग जे अरिहंतचेइयाणं इत्यादि सर्व (जिणमुद्दाए के०) जिनमुद्राये करीने थाय, तथा जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय ए त्रणे(पणिहाणं के०)प्रणिधानसंज्ञामां आवे पण इहां तो संप्रदायगत एकज जयवीयरायने कहीये बीये,ते(मुत्तसुत्तीए के०)मुक्ताशुक्ति मुड्राए कहीये ॥१७॥ इहां श्रीसंघाचार ज्ञाष्यमध्ये मुक्ताशुक्ति मुड्राये स्त्रीने स्तनादिक अवयवो प्रगट देखाय तेम न थवुं जोइये, एवा हेतु माटे स्त्रीने उंचा ललाटदेशे हाथ लगाकवा कह्या नथी. ए नवमुं मुड्रात्रिक कह्युं ॥

हवे दशमा प्रणिधानत्रिकनुं स्वरूप कहे छे.

पणिहाणतिगं चेइय,–मुणिवंदण पत्रणासरूवं वा ॥ मण-वय-काएगत्तं, सेस-तियत्रो उ पयमुत्ति ॥ १ए ॥ दारं ॥ १ ॥

अर्थ–(पणिहाणतिगं के०) प्रणिधानत्रिक, ते कयुं? ते कहे छे. तिहां जावंति चेइआइं ए

गाथा (चेइय के०) चैत्यवांदवा रूप ते प्रथम प्रणिधान जाणवुं. तथा जावंत केवि साहू ए गाथा (मुणिवंदण के०) मुनि वांदवा रूप, ते बीजुं प्रणिधान जाणवुं. तथा जयवीयराय आभवमखंडा पर्यंत ए गाथा (पन्नणासरूवं के०) प्रार्थनास्वरूप ते त्रीजुं प्रणिधान जाणवुं. (वा के०) अथवा एक (मण के०) मननुं बीजुं (वय के०) वचननुं अने त्रीजुं (काय के०) कायानुं (एगत्तं के०) एकत्व एटले एकाग्रपणुं ते पण प्रणिधानत्रिक कहीये. इहां शिष्य पूछे छे के चैत्यवंदनाये प्रणिधान आवे छे, अने बीजी शेष वंदना तो प्रणिधान विनाज थाय छे, तिहां ए बोल सचवाता नथी ते केम? तेने गुरु कहे छे के, तिहां मन, वचन अने कायानी एकाग्रता छे ए मुख्य प्रणिधान छे, ए दशमुं प्रणिधानत्रिक कह्युं.

हवे (सेस के०) शेष रह्या जे (तिय के०) त्रिक एटले अहीं गाथाये करी जेनुं स्वरूप नही वखाण्युं एवुं बीजुं अने सातमुं त्रिक, तेनो (अ-

ओ के०) अर्थ ते(उ के०)वली (पयरुत्ति के०) प्रकट बे. माटे तेनुं स्वरूप मूल गाथामां लख्युं नथी, एम जाणवुं. तथापि बालावबोधकर्त्ताए ते त्रिकोना अनुक्रमे संक्षेप अर्थ ते ते स्थानके लख्या बे,एटले दशत्रिकनुं ए मूलद्वार प्रथम थयुं अने उत्तर बोल त्रीश थया ॥ १ए ॥

हवे बीजुं पांच प्रकारना अभिगमनुं द्वार कहे बे.

सचित्तदव्वमुज्जण,-मचित्त-मणुज्जणं मणे-गत्तं ॥ इगसाडिउत्तरासं,-ग अंजलि सिरसि जिण दिट्ठे ॥ २० ॥

अर्थ-चैत्यादिकने विषे प्रवेश करवानो विधि तेने अभिगम कहीये. ते पांच प्रकारे बे. तिहां देहरे जातां (सचित्तदव्वं के०) सचित्तद्रव्य जे पोताना अंगआश्रित कुसुमादिक, फलादिक होय, तेनुं (उज्जणं के०) बांमवुं, ते प्रथम अभिगम, तथा (अचित्तं के०) अचित्त पदार्थ जे द्रव्यनाणादिक तथा आभरणादिक, वस्त्रादिक वस्तु तेनुं (अणुज्जणं के०) अणबांमवुं एटले पो-

तानी पासे राखवानी अनुज्ञा ते बीजो अन्निगम. तथा (मणेगत्तं के०) मननुं एकाग्रपणुं करवुं, ते त्रीजो अभिगम. तथा (इगसाकि के०) एकपकुं वस्त्र ए बेहु ठेकाये सहित होय तेनो (उत्तरासंग के०) उत्तरासंग करवो. ते चोथो अन्निगम. तथा (जिणदिठे के०) श्री जिनेश्वरने दूर थकी नजरे दीठे थके (अंजलि के०) बे हाथ जोकीने (सिरसि के०) मस्तकने विषे लगाकवा एटले अंजलिबद्ध प्रणाम करवो, ते पांचमो अन्निगम जाणवो ॥ २० ॥

इय पंचविहान्निगमो, अहवा मुच्चंति रायचिण्हाइं ॥ खग्गं छत्तोवाणह, मजकं चमरे अ पंचमए ॥ २१ ॥ दारं ॥ २ ॥

अर्थ—(इय के०) पूर्वली गाथामां कह्या जे (पंचविहान्निगमो के०) पांच प्रकारे अन्निगम ते देव तथा गुरु पासे आवतां साचववा (अहवा के०) अथवा वंदना करनार श्रावक जो पोते राजादिक होय तो ते ए पांच अन्नि-

गम साचवे, अने वली बीजा (रायचिण्हाइं के०) राजानां पांच चिह्न छे ते प्रत्ये (मुच्चंति के०) मूके एटले छांमे तेनां नाम कहे छे, एक (खग्गं के०) खड्ग, बीजुं (छत्त के०) छत्र त्रीजुं (उवाणह के०) उपानह एटले पगनी मोजमी, चोथो माथानो (मउमं के०) मुकुट अने (पंचमए के०) पांचमुं (चमरे अ के०) चामर, ए पण पांच अभिगम जाणवा ॥ २१ ॥ एटले पांच अभिगमनुं बीजुं द्वार पूर्ण थयुं, उत्तर बोल पांत्रीश थया.

हवे बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार, तथा त्रण अवग्रहनुं चोथुं द्वार कहे छे ॥

वंदंति जिणे दाहिण,–दिसिठिआ पुरिस वामदिसि नारी ॥ दारं ॥ ३ ॥ नवकर जहन्नु सठि,–कर जिठ मझुग्गहो सेसो ॥२२॥ दारं ॥४॥

अर्थ–(जिणे के०) श्रीजिनने (दाहिण-दिसिठिआ के०) दक्षिणदिशिस्थिता एटले मूल नायकनी जमणी दिशाये रह्या थका (पु-

रिस के०) पुरुषो (वंदंति के०) वांदे एटले चैत्यवंदना करे, अने मूल नायकने (वामदिसि के०) मावे पासे रही थकी (नारी के०) स्त्री वांदे एटले चैत्यवंदना करे. इहां चैत्यवंदना पूजाना अधिकार माटे प्रसंगथी जमणी बाजु दीपक थापवो, अने डावी बाजु धूपादिक, नाणुं, फलादिक, जिन आगले तथा हस्ते थापीये. ए बे दिशिनुं त्रीजुं द्वार थयुं अने उत्तर बोल साम्त्रीश थया.

हवे त्रण अवग्रहनुं चोथुं द्वार कहे छे. तिहां ज्ञगवंतथकी (नवकर के०) नव हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदना करवी, ते प्रथम (जहन्नु के०) जघन्य अवग्रह जाणवो, तथा ज्ञगवंतथकी (सठिकर के०) षष्टिकर एटले साठ हाथ वेगला रहीने चैत्यवंदना करवी, ते बीजो (जिठ के०) ज्येष्ठ एटले उत्कृष्ट अवग्रह जाणवो, अने (सेसो के०) शेष जे नव हाथथी उपर अने साठ हाथनी अंदर

एटली वेगलाईये रही चैत्यवंदना करवी, ते सर्व त्रीजुं (मझुग्गहो के०) मध्यम अवग्रह जाणवो. तथा केटलाएक आचार्य बार प्रकारना अवग्रह कहे छे के ॥ उक्कोस सठि पन्ना, चत्ता तीसा दसठ पणदसगं ॥ दस नव ति डु एगऊं, जिणुग्गहं बारस वि नेयं ॥१॥ एटले ६०, ५०, ४०, ३०, १८, १५, १०, ९, ३, २, १, ०॥ ए बार अवग्रह थया एटले अर्धा हाथथी मांमीने साठ हाथ पर्यंत श्रीजिनगृहे तथा गृहचैत्यादिके श्वासोश्वासादि आशातना वर्जवा निमित्ते ए अवग्रह जाणवां ॥ २२ ॥ ए चोथुं त्रण अवग्रहनुं द्वार कह्युं, इहा सुधी सर्व मली उत्तर बोल ४० थया ॥ २२ ॥

हवे त्रण प्रकारे चैत्यवंदना करवी, तेनुं पांचमुं द्वार कहे छे,

नमुक्कारेण जहन्ना, चिइवंदण मझ दंम-थुइजुअला ॥ पण दंम थुइ-चउक्कग, थय-पणिहाणेहिं उक्कोसा ॥ २३ ॥

अर्थ-(नमुक्कारेण के०) एक नमस्कार श्लोकादिक रूप तथा नमो अरिहंताणं कहीने अथवा हाथ जोडी मस्तक नमाडवे करी अथवा नमो जिनाय कही नमवे करी अथवा एक श्लोकादि कहेवे करी अथवा हमणां देहरे चैत्यवंदन कहिये छैये, इत्यादि रूपे सर्व प्रथम(जहन्ना के०) जघन्य (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन जाणवुं, तथा (दंडथुइजुअला के०) दंडकयुगल ते अरिहंत चेइयाणंनुं युगल तथा स्तुतियुगल ते चार थुइ एटले एक नमस्कार श्लोकादिरूप कही, शक्रस्तव कही, उभा थइ, अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी, थुइ कहेवी, ते बीजी (मद्य के०) मध्यम चैत्यवंदना जाणवी. तथा (पणदंड के०) पांच नमुत्थुणं रूप पांच दंडके करी अने (थुइचउक्कग के०) स्तुति चतुष्क एटले आठ थुइये करीने, (थय के०) स्तवने करीने तथा जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय, ए त्रण (पणिहा-

णेहिं के०) प्रणिधाने करीने त्रीजी (उक्कोसा के०) उत्कृष्टी चैत्यवंदना जाणवी. ॥ २३ ॥

अन्ने बिंति गेणं, सक्कत्थएणं जहन्न वंदण-या ॥ तद्दुग तिगेण मझा, उक्कोसा चउहिं पंचहिं वा ॥ २४ ॥ दारं ॥ ५ ॥

अर्थ—(अन्ने के०) अन्य एटले बीजा वली केटलाएक आचार्य एम (बिंति के०) ब्रुवंति एटले कहे ले के (इगेणं के०) एकेन एटले एक (सक्कत्थएणं के०) शक्रस्तवे करीने देव वांदीये ते (जहन्न के०) जघन्य (वंदणया के०) चैत्यवंदना जाणवी. अने (तद्दुगतिगेण के०) तद्द्विकत्रिकेणं एटले तेहीज बे तथा त्रण शक्रस्तवे करी (मझा के०) मध्यम चैत्यवंदना जाणवी. तथा (चउहिं के०) चार शक्रस्तवे करी (वा के०) अथवा (पंचहिं के०) पांच शक्रस्तवे करीने प्रणिधान युक्त करीये ते (उक्कोसा के०) उत्कृष्ट चैत्यवंदना जाणवी, अने भाष्यादिकने विषे जे स्तुतियुगल कह्यां ले, ते

त्रण थुइ स्तुतिरूप एक गणीये बैये अने चोथी थुइ शिक्षारूप समकितदृष्टिनी सहायरूप जूदी गणी ते माटे स्तुति युगल कहे बे,तेनो विचार आवश्यकवृत्तिथकी जाणवो ॥२४॥ एटले त्रण ज्ञेदे चैत्यवंदनानुं पांचमुं द्वार कह्युं, सर्व मली उत्तर बोल त्रेंतालीश थया. ॥

हवे बहुं प्रणिपातद्वार तथा सातमुं नमस्कार द्वार कहे बे.

पणिवाउ पंचंगो, दो जाणू करडुगुत्तमंगं च ॥ दारं ॥ ६ ॥ सुमहब–नमुक्कारा, इग डुग तिग जाव अठसयं ॥ २५ ॥ दारं ॥ ७ ॥

अर्थः–जिहां प्रकर्षें करी ज्ञक्ति बहुमानपूर्वक नमवुं तेने [पणिवाउ के०) प्रणिपात कहीये. ते (पंचंगो के०) पांच अंग जूमिये लगाडवारूप जाणवो, तेनां नाम कहे बे- (दोजाणू के०) बे जानुं, एटले बे ढींचण,अने (करडुग के०) बे हाथ, (च के०)वली पांचमुं (उत्तमंगं के०) उत्तमांग ते मस्तक, ए पांच

अंग. जिहां खमासमण आपतां नूमिये लागे, ते पंचांग प्रणिपात कहीये. एणे करी "इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्ञाए निसीहियाए मछएण वंदामि" ए पाठ कहे. ए बहुं प्रणिपात द्वार कह्युं. उत्तर बोल चुम्मालीश थया. ॥

हवे सातमुं नमस्कार द्वार कहे बे.(सु के०) नला एवा (महछ के०) अत्यंत महोटा गहन अर्थ बे जेहना एटले नक्ति, ज्ञान, वैराग्य दशाना दीपक एवा (नमुक्कारा के०) नमस्कार एटले प्रभुना गुणोत्कीर्त्तनरूप श्लोकादि कहेवा ते (इग के०) एक तथा (डुग के०) बे, तथा (तिगके०) त्रणथी मांडीने (जाव अठसयं के०) यावत् एकशो ने आठ पर्यंत कहे, ए सातमुं नमस्कार द्वार कह्युं. उत्तर बोल पीस्तालीश थया. ॥

हवे देववंदनना अधिकारे जे नवकार प्रमुख नव सूत्रो आवे बे, तेमने एक वारनां उच्चर्यां हळवां तथा नारे मलीने सर्व गणीये

तेवारे १६४७ अक्षर थाय अने १७१ पद थाय तथा ए७ संपदा थाय, ए अक्षर, पद तथा संपदा मली त्रणे द्वार एकठां कहे छे. तेनी साथे संपदानां नाम तथा अर्थ पण कहेशे. यद्यपि इच्छामि खमासमणो तथा जेअ अईयासिद्धा ए गाथा तथा तस्स उत्तरी, अन्नछ, इत्यादि अपर ग्रंथांतरे तो ए सूत्रमां संकलित नथी, तथापि जाष्यमांहेला देववंदनाधिकारं बोल्या छे, अन्यथा जे पूर्वे उत्तरद्वार कह्यां, ते पूर्ण न थाय, तेमाटे ते सर्व द्वार एकठां कहे छे.

अम्सठि अठवीसा, नवनजयसयं च ढुसयसगनजया ॥ दागुणतीस ढुसठा, ढुसोल अम्नजयसय ढुवन्नसयं ॥ २६ ॥

अर्थ–१ प्रथम " पंचमंगलमहासुयरकंधं " एहवुं नाम नवकारनुं छे, तेनां अक्षर (अम्सठि के०) अम्सठ ते हवइ मंगलं एवो पाठ जणतां थाय, केम के श्रीमहानिशीथ सूत्रमध्ये प्रकटाक्षरे हवइ मंगलं एहवो पाठ छे॥

यदुक्तं ॥ पंचपयाणं पणतिस, वण्णचूलाइ वण्ण तित्तीसं ॥ एवं समे समप्पइ, फुम–मरकर-मठसट्ठीए ॥ इति ॥ १ ॥ ते माटे जो नमस्कारनो एक अक्षर ओछो करे, तो चोशठ विधाने नमस्कार साधवो ते न्यून थाय, तेथी ज्ञाननी आशातनानो अतिचार लागे, एवुं श्री भद्रबाहुस्वामीये नमस्कारकल्पे प्रकाश्युं छे, माटे 'हवइ मंगलं' एवो पाठ कहेवो.

२ बीजुं " प्रणिपात " एवुं नाम इछामिखमासमणनुं छे, ते थोभसूत्रमां गुरुवंदनाधिकारे वांदणामां आवशे, पण इहां चैत्यवंदन माटे भेळुं कह्युं छे. तेना अक्षर (अठवीसा के०) अठावीश छे.

३ त्रीजुं " पडिक्कमणा सुयरकंध " एवुं नाम इरियावहियानुं छे, ते सूत्रना इछामि पडिक्कमिउं इहांथी मांमीने यावत् ठामि काउस्सग्गं लगे अक्षर (सयं च के०) एकशोने वळी उपरे (नवनउय के०) नवाणुं छे.

४ चोथुं "शक्रस्तव" एवुं नाम नमुत्थु-णंनुं ढे. तेना अक्षर (डुसयसगनउया के०) बशें ने सत्ताणुं जाणवा.

५ पांचमुं "चैत्यस्तव" एवुं नाम अरि-हंत चेइयाणंनुं ढे. तेना अक्षर (दोगुणतीस के०) बशें ने उंगणत्रीश ढे.

६ ढवुं "नामस्तव" एवुं नाम लोगस्सनुं ढे, वर्त्तमान जिन चोवीशीना नामनुं गुणोत्की र्त्तनरूप तेना अक्षर (डुसठा के०) बशें ने साठ ढे.

७ सातमुं "श्रुतस्तव" एवुं नाम पुक्खरव-रदीनुं ढे तेना अक्षर (डुसोल के०)बशेंने सोल ढे.

७ आठमुं "सिद्धस्तव" एवुं नाम सि-द्धाणं बुद्धाणंनुं ढे तेना अक्षर (अडनउयसय कें०) एकशो ने अठाणुं ढे.

ए नवमुं "प्रणिधानत्रिक" एवुं नाम जावंति चेइयाइं, जावंत केवि साहू अने सेवणा आजवमखंमा पर्यंत जयवीयराय ए त्रणेमुं ढे.

तेना अक्षर (डुवन्नसयं के०) एकसो ने बावन छे. ॥२६॥

इअ नवकारखमासण,-इरिअसक्कथ्थआइ-दंमेसु ॥ पणिहाणेसु अ अडुरु,--त्तवन्न सोलसय-सीयाला ॥ २७ ॥

अर्थ-(इअ के०) ए पूर्वे कह्या जे अ-क्षर ते अनुक्रमे अमसठ अक्षर (नवकार के०) नवकारने विषे जाणवा, अठावीश अक्षर (खमासण के०) खमासमणने विषे जाणवा, तथा एकसोनवाणुं अक्षर (इरिय के०) इरिया-वहियाना ठामि काउस्सग्गं लगे जाणवा. (१२००) अक्षर (सक्कत्थआइदंमेसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंमकने विषे अनुक्रमे जाण-वा. तेमां नमुथ्थुणंना सव्वे तिविहेण वंदामि लगे २९७, तथा अरिहंतचेइयाणंना अप्पाणं वो-सिरामि लगे २२९, तथा लोगस्सना सव्वलोए लगे २६०, तथा पुख्खरवरदीना सुअस्सजगवउ लगे २१६, तथा सिद्धाणं बुद्धाणंना वेआवच्च-

गराणं, संतिगराणं, सम्मदिठिसमाहिगराणं लगें १एण, ए सर्व मली पांच दंमकना १२०० अक्षर थया. तथा १५२ अक्षर जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहू अने जयवीयराय सेवणा आन्नवमखंमा लगे ए त्रण (पणिहाणेसु के०) प्रणिधानने विषे जाणवा. ए रीते ए नव सूत्रोना अक्षरो एकठा करिये त्यारे (अडुरुत्त के०) अद्विरुक्त एटले बीजीवार अणउच्चरया एवा (वन्ना के०) वर्ण एटले अक्षर ते सर्व मली (सोलसयसीयाला के०) सोलशें ने सुमतालीश थाय ॥ २७ ॥

हवे पदसंख्या कहे डे.

नव बत्तीस तित्तीसा, तिचत्त अमवीस सोल वीस पया ॥ मंगल–इरिया–सक्क,–त्थयाइसु इगसीइसयं ॥ २ए ॥

अर्थ–नवकारनां (नव के०) नव पद डे, इरियावहिनां (बत्तीस के०) बत्रीश पद, नमुत्थुणंनां (तित्तीसा के०) तेत्रीश पद, अरिहंत-

चेइयाणंना (तिचत्त के०) त्रेंतालीश पद, लो-
गस्सनां (अमवीस के०) अठावीश पद,
पुस्करवरदीनां (सोल के०) सोल पद, सिद्धाणं
बुद्धाणंनां (वीस पया के०) वीश पद, एम(मंगल
के०)नवकार,(इरिया के०) इरियावहि अने
(सक्कबयाइसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंमक
ए सात सूत्रोने विषे सर्व मली (इगसीइसयं
के०) एकसो ने एक्याशी पदनी संख्या जाणवी.
अने प्रणिपातनां पद तो वांदणां भेलां गुरु
वंदनमां कहेशे, तथा प्रणिधानत्रिकनी पद संप-
दा अनुक्रमे बे, ते माटे न कह्युं "वारिज्जइ"
इत्यादि गाथा भक्तिनी योजना बे, ते इहां
गणी नहीं ॥ २७ ॥

हवे संपदानी संख्या कहे बे.

अठ्ठ नवठ्य अठ वी,–स सोलसय वीस
वीसामा ॥ कमसो मंगल–इरिया,–सक्कथयाईसु
सगनवई ॥ २९ ॥

अर्थ–प्रथम नवकारनी (अठ के०) आठ

संपदा, तथा इरियावहिनी (अठ के०) आठ संपदा, तथा नमुथ्थुणंनी (नव के०) नव संपदा, तथा अरिहंत चेइयाणंनी (अठ के०) आठ संपदा, (य के०) वली लोगस्सनी (अठवीस के०) अठावीश संपदा, तथा पुख्करवरदीनी (सोलस के०) सोल संपदा, (य के०) वली सिद्धाणंबुद्धाणंनी (वीस के०) वीश संपदा जाणवी. लगारेक रहेवानुं स्थान तथा अर्थनो (वीसामा के०) वीसामो लेवानुं स्थान तेने संपदा कहीये. ते (कमसो के०) अनुक्रमे (मंगल के०) नवकारने विषे, (इरिया के०) इरियावहिनेविषे अने (सक्कथयाईसु के०) शक्रस्तवादिक पांच दंमकने विषे ए सर्व मली सात सूत्रोने विषे सर्व संपदा (सगनउई के०) सत्तनवती एटले सत्ताणुं थाय ॥ २ए ॥

हवे नवकारना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

वसाठसंठि नव पय, नवकारे अठ संपया

तब ॥ सग संपय पयतुल्ला, सतरक्कर अठमी डुपया ॥ ३० ॥ " नवक्कर अठमी डुपय ठठी" इत्यन्ये

अर्थ–(नवकारे के०) नवकारने विषे (वसठसहि के०) अमशठ वर्ण होय, तथा नमोअरिहंताणं आदिक (पय के०) पद ते (नव के०) नव होय, अने (संपया के०) संपदा तो (अठ के०) आठ होय, (तब के०) तिहां ते आठ संपदामांहे प्रथमनी "सबपाव-प्पणासणो" सुधीनी जे (सगसंपय के०) सात संपदा ठे, ते तो (पयतुल्ला के०) पदने तुल्य जाणवी एटले जेटला पद तेटली संपदा पण जाणवी. तथा (अठमी के०) आठमी संपदा तो "मंगलाणं च सबेसिं पढमं हवइ मंगलं" ए बे पदने एकठा कहीये माटे ए (डुपया के०) बे पदनी जाणवी, तथा अन्य केटलाएक आचार्य एम कहे ठे, के "पढमं हवइ मंगलं" ए (नवक्करअठमी के०) नव अक्षरनी आठमी

संपदा तथा "एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणा-सणो" ए (दुपय के०) बे पदनी अने सोल अक्षरनी (ब्ठी के०) ब्ठी संपदा जाणवी॥३०॥

हवे प्रणिपात खमासमणना अक्षर तथा पद अने संपदा विवरी देखाडे छे.

पणिवाय अक्कराइं अठावीसं तहा य इरियाए ॥ नवनउअमक्करसयं, दुतीस पय संपया अठ ॥ ३१ ॥

अर्थ-(पणिवाय के०) प्रणिपात दंडकने विषे (अठावीसं के०) अठावीश (अक्कराइं के०) अक्षर छे, (तहा य के०) तथा च एटले तेमज वली (इरियाए के०) इरियावहिने विषे (नवनउअमक्करसयं के०) नवनवति अक्षरशतं एटले नवाणुये अधिक एकशो अक्षर जाणवा अर्थात् एकशोने नवाणु अक्षर जाणवा, तथा (दुतीस के०) बत्रीश (पय के०) पद जाणवां अने (संपया के०) संपदा (अठ के०) आठ जाणवी ॥ ३१ ॥

कारणरूप इरियावहियाए,विराहणाए,ए बे पदनी बीजी (निमित्तं के०) निमित्त संपदा जाणवी.

३ सामान्य प्रकारे प्रायश्चित उपजाववारूप गमणागमणे ए एक पदनी त्रीजी (उंह के०) उंघ उटले सामान्य हेतु संपदा जाणवी. ए जीव हिंसा उपजाववानो सामान्य हेतु गमनागमन ठे.

४ जीवहिंसाना विशेष हेतुरूप एटले विशेषपणे प्राण बीजादिक आक्रमणरूप ते पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, उंसाउत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कमासंताणासंकमणे, ए चार पदनी चोथी (इअरहेउ के०) इतरहेतु एटले विशेष हेतु संपदा जाणवी. जे सामान्यथी इतर ते विशेष होय;माटे विशेष हेतु एवुं नाम जाणवुं.

५ समस्त जीवना परितापरूप जीवविराधना संग्रहरूप ते 'जे मे जीवा विराहिया' ए एकपदनी (पंच के०) पांचमी [संगहे के०) संग्रह संपदा जाणवी.

६ एकेंद्रियादिक पांच प्रकारना जीवने देखाडवारूप, जीवभेद ५६३ प्रमुख कथनरूप एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया, ए पांच पदनी छठी (जीव के०) जीव संपदा जाणवी.

७ ते जीवादिक भेदने परितापना-विराधनारूप ते अभिहयाथी मांडीने तस्स मिच्छामि डुक्कडं पर्यंत अगीयार पदनी सातमी (विराहण के०) विराधना संपदा जाणवी.

८ प्रायश्चितविशोधनकरणरूप ते तस्स उत्तरीकरणेणंथी मांडीने ठामि काउस्सग्गं लगें छ पदनी आठमी (पडिक्कमण के०) प्रतिक्रमण संपदा जाणवी.

(भेयउ के०) ए भेदथकी. ए मांहे प्रथमनी पांच संपदा ते इरियावहिनी मूल संपदा जाणवी, अने पाछलनी (तिन्नि के०) त्रण संपदा ते इरियावहिनी (चूलाए के०) चूलिकारूप जाणवी ॥३३॥

हवे नमुत्थुणंनी प्रत्येक संपदाना पदनी संख्या तथा आदिपद कहे छे.

दु-ति-चउ-पण-पण-पण-दु-च,-उ-तिपय सक्कथय-संपयाइपया ॥ नमु आइग पुरिसो लो,--ग अज्ञय धम्मऽप्प जिण सव्वं ॥ ३४ ॥

अर्थ-पहेली (दु के०) बे पदनी, बीजी (ति के०) त्रण पदनी, त्रीजी (चउ के०)चार पदनी, चोथी (पण के०) पांच पदनी, पांचमी (पण के०) पांच पदनी, छठी (पण के)पांच पदनी, सातमी (दु के०) बे पदनी, आठमी (चउ के०) चार पदनी अने नवमी (तिपय के०) त्रण पदनी, ए (सक्कथय के०) नमुत्थुणंने विषे संपदानां पद कह्यां, ते सर्व मली तेत्रीश जाणवां.

हवे नमुत्थुणंनी (संपया के०) संपदाना (आइपया के०) आदिना एटले पहेला (धुरियां) पद कहे छे. (नमु के०) नमुत्थुणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद जाणवुं, (आइग के०) आइगराणं ए बीजी संपदानुं प्रथम पद, (पुरिसो

के०) पुरिसुत्तमाणं ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, (लोग के०) लोगुत्तमाणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद (अन्नय के०) अन्नयदयाणं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, (धम्म के०) धम्मदयाणं ए ठही संपदानुं प्रथम पद, (अप्प के०) अप्पम्हियवराणदंसणधराणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद (जिण के०) जिणाणं जावयाणं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद, (सव्वं के०) सव्वन्नूणं सव्वदरिसिणं ए नवमी संपदानुं प्रथम पद.

हवे ए शक्रस्तवनी नव संपदाउनां नाम कहे ठे-

थोअव्व संपया उह, इयरहेऊ-वउंग तद्धेऊ ॥ सविसेसुवउंग सरूव,--हेउ नियसमफलय मुरके ॥ ३५ ॥

अर्थ-श्रीअरिहंत ज्ञगवंत ते विवेकी जनोए स्तववायोग्य छे एटला माटे नमुथ्थुणं अरिहंताणं, ज्ञगवंताणं ए बे पदनी पहेली (थोअव्व संपया के०) स्तोतव्य संपदा जाणवी. पछी ते स्तववायोग्यनो सामान्य हेतु कहेवा माटे

आइगराणंथी मांमीने सयंसंबुद्धाणं लगें त्रण पदनी बीजी (उह के०) उंघ एटले सामान्य-हेतु संपदा जाणवी. पछी ए बीजी संपदाना अ-र्थने विशेषे दीपावे तेमाटे सामान्यहेतुथी (इ-यरहेऊ के०) इतरहेतु ते विशेष हेतुरूप त्रीजी संपदा जाणवी, पछी आद्य संपदाना अर्थने विशेषे दीपावे एटले सामान्य स्तवनानो उप-योग तेनुं कहेवुं ते चोथी (उवउंग के०) उ-पयोग संपदा जाणवी. पछी ए उपयोग संपदा-नाज अर्थने हेतु सद्भावे करी दीपावे ते पां-चमी (तद्धेऊ के०) तत् हेतु संपदा जाणवी, अथवा उपयोग हेतु संपदा जाणवी, पछी एज उपयोग हेतु संपदाना अर्थ गुण दीपाववा नि-मित्ते अर्थ विशेषे जणावे एटले कारण सहित स्तववा योग्यनुं स्वरूप कहेवुं ते छठी (सवि-सेसुवउंग के०) सविशेष उपयोग हेतु संपदा जाणवी, पछी यथार्थ पोताना स्वरूपनुं हेतु प्रकटार्थ देखामवा रूप सातमी (सरूवहेउ

के०) स्वरूप हेतु संपदा जाणवी, तथा पोताने समानं फलदायक प्रकटार्थ रूप एटले स्तवना करनारने आपतुल्य करे एवा परम फलदायक एटले पोतानी समान परने फलनुं करण एट-ला माटे आठमी (नियसमफलय के०) निज समफलदनामे संपदा जाणवी, तथा मोक्ष स्वरूप प्रकटार्थ रूप मोक्षपदनुं स्वरूप प्रगट छे एटला माटे नवमी (मुक्के के०) मोक्ष संपदा जाण-वी. जे माटे कह्युं छे के " सव्वन्नूआइ पढमो, बीउ सिवमयलमाइ आलावो ॥ तइउ नमो जिणाणं, जियभयाणं तन्निदिहो ॥ १ ॥ इ-त्यावश्यके ॥ ३५ ॥

हवे नमुथ्थुणंना अक्षरादिकनी एकंदर सरवाले संख्या कहे छे.

दोसगनउआ वण्णा, नवसंपय पयतित्तीस सक्कथ्थए ॥ चेइयथ्थयठ संपय, तिचत्त पय वण्ण डुसयगुणतीसा ॥ ३६ ॥

अर्थ—(सक्कथ्थए के०) शक्रस्तव जे नमुथ्थुणं

तेने विषे सर्व मलीने (दोसगनऊआ के०) बशेंने सत्ताणुं (वन्ना के०) वर्ण जाणवा अने (नवसंपय के०) नव संपदा जाणवी, तथा (पयतित्तीस के०) पद तेत्रीश जाणवां.

हवे (चेइयथय के०) चैत्यस्तव एटले अरिहंतचेइयाणंने विषे सर्व मली (अठसंपय के०) आठ संपदा जाणवी अने (तिचत्तपय के०) तेंतालीश पद जाणवां, तथा (वन्न के०) वर्ण एटले अक्षर ते (डुसयगुणतीसा के०) बशें ने ओगणत्रीश जाणवां. ॥ ३६ ॥

हवे चैत्यस्तव जे अरिहंतचेइयाणं तेनी प्रत्येक संपदाना पदनुं मान तथा प्रत्येक संपदाना आदिपद कहे छे.

डु छ सग नव तिय छ चउ, छप्पय चिइ संपया पया पढमा ॥ अरिहं वंदण सद्धा, अन्न सुहुम एव जा ताव ॥ ३७ ॥

अर्थ—पहेली (डु के०) बे पदनी बीजी (छ के०) छ पदनी, त्रीजी (सग के०) सात

पदनी, चोथी (नव के०) नव पदनी, पांचमी (तिय के०) त्रण पदनी, छठी [छ के०) छ पदनी, सातमी (चउ के०) चार पदनी, आठमी (छप्पय के०) छ पदनी जाणवी.

हवे ए (चिइ के०) चैत्यस्तवनी प्रत्येक (संपया के०) संपदानां (पढमा के०) प्रथमना एटले आदिनां (पया के०) पद कहे छे. तिहां (अरिहं के०) अरिहंतचेइयाणं ए पहेली संपदानुं प्रथम पद (वंदण के०) वंदणवत्तियाए ए बीजी संपदानुं प्रथम पद (सद्धाए के०) सद्धाए ए त्रीजी संपदानुं प्रथम पद, (अन्न के०) अन्नत्थ ऊससिएणं ए चोथी संपदानुं प्रथम पद, (सुहुम के०) सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं ए पांचमी संपदानुं प्रथम पद, (एव के०) एवमाइएहिं आगारेहि ए छठी संपदानुं प्रथम पद, (जा के०) जाव अरिहंताणं ए सातमी संपदानुं प्रथम पद, (ताव के०) तावकायं ए आठमी संपदानुं प्रथम पद ॥ ३७ ॥

हवे ए चैत्यस्तवनी संपदाउंना नाम कहे बे.

अप्नुवगमो निमित्तं, हेउ इग-बहु-वयंत आगारा ॥ आगंतुग आगारा, उस्सग्गावहि सरूवठ ॥ ३० ॥

अर्थ—जे अंगीकार करवुं तेने अभ्युपगम कहीये माटे इहां अरिहंत वांदवाना अंगीकार रूप प्रथम (अप्नुवगमो के०) अभ्युपगम संपदा जाणवी, तथा काउस्सग्ग कया निमित्ते करी करीये? ते बीजी (निमित्तं के०) निमित्त संपदा जाणवी, तथा श्रद्धादिक हेतु वधते वधते करी करिये, केमके श्रद्धादिक कारण विना निष्फल थाय माटे त्रीजी (हेउ के०) हेतु संपदा जाणवी, तथा आगार राख्या विना निरतिचारपणे काउस्सग्ग न थाय, एटला माटे आगार राखवानी अन्नथ्थ ऊससिएणं इत्यादि उच्छ्वासादिकने करवे करी चोथी (इगवयंत के०) एकवचनांत आगार संपदा जाणवी. तथा " सुहुमेहिं अंग-संचालेहिं " एटले सूक्ष्म नेत्रादिक फरकवादि

मात्र आदिके करी पांचमी (बहुवयंत आगारा के०) बहुवचनांत आगार संपदा जाणवी. इहां आगारा पद बेहुने जोमवुं, तथा एक सहज बीजो अल्पबाहुल्य एटले एवमाइएहिं एणे करी अग्निस्पर्श, पंचेंद्रिय छेदन, चौरादिजय, सर्पादि कदाचित् आवी मले तो इत्यादि आगार कह्यां, माटे बहु हेतु आगंतुक भावरूप अथवा अग्न्यादिक उपघातरूप छठी (आगंतुग आगारा के०) आगंतुगागार संपदा जाणवी. तथा जाव अरिहंताणं इत्यादिक काउस्सग्गनो अवधि मर्यादारूप जे संपदा, ते सातमी (उस्सग्गावहि के०) कायोत्सर्गावधि संपदा जाणवी, तथा कायोत्सर्गनुं यथावस्थारूप स्वरूप ते आठमी (सरूव के०) स्वरूप संपदा जाणवी. एं (अठ के०) आठ संपदानां नाम कह्यां ॥

हवे नामस्तव एटले लोगस्सादिकने विषे पद आदिकनी संख्यादिक कहे छे.

नामथयाइसु संपय, पयसम अमवीस सोल

वीस कमा ॥ अडुरुत्त वन्न दोसठ, डुसय-
सोल-ठनउअसयं ॥ ३ए ॥

अर्थ–(नामथयाइसु के०) नामस्तवादिक-
ने विषे एटले नामस्तव ते लोगस्स तथा आ-
दिशब्दथकी पुक्करवरदी ते श्रुतस्तव जाणवुं
अने सिद्धस्तव ते सिद्धाणं बुद्धाणं जाणवुं. ए
त्रण सूत्रने विषे (पयसम के०) पद समान
(संपय के०) संपदा जाणवी. एटले जेटलां ए
सूत्रोनां पद बे, तेटलां विसामानां स्थानक
जाणवां. तिहां लोगस्सनां पद (अमवीस के०)
अठावीश अने संपदा पण अठावीश जाणवी.
अने पुक्करवरदीनां पद (सोल के०) सोल
अने संपदा पण सोल जाणवी. तथा सिद्धाणं
बुद्धाणंना पद (वीस के०) वीश अने संपदा
पण वीश जाणवी. ए (कमा के०) अनुक्रमे
संपदा तथा पद कहेवां, तथा लोगस्सने विषे
(अडुरुत्त के०) बीजी वार अणउच्चरया एवा,
(दोसठ के०) बशें ने साठ (वन्न के०) वर्ण

एटले अक्षर जाणवा. तथा पुस्करवरदीना 'सुअस्स जगवर्ज' पर्यंत (डुसयसोल के०) बशें ने सोल अक्षर जाणवा, अने सिद्धाणं बुद्धाणंना करेमि काउस्सग्गं पर्यंत (अठनउअसयं के०) एकशो ने अठाणुं अक्षर जाणवा ॥ ३ए ॥

पणिहाण डुवन्नसयं, कमेण सग ति चउवीस तित्तीसा ॥ गुणतीस अठवीसा, चउतीसिगतीस बार गुरु वन्ना ॥४०॥ दारं ॥ ० ॥ ॥ए ॥ १० ॥

अर्थ–हवे जावंतिचेइयाइं तथा जावंत केवि साहू अने सेवणा आजवमखंडा लगें जयवीयराय ए त्रण (पणिहाण के०) प्रणिधान सूत्र बे, तेने विषे (डुवन्नसयं के०) एकशो ने बावन अक्षर जाणवा.

हवे (कमेण के०) अनुक्रमे संयोगीया गुरु एटले जारे अक्षर सर्व सूत्रोनां कहे बे. तिहां प्रथम नवकारने विषे द्धा, प्रा, व, क्का, व, प्प, वे (सग के०) सात अक्षर गुरु एटले जारे जाणवा.

तथा खमासमणने विषे ञ्जा, ज्जा, ड्ड, ए (ति के०) त्रण अक्षर गुरु जाणवा. तथा इरियावहिने विषे ञ्जा, क्क, क्क, क्क, क्क, त्तिं, ट्टि, क्क, त्ति, ट्टि, द्द, स्स, ञ्जा, क्क, स्स, त्त, ञ्छि, त्त, ल्ली, म्मा, ग्घा, ठा, स्स, ग्गं, ए (चउवीस के०) चोवीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा नमुत्थुणंने विषे त्थु, ड्ड, ग्घा, त्त, त्थी, त्त, ज्जो, क्खु, ग्ग, म्म, म्म, म्म, म्म, म्म, क्क, ट्टी, प्प, ह्र, न्ना, द्धा, त्ता, ब्व, न्नू, ब्व, क्ख, व्वा, त्ति, ञ्छि, त्ता, द्धा, स्सं, ह्र, वे, ए (तित्तीसा के०) तेत्रीश अक्षर गुरु जाणवा. केटलाएक ढउमाणं पदना ढकारने गुरु कहेता नथी अने केटलाएक ह्र ढ, म्म, ए त्रणने गुरु गणीने तेत्रीश गुरु अक्षर करे ढे, तिहां चूलिकानी गाथा गुरु नथी गणता. इत्यादिक बहु मतांतर ढे, पण इहां तो संप्रदायागत एक टकार ज्ञारे गणीए ढीए.

तथा अरिहंतचेइयाणं रूप चैत्यस्तवने

विषे स्स, ग्गं, त्ति, त्ति, क्का, त्ति, म्मा, त्ति, त्ति, ग्ग, त्ति, द्धा, प्पे, ड्ढ, स्स, ग्गं, न्न, ङ्क, म्मु, ग्गे, त्त, ब्बा, ठ्ठि, ग्गो, ज्जा, स्स, ग्गो, क्का, प्पा; ए (गुणतीस के०) उंगणत्रीश अक्षर गुरु छे.

तथा लोगस्सरूप नामस्तवने विषे स्स, ज्जो, म्म, त्थ, त्त, स्सं, प्प, प्प, प्फ, ज्जं, ज्जं, म्मं, ल्लिं, व्व, ठ्ठ, ड्ढ, त्थ, त्ति, स्स, त्त, द्धा, ग्ग, त्त, म्म, च्चे, द्धा, द्धिं, व्व; ए (अठवीसा के०) अठावीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा पुक्खरवरदीरूप श्रुतस्तवने विषे क्ख, ड्ढे, म्मा, द्धं, स्स, स्स, स्स, प्फो, स्स, स्स, ल्ला, क्ख, स्स, च्चि, स्स, म्म, स्स, प्प, द्धे, न्न, न्न, स्स, प्पू, च्चि, ब्ब, ठ्ठि, क्क, च्चा, म्मो, ड्ढ, म्मु, त्त, ड्ढ, स्स; ए (चउतीस के०) चोत्रीश अक्षर गुरु जाणवा.

तथा सिद्धाणं बुद्धाणंरूप सिद्धस्तवने विषे द्धा, द्धा, ग्ग, व्व, द्धा, क्को, क्का, स्स, द्ध,

स्स, ङ्गि, क्खा, स्स, म्म, क्क, ट्टं, ठ, त्ता, ठ,
द्वी, ठ, ठि, ठा, ष्टा, ष्ठिं, च्च, म्म, द्दि, ठि,
स्स, ग्गं; ए (इगतीस के०) एकत्रीश अक्षर
गुरु छे.

तथा प्रणिधान त्रिकने विषे ह्वे, व्वा, ब्ब, व्वे,
व्वे, ग्गा, ट्ठ, च्छि, ध्ध, च्चा ब्ब, व्व, ए (बार गुरुवन्ना
के०) बार गुरुवर्ण एटले भारे अक्षर जाणवा॥

ए प्रमाणे वर्ण संख्या, पद संख्या अने
संपदा मली त्रण द्वार कह्यां, तेनी साथे पूर्वे
कहेला सात द्वार मेलवतां मूल दश द्वार कहे-
वाणां, अने उत्तर भेद १०७० थया. ए सूत्रोना
अर्थ सर्व श्री आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिथी
जाणजो. इहां घणो ग्रंथ वधे माटे अर्थ ल-
ख्यो नथी ॥ ४० ॥



आठमो, नवमो अने दशमो मळी त्रण द्वारना यंत्रनी स्थापना.

सूत्र.	सूत्रोनां नाम.	पदसंख्या.	संपदा	सर्वाक्षर.	गुरुअ	लघुअ
नवकार.	पंचमंगलसुअ०	९	८	६८	७	६१
इच्छामिखमासम०	प्रणिपातदंडकसूत्र		०	२८	३	२५
इरियावहि	पडिक्कमणासूत्र.	३२	८	१९९	२४	१७५
नमुत्थुणं.	शक्रस्तव.	३३	९	२९७	३३	२६४
अरिहंतचेइयाणं.	चैत्यस्तवाध्ययन.	४३	८	२२९	२९	२००
लोगस्स.	नामस्तव.	२८	२८	२६०	२८	२३२
पुक्खरवरदीवड्ढे.	श्रुतस्तव.	१६	१६	२१६	२४	१९२
सिद्धाणंबुद्धाणं.	सिद्धस्तव.	२०	२०	१९८	३१	१६७
जावंतिचेइयाइं. जावंतकेविसाहू. जयवीयराय.	प्रणिधानत्रिक.	अनुक्रमे.	अनु०	१५२	१२	१४०
सर्वमळी सरवाळे		१८१	९७	१६४७	२०१	१४४६

इरियावहिनी संपदा.	पद संख्या. धुरिया पद.
१ अभ्युपगमसंपदा.	२ इछा मि.
२ निमित्तसंपदा.	२ इरियावहियाए.
३ उघसंपदा.	१ गमणागमणे.
४ इतरहेतुसंपदा.	४ पाणक्कमणे.
५ संग्रहसंपदा.	१ जे मे जीवा विराहिया.
६ जीवसंपदा.	५ एगिंदिया.
७ विराधनासंपदा.	११ अभिहया.
८ पडिक्कमणसंपदा.	६ तस्स उत्तरिकरणेणं.

चैत्यस्तवनीसंपदा.	पद संख्या. धुरिया पद.
१ अभ्युपगमसंपदा.	२ अरिहंतचेइयाणं.
२ निमित्तसंपदा.	६ वंदणवत्तिआए.
३ हेतुसंपदा.	७ सद्धाए.
४ एकवचनांतसंपदा.	ए अन्नत्थ ऊससिएणं.
५ बहुवचनांतसंपदा.	३ सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं
६ आगंतुगागारसंपदा.	६ एवमाइएहिं आगारेहिं
७ कायोत्सर्गावधिसंपदा.	४ जाव अरिहंताणं.
८ स्वरूपसंपदा.	६ तावकायं.

शक्रस्तवनी संपदा.	पद संख्या. धुरिया पद.
१ स्तोतव्य संपदा.	२नमुथ्थुणं अरिहंताणं
२ उंघसंपदा.	३ आइगराणं.
३ इतरहेतुसंपदा.	४ पुरिसुत्तमाणं.
४ उपयोगसंपदा.	५ लोगुत्तमाणं.
५ तद्धेतुसंपदा.	५ अभयदयाणं.
६ सविशेषोपयोगसंपदा.	५ धम्मदेसयाणं.
७ स्वरूपहेतुसंपदा.	२ अप्पडिहयवर०
८ निजसमफलदसंपदा.	४ जिणाणं जावयाणं.
ए मोक्षसंपदा.	३ सव्वन्नूणं०

हवे अगीयारमुं पांच दंमकनुं द्वार अने बारमुं पांच दंमकने विषे देव वांदवाना जे बार अधिकार छे, तेनुं द्वार कहे छे.

पणदंमा सक्कथ्थय, चेइअ नाम सुअ सिद्ध-थ्थय इथ्थ ॥ दारं ॥ ११ ॥ दो इग दो दो पंच य, अहिगारा बारस कमेण ॥ ४१ ॥

अर्थ—पणदंमा केo) पांच दंमकनां नाम कहे छे. तेमां पहेलुं नमुथ्थुणंते (सक्कथ्थय केo)

शक्रस्तव दंमक कहिये. बीजुं अरिहंत चेश्या-णंने (चेइअ के०) चैत्यस्तव दंमक कहिये. त्रीजुं लोग्गस्सने (नाम के०) नामस्तव दंमक कहिये. चोथुं पुख्करवरदीने (सुअ के०) श्रुत-स्तव दंमक कहिये. पांचमुं सिद्धाणंबुद्धाणंने (सिद्धथ्थय के०) सिद्धस्तव दंडक कहिये. ए पांच दंमकना नामनुं अगीयारमुं द्वार कह्युं. सर्व मली उत्तर बोल १ए७५ थया ॥ हवे (इअ के०) ए पांच दंडकने विषे देव वांदवाना बार अधिकार बे, तेमनुं बारमुं द्वार कहे बे.

तिहां प्रथम शक्रस्तव मध्ये (दो के०) बे अधिकार बे, तथा बीजा अरिहंतचेइयाणं-रूप चैत्यस्तवमध्ये (इग के०) एक अधिकार बे, तथा त्रीजा नामस्तव एटले लोगस्सने विषे (दो के०) बे अधिकार बे, तथा चोथा श्रुतस्तव मध्ये (दो के०) बे अधिकार बे, अने पांचमा सिद्ध-स्तव मध्ये (पंच य के०) पांच अधिकार छे. ए (कमेण के०) अनुक्रमे कहेवा. सर्व मली

चैत्यवंदनने विषे (बारस अहिगारा के०) बार अधिकारो छे ॥ ४१ ॥

हवे ए बार अधिकारनां धुरियां पद एटले आद्यनां पद कहे छे.

नमु जेअ अरिहं लो,-ग सव्व पुक्ख तम सिद्ध जो देवा ॥ उज्जि चत्ता वेआ,-वच्चग अहिगार पढम पया ॥ ४२ ॥

अर्थ-(नमु के०) नमुत्थुणं ए पहेला अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जेअ के०) जे अ अईआ सिद्धा ए बीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, तथा (अरिहं के०) अरिहंत चेइयाणं ए त्रीजा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (लोग के०) लोगस्स उज्जोअगरे ए चोथा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं. (सव्व के०) सव्वलोए अरिहंतचेइयाणं ए पांचमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (पुक्ख के०) पुक्खरवरदीवड्ढे ए छठा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं,

(तम के०) तमतिमिरपडलविद्धंसणस्स ए सातमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (सिद्ध के०) सिद्धाणं बुद्धाणं ए आठमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (जो देवा के०) जो देवाण वि देवो ए नवमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं,(उज्जि के०) उज्जितसेलसिहरे ए दशमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं (चत्ता के०) चत्तारि अट्ठ दस दो य, ए अगीयारमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, (वेआवच्चग के०) वेआवच्चगराणं ए बारमा अधिकारनुं प्रथम पद जाणवुं, ए बार (अहिगार के०) अधिकारोना (पढमपया के०) पहेलां पद एटले आदिनां पद (धुरियां) जाणवां ॥ ४२ ॥

ए बार अधिकार मांहेलां कया अधिकारे कोने वांदवा ? ते कहे छे.

पढम-अहिगारे वंदे, भावजिणे बीयए उ दव्वजिणे ॥ इगचेइय--ठवणजिणे, तइय च-उत्थंमि नामजिणे ॥ ४३ ॥

अर्थ—नमुत्थुणंथी मांमीने जियन्नयाणं पर्यंत(पढमअहिगारे के०)पहेला अधिकारने विषे जे तीर्थंकर थया, केवलज्ञान पाम्या ठे; एवा (नावजिणे के०) नावजिनने एटले नावतीर्थंकरने(वंदे के०)हुं वांडुं बुं, तथा जे अ अईआ सिद्धा ए गाथाये(बीयए ठ के०)बीजो अधिकार ठे, तेने विषे वली जे आगल थाशे एवा (दव्व जिणे के०) ड्रव्यजिनने हुं वांडुं छुं. ए बे अधिकार नमुथ्थुणंना जाणवा. तथा (तइय के०) त्रीजा अधिकारे (इगचेइयठवणजिणे के०) एक चैत्यना स्थापनाजिनने हुं वांडुं छुं, एटले एक देरासरमांहेली सर्व प्रतिमाउने वंदन करवुं ए अरिहंत चेइयाणंने पाठे जाणवो. ए सूत्रोमां एकज अधिकार ठे. तथा लोगस्स उज्जोअगरे रूप (चउथ्थंमि के०) चोथा अधिकारने विषे (नामजिणे के) श्रीरुषन्नादिक नामजिनने हुं वांडुं छुं. ॥ ४२ ॥

तिहुअण—ठवणजिणे पुण, पंचमए विह-

रमाण-जिण छठे ॥ सत्तमए सुयनाणं, अठमए सवसिद्ध-थुई ॥ ४४ ॥

अर्थ-(पुण के०) वली सवलोए अरिहंतचेइयाणंरूप (पंचमए के०) पांचमा अधिकारने विषे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप (तिहुअण के०) त्रण ज्ञुवनने विषे जे शाश्वता अने अशाश्वता एवा (ठवणजिणे के०) स्थापना जिन छे ते प्रत्ये हुं वांदुं. तथा पुस्करवरदीवड्ढेनी पहेली गाथा रूप (छठे के०) छठा अधिकारने विषे अढीद्वीपमध्ये श्रीसीमंधर स्वाम्यादि (विहरमाणजिण के०) विचरता ज्ञाव जिनप्रत्ये वांदुं छुं. तथा तमतिमिरपडल इहांथी मांमीने सुअस्स ज्ञगवउ पर्यंत (सत्तमए के०) सातमा अधिकारने विषे (सुअनाणं के०) श्रीश्रुतज्ञानप्रत्ये हुं वांदुं. तथा सिद्धाणं बुद्धाणं ए गाथा रूप (अठमए के०) आठमा अधिकारने विषे तीर्थ अतीर्थादिक पन्नर ज्ञेद-

वाळा एवा (सव्वसिद्धथुई के०) सर्व सिद्धनी स्तुति जाणवी. ॥ ४४ ॥

तित्थाहिववीरथुइ, नवमे दसमे य उज्जयंत-थुई ॥ अठावयाइ इगदिसि, सुदिठिसुर-समरणा चरिमे ॥ ४५ ॥

अर्थ—तथा जो देवाणविदेवो अने इक्कोवि नमुक्कारो ए बे गाथारूप (नवमे के०) नवमा अधिकारने विषे आ वर्त्तमान (तित्थाहिव के०) तीर्थना अधिपति ठाकुर जे श्री (वीर के०) वीर ज्ञगवान् तेनी (थुइ के०) स्तुति जाणवी. तथा उज्जिंतसेलसिहरे ए गाथारूप (दसमे के०) दशमा अधिकारने विषे (अ के०) वली (उज्जयंत के०) श्रीरैवतकाचल पर्वतने विषे श्री नेमिनाथ ज्ञगवाननी (थुइ के०) स्तुति जाणवी. तथा "चत्तारि अठ दस दो य वंदिया" ए गाथा रूप (इगदिसि के०) अगीयारमा अधिकारने विषे (अठावयाइ के०) अष्टापदादिकने विषे श्रीज्ञरतेश्वरे करावेली चोवीश जिन प्रतिमानी

स्तुति जाणवी. तथा वेयावच्चगराणं ए गाथारूप (चरिमे के०) छेला बारमा अधिकारनें विषे (सुदिठि के०) सम्यग्दृष्टि (सुर के०) देवताने (समरणा के०) स्मरवारूप स्तुति जाणवी. ॥ ४५ ॥

आ ठेकाणे अगीयारमा अधिकारने विषे चत्तारि अठ दस इत्यादि गाथामां घणा प्रकारे देव वांद्या छे ते मांहेला केटला एक इहां लखीये छीए. संभवादिक चार जिन दक्षिण दिशे, तथा सुपार्श्वादिक आठ जिन पश्चिमदिशे, तथा धर्मादि दश जिन उत्तरदिशे, तथा श्रीऋषभ अने अजित ए बे जिन पूर्वदिशे. एवं चोवीश जिनने अष्टापदे वांद्या छे, तथा बीजे अर्थे प्रथमना चारने आठ गुणा करीये तेवारे बत्रीश थाय, अने वचला दशने बे गुणा करिये, त्यारे वीश थाय. ए बे आंक मेलवीये तेवारे बावन चैत्य, नंदीश्वरद्वीपे छे, तेने वांद्या छे.

तथा त्रीजे अर्थे (चत्त के०) छांड्या छे

(अरि के०) वैरी जेणे एवा अठ्ठदस एटले अढार अने बे पाछला मेलवीये त्यारे वीश तीर्थंकर थाय ते श्रीसमेतशिखरे सिद्ध थया तेने वांद्या, अथवा विचरता जिन उत्कृष्टे काले एक समये जन्मथी वीश होय तेमने वांद्या.

तथा चोथे अर्थे आठने दश अढार थाय तेनी साथे वीशनो चोथो भाग पांच थाय, ते मेलवीये, तेवारे त्रेवीश थया. ते एक श्रीनेमीश्वर विना त्रेवीश जिन श्रीशत्रुंजये समवसरया छे, माटे तेने वांद्या.

पांचमे अर्थे दशने आठ गुणा करीये ते वारे एंशी थाय, तेने बमणा करतां एकशो ने साठ थाय, ते उत्कृष्टकाले पांच महाविदेहे विचरे, तने वांद्या.

छठ्ठे अर्थे आठ अने दश मली अढार थाय, तेने चार गुणा करतां बहोंतेर थाय. ए त्रैकालिक त्रण चोवीशी भरतादिक क्षेत्रनी वांदी.

सातमे अर्थे चारने आठ युक्त करीये, ते

वारे बार थाय तेने दश गुणा करीये, तेवारे ए-
कशो ने वीश थाय, तेने बमणा करतां बशें ने
चालीश थाय ते ज्ञरतादिक दश क्षेत्रनी दश
चोवीशी वांदी.

आठमे अर्थे मूल चार छे, तथा वली आठ
ने आठ गुणा करतां चोशठ थाय, तथा दशने
दश गुणा करता एकशो थाय, तेनी साथे पा-
छला बे मेलवता १७० जिन थाय. ते उत्कृष्ट
काल विचरता जिनने वांद्या.

नवमे अर्थे अनुत्तर, ग्रैवेयक, विमानवासी
अने ज्योतिषी ए चार स्थानक उर्ध्वलोके छे
तिहांनां चैत्य तथा आठ व्यंतरनिकाय, दश
ज्ञवनपति, ए अधोलोकनां चैत्य तथा मनुष्य लो-
कमां तो शाश्वती अने अशाश्वती प्रतिमा, ए त्रण
लोकनां चैत्य वांद्यां. एवी रीते ए गाथा मध्ये
सर्व तीर्थवंदना लक्षण अर्थ घणा छे, ते सर्व व-
सुदेवहिंमि प्रमुख ग्रंथथी जोइ लेवा. अहींयां
विस्तार घणो थाय माटे लख्या नथी ॥ ४५ ॥

नव अहिगारा इह ललि,-अविछरा-वि-
त्तिआइ अणुसारा ॥ तिन्नि सुयपरंपरया, बीयउ
दसमो इगारसमो ॥ ४६ ॥

अर्थ-(इह के०) ए बार अधिकारमांथी
पहेलो, त्रीजो, चोथो, पांचमो, बठो, सातमो,
आठमो, नवमो, अने बारमो, ए (नव अहि-
गारा के०) नव अधिकार ते (ललिअविछरा
के०) ललितविस्तरा नामे न्नाष्यनी (वित्ति-
आइ के०) वृत्ति आदिकना (अणुसारा के०)
अनुसारथकी जाणवा. अने (बीयउ के०)
बीजो अधिकार, जे अ अईआ सिद्धा तथा
(दसमो के०) दशमो अधिकार उजिंतसेल
ए गाथोक्त तथा (इगारसमो के०) अगी-
यारमो अधिकार चत्तारि अठ दस ए गाथोक्त
एटले जे अ अईआ, उजिंत अने चत्तारि, ए
(तिन्नि के०) त्रण अधिकार, ते (सुयपरंपरया
के०) श्रुतनी परंपराथी एटले जेम सिद्धांतनुं
व्याख्यान बे, तेम तथा गीतार्थ संप्रदायथी
जाणवा ॥ ४६ ॥

आवस्सय-चुसीए, जं जणियं सेसया ज-
हिच्छाए ॥ तेणं उज्जिंताइवि, अहिगारा सुयमया
चेव ॥ ४३ ॥

अर्थ-(जं के०) जेम (आवस्सयचुसी-
ए के०) आवश्यक सूत्रनी चूर्णीने विषे तथा
प्रतिक्रमण चूर्णीमध्ये (जणियं के०) कह्युं छे.
जे उज्जिंतादिक (सेसया के०) शेष अधिकार
ते (जहिच्छाए के०) यथेच्छाये जाणवा. (तेणं
के०) ते कारण माटे ए (उज्जिंताइवि के०)
उज्जिंतसेलसिहरे इत्यादिक गाथाये पण जे
(अहिगारा के०) अधिकारो ते सर्व (सुयम-
या के०) श्रुतमय जाणवा. (चेव के०) च-
कार पादपूर्णार्थे छे अने एव शब्द निश्चयवा-
चक छे ॥ ४३ ॥

बीओ सुयत्थयाइ, अत्थओ वन्निओ तहिं चेव॥
सक्कत्थयंते पढिओ, दव्वारिहवसरि पयम्डो ॥४८॥

अर्थ-अने " जे अ अईआ सिद्धा जेअ ज-
विस्संति " इत्यादि गाथाये जे ऽव्यजिन वं-

दन रूप (बीउं के०) बीजो अधिकार ते पण (सुयत्थ ाइ के०) श्रुतस्तवादि एटले श्रुतस्तवनी आदिमां आवेली पुख्करवरदी नामनी गाथाने विषे ढे ते (अन्नउं के०) अर्थथकी तो (तहिं के०) श्रीआवश्यक चूर्णिने विषे ते श्रुतस्तव मांहेज (चेव के०) निश्चे (वन्निउं के०) वर्णितो एटले वर्णव्यो ढे. जेमके [१]उक्कोसपएणं सत्तरिणं जिणयरसयं जहन्नपएणं वीसं तिन्नयराए, एताय एगकालेणं नवंति अईआ अणागया अणंता ते तिन्नयरा नमंसामित्ति॥ ए पाठ ढे. अहीं कोइ शंका करे, के त्यां नले तेम नणो, परंतु आंही लखेला पाठ करीने शुं ? तो त्यां कहे ढे, के (सक्कन्नयंते के०) शक्रस्तवना अंतने विषे जे (पढिउं के०) पठितः ए-

---

१ उत्कृष्टपदे एकसोसितेर जिनेश्वर जघन्यपदे वीश तीर्थंकर एटला एक काळे (साथे) होय छे. अतित काळे अनंता थया, अनागत काळे अनंता थशे; ते तीर्थंकरो (द्रव्यजिनो) ने नमुं छुं, ए प्रकारे.

टले कह्यो छे अर्थात् पूर्वाचार्योंये शक्रस्तवना अंतमा स्थापन करेलो छे, ते (दव्वारिहवसरि के०) द्रव्य अरिहंत वांदवाना अवसरे एटले भाव अरिहंत वंदनानंतर द्रव्य अरिहंत वंदनानुं अनुक्रमे प्राप्तपणुं छे, माटे ए आद्य अधिकारमां पण नवमी संपदाने विषे कांइक भणवाथकी तेनुं विस्तारार्थपणुं छे तेम (पयमुत्रो के०) प्रगटार्थः एटले प्रगटार्थ जाणवो माटे ए पण श्रुतमय जाणवो. आ प्रकारे निर्युक्ति अने चूर्णीनां वचन ते प्रमाणज छे, जे माटे कह्युं छे ॥ ४८ ॥

असढाइन्नणवज्जं, गीअच्छ–अवारिअंति मज्जच्छा ॥ आयरणा विहु आण,–त्ति वयणाउ सु बहु मन्नंति ॥ ४९ ॥

अर्थ–जे आचरणा (अणवज्जं के०) अनवद्य होय एटले पापरहित होय, अने वली ते (गीअच्छअवारिअं के०) गीतार्थे अवारित होय एटले बीजा कोइ गीतार्थ पुरुषे तेने

वारी नहीं होय (इति के०) एम (मद्यत्रा के०) मध्यस्थ राग द्वेष रहित (असढाइन्न के०) अशठ पंमित, गीतार्थ पुरुषो तेणे जे आचरी होय, तो तेवा गीतार्थनी करेली जे (आयरणावि के०) आचरणा ते पण (हु के०) निश्चें श्रीभगवंतनी (आण के०) आज्ञाज कहीये (इति वयणाउ के०) एवुं वचन छे, ते माटे (सु के०) सुष्टु एटले भला अथवा सुविहित अशठ गीतार्थनी करेली आचरणाने पण (बहुमन्नंति के०) बहुमानपूर्वक माने छे. ॥ ४ए ॥

ए बार अधिकारनुं बारमुं द्वार कह्युं, इहां सुधी उत्तर बोल १ए७३ थया ॥

हवे चार वांदवा योग्यनुं तेरमुं आदे देइने बीजां पण द्वार कहे छे.

चउ वंदणिज्ज जिण मुणि, सुय सिद्धा ॥ दारं ॥ १३ ॥ इह सुराइ सरणिज्जा ॥ दारं

॥ १४ ॥ चउह जिणा नाम ठवण, दव्व ज्ञाव
जिणज्ञेएणं ॥ ५० ॥

अर्थ–(चउवंदणिज्जा के०) चार वंदनीय एटले चार वांदवा योग्य कह्या बे; ते कया कया? तेनां नाम कहे बे. एक (जिण के०) जिन तीर्थंकर अरिहंत, बीजा (मुणि के०) मुनिराज साधु, त्रीजो (सुय के०) श्रुत–सिद्धांत–प्रवचन अने चोथा (सिद्धा के०) सिद्ध ज्ञगवान् जे मोक्ष प्राप्त थया ते जाणवा. ए चार वंदनीकनुं तेरमुं द्वार कह्युं, उत्तर बोल १एए१ थया ॥ १३ ॥

हवे एक स्मरवा योग्यनुं चौदमुं द्वार कहे बे. (इह के०) ए श्रीजिनशासनमांहे सम्यग्दृष्टि अधिष्ठायिक (सुराइ के०) देवताप्रमुख (सरणिज्जा के०) स्मरणीय बे एटले स्मरवा योग्य जाणवा. ए स्मरवा योग्यनुं चौदमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १एए२ थया ॥१४॥
हवे चार प्रकारना जिननुं पन्नरमुं द्वार कहे बे.

(चउहजिणा के०) चार प्रकारना जिन कह्या छे ते कहे छे. एक (नाम के०) नामजिन, बीजा (ठवण के०) स्थापना जिन, त्रीजा (दव्व के०) द्रव्यजिन, चोथा (भाव के०) भावजिन ए चार (जिणभेएणं के०) जिनना भेदे करीने चार जिन जाणवा ॥ ५० ॥

हवे ए चार प्रकारना जिननुं स्वरूप चार निक्षेपे कहे छे.

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणंदपडिमाउ ॥ दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥ ५१ ॥ दारं ॥१५॥

अर्थ-प्रथम (जिणनामा के०) श्रीऋषभादिक जिननां जे नाम छे तेमने ते ते नामे बोलावीये छैये तेने (नामजिणा के०) नाम थकी जिन कहीये, (पुण के०) वली बीजा (जिणंद पडिमाउ के०) श्रीजिनेंद्रनी जे. शाश्वती अशाश्वती प्रतिमाउ छे तथा पगलां छे ते सर्वने (ठवणजिणा के०) स्थापना जिन क-

हीये, त्रीजा जेणे तीर्थंकर नामकर्म बांध्युं छे एवा श्रीकृष्ण, श्रेणिकादिक ए सर्व तथा जे तेज ज्ञवमां तीर्थंकर पदवी पामशे पण दीक्षा लइने ज्यां सुधी केवल ज्ञान नथी पाम्या, त्यांसुधी तेपण (जिणजीवा के०) जिनना जीव कहेवाय, तेने (दव्वजिणा के०) ड्रव्यथकी जिन कहिये. जे तीर्थंकरो सिद्धि पदने वर्या छे ते पण ड्रव्य अरिहंत कहेवाय. चोथा जे केवलज्ञान पामीने (समवसरणत्था के०) श्रीसमवसरणने विषे स्थित थया, बेठा थका धर्मोपदेश आपे तेने (ज्ञावजिणा के०) ज्ञावथकी जिन जाणवा ॥ ५१ ॥ (दारं के०) ए चार प्रकारे जिनना नामनुं पन्नरमुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल १८८६ थया ॥

हवे चार थोयोनुं शोलमुं द्वार कहे छे.

अहिगय–जिण–पढमथुई, बीया सव्वाण तइअ नाणस्स ॥ वेयावच्चगराण उ, उवउंगछं चउछथुई ॥ ५२ ॥ दारं ॥ १६ ॥

अर्थ–जेनी आगल देव वांदीये एवी जे नामे मूलनायकनी प्रतिमा होय एटले प्रस्तुत अंगीकरयो जे चोवीश जिन मांहेलो कोइ श्रीरुषन्नादिक एक जिन तेनं (अहिगयजिण के०) अधिकृत जिन कहीये तेनी (पढमथुई के०) प्रथम स्तुति ते अमुक जिननीज जाणवी. तथा (बीया के०) बोजी स्तुति तो (सव्वाण के०) सर्व तीर्थंकरोनी साधारण न्नक्तिरूप जाणवी. तथा (तइअ के०) त्रीजी स्तुति ते (नाणस्स के०) ज्ञाननी एटले श्रुत सिद्धांत प्रवचननी जाणवी. तथा श्रीजिनशासनना रखवाला (वेयावच्चगराण के०) वैयावृत्त्यना करनार एवा सम्यग्दृष्टि देवताउनी (उ के०) वली (उवउंगहं के०) उपयोग मनःस्मरणने अर्थे (चउब्रथुई के०) चोथी स्तुति जाणवी ॥ ५२ ॥ ए चार थुइनुं सोलमुं द्वार कह्युं ॥ उत्तर बोल २००० थया ॥

हवे आठ निमित्तनुं सत्तरमुं द्वार कहे छे.

पाव–खवणत्त इरिआई, वंदणवत्तिआइ ठ निमित्ता ॥ पवयण–सुर–सरणत्तं, उस्सग्गो इअ निमित्तठ ॥ ५३ ॥ दारं ॥ १७ ॥

अर्थ–गमनागमनथी उपना जे (पाव के०) पाप ते (खवणत्त के०) खपाववाने अर्थे (इरिआई के०) इरियावहि प्रथम पडिक्कमवी ते प्रथम निमित्त जाणवुं. तथा श्रीतीर्थंकरने (वंदणवत्तिआइ के०) वंदणवत्तियादि (ठ के०) ठ (निमित्ता के०) निमित्ते काउस्सग्ग करवो, जेम के प्रथम वंदणवत्तिआए एटले श्रीजिनराजने वांदवाथी जे लाभ थाय, ते काउस्सग्गमां मुजने लाभ थाउ. बीजो पूअणवत्तिआए एटले केशर चंदनादिक धूप प्रमुखे परमेश्वरने पूजवाथी जे लाभ थाय, ते मुजने काउस्सग्गमां लाभ थाउ. त्रीजो सक्कारवत्तिआए एटले सत्कार ते श्रीजिनेश्वरने आभरणादि चढाववाथी जे लाभ थाय, ते मुजने काउ-स्सग्गमां लाभ थाउ. चोथो सम्माणवत्तिआए

एटले सन्मान ते श्रीजिनना स्तवनगुण कहे-
वाथी जे लाज थाय, ते मुऊने काउस्सग्गमां
लाज थाउ. पांचमो बोहिलाजवत्तिआए एटले
आगले जवे समकितना लाज थाय, ते निमित्ते
काउस्सग्ग करुं. बहुं निरुवसग्ग एटले निरुप-
सर्ग ते जन्म जरा मरणादि उपसर्ग टालवा
निमित्ते काउस्सग्ग करुं. ए ब निमित्त अने
एक प्रथम कह्युं एवं सात थयां. तथा आठमुं
(पवयणसुर के०) प्रवचनना अधिष्ठायक सुर
एटले देवता तेने (सरणठं के०) स्मरवाने
अर्थे (उस्सग्गो के०) एक नवकारनो काउ-
स्सग्ग चैत्यवंदनने विषे करवो (इअ के०) ए
(निमित्तठ के०) निमित्त आठ जाणवां. ते
देववंदनने विषे होय. ए आठ निमित्तनुं स-
त्तरमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल २००७ थया.

हवे बार हेतुनुं अढारमुं द्वार कहे छे.

चउ तस्स उत्तरीकरण,-पमुह सद्धाइआय
पण हेउ ॥ वेयावच्चगरताइं, तिन्नि इअ हेउ

बारसगं ॥ ५४ ॥ दारं ॥ १७ ॥

अर्थ–तिहां प्रथम देव वांदतां पाप टले छे (तस्स के०) ते पाप टालवाना (उत्तरीकरण के०) उत्तरीकरण (पमुह के०) प्रमुख (चउ के०) चार हेतु छे, ते कहे छे. एक तस्स उत्तरीकरणेणं एटले पापने आलोववे करीने अर्थात् पापकर्म शोधी दूर करवे करी, बीजो पायच्छित्तकरणेणं एटले अभिहया पदथी उपन्युं जे प्रायश्चित्त ते लेवे करी, त्रीजो विसोहिकरणेणं एटले राग द्वेषनुं टालवुं–अतिचार टालवानी विशुद्धि करवे करी, चोथो विसल्लीकरणेणं एटले माया मात्सर्यादि वर्जवे करी मन वचन कायानी निःशल्यत्व, त्रिकाल अतीत अनागत वर्त्तमानने विषे अरिहंतादिक षट्पद साथे पापकर्म टालवे काउस्सग्गनुं फल आपे; ए चार उत्तरीकरणादि हेतु कह्यां. तथा (सद्धाइआ के०) श्रद्धादिक (य के०) वली (पणहेउ के०) पांच हेतु छे तेना नाम

कहे छे, सद्धाए, मेहाए, धिईए, धारणाए, अ-णुप्पेहाए एटले एक श्रद्धा, बीजी मेधा एटले बुद्धि, त्रीजी धृति एटले चित्तस्वस्थता, चोथी धारणा ते यथा किंचित् शिक्षा ग्रहणता पांचमी अनुपेक्षा ते तदेकाग्रता, ए सर्व पांचे वानां वधते थके पांच हेतु जाणवा तथा (वेयावच्च-गरताइं के०) वैयावृत्यकरत्वादिक वेआवच्च-गराणं, संतिगराणं, सम्मद्दिठिसमाहिगराणं ए (तिसि के०) त्रण हेतुए करे, ते कहे छे. एक वैयावच्चकरनारा सम्यग्दृष्टि देव, बीजो संति-गराणं एटले सम्यक्दृष्टिने रोगादिकनी शांति करवे करीने, त्रीजो समाहिगराणं एटले स-म्यक् दृष्टिने समाधि उपजाववे करीने ए त्रण हेतुये देव संज्ञारवा. एटले चार उत्तरीकरण तथा पांच श्रद्धादिक अने त्रण वैयावच्चकर (इच्च के०) ए (बारसगं के०) द्वादशकं एटले बार (हेउ के०) हेतु चैत्यवंदनने विषे जाणवा एटले बार हेतुनुं अढारमुं द्वार पूरुं

थयुं अने उत्तर बोल २०७० थया ॥ ५४ ॥
हवे सोल आगारनुं उगणीशमुं द्वार कहे छे.

अन्नथयाइ बारस, आगारा एवमाइया च-उरो ॥ अगणि पणिंदिछिंदण, बोहीखोभाइ डक्कोय ॥ ५५ ॥ दारं ॥ १९ ॥

अर्थ–(अन्नथयाइ बारस आगारा के०) अन्नथादि बार आगार एटले अन्नथऊससिए-णंथी मांमीने सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं पर्यंत बार आगार जाणवां. तेनां नाम कहे छे. प-हेलो ऊंचो श्वास लेवे, बीजुं नीचो श्वास लेवे, त्रीजुं खांसी–ऊधरस आवे, चोथुं छींक आवे, पांचमुं बगासुं आवे, छठ्ठुं ऊडकार ते ऊर्ध्ववात आवे, सातमुं अधोवात (वाछूट) आवे, आठमुं भमरि आवे, नवमुं वमन पित्त मूर्छा आवे, दशमुं सूक्ष्म अंगस्फुरकणाथी, अगीयारमुं सूक्ष्म खेल-सिंघाण नामक मेल संचारथी, बारमुं दृष्टि प्रमुख संचारथी काउस्सग्ग न भांगे.

तथा (एवमाइया चउरो के०) एवमादिक चार आगार कहे छे. एक (अगणि के०) अग्निनो उपद्रव उपने थके तिहांथी पुंजतो अलगो जाय अथवा दीवा प्रमुखनी उजेई थातां तथा अग्निनो स्पर्श थतो होय तेवारे काउस्सग्गमांहे कपमाथी शरीर ढांके, अथवा पुंजतो अलगो जइ रहे, बीजुं (पणिंदिछिंदण के०) पंचेंद्रियछेदन पंचेंद्रियनुं छेदन थतुं होय अथवा मूषकादिक पंचेंद्रिय जीव, ते स्थापनाचार्य अने पोतानी वचमां जाता होय, तेवारे पुंजतो अलगो जइ रहे, तो काउस्सग्ग भंग न थाय. त्रीजुं (बोहीखोभाइ के०)बोधिक्षोभादि ते जिहां राजा अथवा चोरादिक मनुष्य तेना पराभवे करी धर्मनी क्षोभणा थाय माटे काउस्सग्गमांहे तिहांथी अलगो जइ रहे तो काउस्सग्ग भंग न थाय, चोथुं (मक्कोय के०) मक्क ते साप प्रमुखना मंकना भये करी अथवा साप प्रमुख पासे आवतो होय तो

तेना न्नयथी अलगुं जवुं पडे, तेथी काउस्सग्ग न्नंग न थाय, ए सोल आगारनुं उंगणीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०३६ थया ॥ ५५ ॥

हवे काउस्सग्गना उंगणीश दोष त्यागवा, तेना नामनुं वीशमुं द्वार कहे छे.

घोमग लय खंन्नाई, मालु-द्धी निअल सबरि खलिण वहू ॥ लंबुत्तर थण संजइ, न्नमु-हंगुलि वायस कविठे ॥ ५६ ॥

अर्थ-प्रथम घोमानी पेठे एक पग उंचो राखे, वांको पग राखे, ते (घोमग के०) घोटक दोष, बीजो जेम वायराथी वेलमी कंपे तेम शरीरने धूणावे, ते (लय के०) लता दोष, त्रीजो थांन्ना प्रमुखने उंठिंगे रहे, ते (खंन्नाई के०) स्तंन्नादि दोष, चोथो मेमा उपरने माले माथुं लगावी रहे ते (माल के०) माल दोष, पाचमो गामानी उंधनी पेरे अंगुठा तथा पानी मेलवी पग राखे ते (उद्धी के०) उधि दोष, छहो नेउलमां पग नाख्या-

नी परे पग मोकला राखे, ते (नियल के०) निगम दोष, सातमो नागी जिल्लमीनी पेरे गुह्यस्थानके हाथ राखे ते (सबरि के०) शबरि दोष, आठमो घोमाना चोकमानी पेरे हाथ रजोहरणे राखे, ते (खलिण के०) खलिण दोष, नवमुं नवपरिणीत वहूनी पेरे माथुं नीचुं राखे ते (वहू के०) वधूदोष, दशमो नाजिनी उपरे अने ढींचणथी नीचे—जानुं नीचे लाबुं वस्त्र राखे ते (लंबुत्तर के०) लंबुत्तर दोष, ए दोष यति आश्रयी जाणवो. केमके ढुंटीथी चार अंगुल नीचे अने ढींचणथी चार अंगुल उपर यतिने चोलपट पहेरवो कह्यो ढे. अगीयारमुं डांस मसाना जये अथवा अज्ञानथी लज्जाथी स्त्रीनी पेरे हैयुं ढांकी राखे हृदय आढादे, ते (थण के०) स्तनदोष, बारमो शीतादिकने जये साध्वीनी पेरे बेहु खंना ढांकी राखे एटले समग्र शरीर आढादी राखे ते (संजइ के०) संयतिदोष, तेरमो आलावो गण-

वाने अर्थे संख्या करवाने अंगुली तथा पाप-
णना चाळा करे, ते (नमुहंगुली के०) नमुहं-
गुली दोष, चउदमो वायस—कागडानी पेरे आं-
खना डोला फेरवे, ते (वायस के०) वायस दोष,
पंदरमो पहेरेलां वस्त्रने यूका तथा प्रस्वेदे करी
मलिन थवाना नयने लीधे कोठनी पेरे गोपवी
राखे ते (कविठ्ठ के०) कपित्थ दोष ॥ ५६ ॥

सिरकंप मूअ वारुणि, पेहत्ति चइज्ज दोस
उस्सग्गे ॥ लंबुत्तर थण संजइ, न दोस समणी-
ण सवहु सड्ढीणं ॥ ५१ ॥ दारं ॥

अर्थ—सोलमो यक्षावेशितनी परे माथुं
धूणावे, ते (सिरकंप के०) शिरःकंपदोष, सत्त-
रमो मुंगानी परे हू हू करे, ते (मूअ के०)
मूकदोष, अढारमो आलावो गणतो थको म-
दिरानी परे बडबडाट करे, ते (वारुणि के०)
मदिरा दोष, उगणीशमो वानरनी पेरे अरहुं
परहुं जोवे, उष्ठपुट चलावे, ते (पेह के०)
प्रेक्ष्य दोष (इति के०) ए प्रकारे ए उगणीश

दोष ते (उस्सग्गे के०) काउस्सग्गने विषे जाणवा. तेने (चइज्ज के०) ठांके. ए उंगणी-श दोषमां केटलाएक ञमूह अने अंगुली बे जूदा दोष गणे ठे, तेवारे वीश थाय, तथा एक (लंबुत्तर के०) लंबुत्तर, बीजो (थण के०) स्तन अने त्रीजो (संजइ के०) संयति ए त्रण (दोस के०) दोष ते (समणीण के०) श्रम-णी—साध्वीने (न के०) न होय, केमके एनुं वस्त्रा-वृत शरीर होय, पण एटलुं विशेष जे साध्वी प्रतिक्रमणादि क्रिया करते मस्तक उघाडुं राखे एटले सोल दोष साध्वीने लागे, अने ए त्रण दोषने (वहु के०) वधू दोष करी (स के०) सहित करिये तेवारे लंबुत्तरादि चार दोष थाय. ते (सड्ढीणं के०) श्राविकाने न होय, शेष पंदर दोष श्राविकाने लागे; ए सर्व दोष टाली ने काउस्सग्ग करवो एटले काउस्सग्गना दो-षनुं वीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५५ थया ॥ ५७ ॥

हवे काउस्सग्गना प्रमाणनुं एकवीशमुं द्वार
तथा स्तवननुं बावीशमुं द्वार कहे छे.

इरि–उस्सग्गपमाणं, पणवीसुस्सास अठ सेसेसु ॥ दारं ॥ २१ ॥ गंन्नीर–महुर–सद्दं, महत्थ-जुत्तं हवइ थुत्तं ॥ ५८ ॥ दारं ॥ २२ ॥

अर्थ–(इरिउस्सग्ग के०) इरियावहिना काउस्सग्गनुं (पमाणं के०) प्रमाण (पणवी-सुस्सास के०) पच्चीश श्वासोश्वासनुं जाणवुं. एटले संप्रदाये “ चंदेसु निम्मलयरा ” पर्यंत यावत् पच्चीश पदनो काउस्सग्ग कराय छे, अने (सेसेसु के०) शेष काउस्सग्ग जे देव वांदता स्तुति काउस्सग्ग ते (अठ के०) आठश्वा-सोश्वास प्रमाण जाणवो. केमके संप्रदाये एक नवकारनी संपदा आठ छे माटे. ए काउस्स-ग्ग प्रमाणनुं एकवीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५६ थया.

हवे श्रीवीतरागनुं स्तवन केवा प्रकारे कहे वुं ? तेनुं बावीशमुं द्वार कहे छे. (गंन्नीर के०)

मेघनी पेरे गंज्ञीर अने (महुरसद्दं के०) मधुर शब्द छे जिहां अने वली (महत्थजुत्तं के०) महा अर्थयुक्त ज्ञक्ति, ज्ञान, वैराग्य अने आत्मानंदादिदशायुक्त एवुं श्रीवीतरागनुं (थुत्तं के०) स्तुतं एटले स्तवन (हवइ के०) होय. ए स्तवन ज्ञणवानुं बावीशमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल २०५७ थया ॥ ५८ ॥

हवे चैत्यवंदन एक दिवसमां केटलीवार करवुं? तेनुं त्रवीशमुं द्वार कहे छे.

पडिकमणे चेइय जिमण, चरिम पडिक्कमण सुअण पडिबोहे ॥ चिइवंदण इअ जइणो, सत्त वेला अहोरत्ते ॥ ५९ ॥

अर्थ—एक (पडिकमणे के०) प्रज्ञातने पडिक्कमणे पच्चरकाण करतां देव वांदवाने विषे विशाललोचन रुप चैत्यवंदन करे, बीजुं (चेइअ के०) चैत्यगृहमां ज्ञगवंत आगले चैत्यवंदन करे, त्रीजुं (जिमण के०) जमती वखत पच्चरकाण पारे, तेवारे चैत्यवंदन करे,

चोथुं (चरिम के०) बेहेलुं जमीने ऊठ्या पछी एटले आहार करी रह्या पछी दिवसचरिम पच्चरकाण करतां चैत्यवंदन करे, पांचमुं (पडिक्कमण के०) संध्याने पडिक्कमणे नमोस्तु वर्द्धमानादि चैत्यवंदन करे; ठहुं (सुअण के०) सूती वखते संथारा पोरिसी नणावतां चैत्यवंदन करे, सातमुं (पडिबोहे के०) पाछली रात्रे जाग्या पछी कुसुमिण डुसुमिण काउस्सग्ग कस्या पछी किरियानी वेलाये चैत्यवंदन करे, (इअ के०) ए कह्या जे (सत्तउ वेला के०) सात वखतना (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करवां, ते (अहोरत्ते के०) एक अहोरात्रमध्ये (जइणो के०) यतिने होय, ए जघन्य थकी सात चैत्यवंदन जाणवा; अधिक करवामां दोष नथी 'अठमि चउद्दसीसुं सव्वाइं चेईआइं सव्वेवि साहुणो वंदेयव्वा इति वचनात्' ॥५९॥

हवे श्रावकने एक अहोरात्रमां केटलां चैत्यवंदन होय ? ते कहे छे.

पडिक्कमिउ गिहिणोवि हु, सगवेला पंच-वेल इअरस्स ॥ पूआसु तिसंझासु अ, होइ ति-वेला जहन्नेणं ॥ ६० ॥

अर्थ—एक प्रभाते अने बीजुं सांझे, ए बेवार (पडिक्कमिउ के०) पडिक्कमणुं करता एवा (गिहिणोवि के०) गृहस्थने पण (हु के०) निश्चें यतिनी पेरे (सगवेला के०) सात वार चैत्यवंदन थाय. तथा जे एक वार पडिक्कमणुं करता होय एवा गृहस्थने (पंच-वेल के०) पांच वार चैत्यवंदन थाय, तेमां एक संथारा पोरिसि सांभलतां, एक प्रतिक्रमणनी क्रिया करतां अने त्रणवार देव वांदता मली पांच थाय. अने तेथी (इअरस्स के०) इतर एटले जे पडिक्कमणुं नथी करता एवा गृहस्थने तो प्रभात, सांझ अने मध्यान्हे ए (तिसंझासु अ के) त्रण संध्याये (पूआसु के०) पूजाने विषे (जह-न्नेणं के०) ए जघन्यथी पण गृहस्थने माटे (तिवेला के०) त्रणवार चैत्यवंदना (होइ के०)

होय. ए सात प्रकारना चैत्यवंदननुं त्रेवीशमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल २०६४ थया ॥६०॥

हवे ए पूर्वोक्त सर्व बोल जो आशातनानो परिहार करे, तो सफल थाय, माटे चोवीशमुं दश आशातनानुं द्वार कहे छे.

तंबोल पाण जोयण, वाणह मेहुन्न सुअण निठवणं ॥ मुत्तुच्चारं जूअं, वज्जे जिणनाह-जगईए ॥ ६१ ॥

अर्थ—प्रथम आशातना शब्दनो अर्थ करे छे. जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनो आय एटले लाज तेनी शातना एटले खंडना करवी, तेने आशातना कहीये ते जिनघरमां न करवी. ते आशातना जघन्यथी दश प्रकारे छे, तेनां नाम कहे छे. प्रथम (तंबोल के०) तांबूल ते सोपारी, नागरवल्लीना पान अने पंचसुगंधादिकनुं खावुं, बीजी (पाण के०) पाणी पीवुं, त्रीजी (जोयण के०) जोजन करवुं, चोथी

(उवाणह के०) उपानह एटले मोजमी प-गरखांदिक पहेरवां, पांचमी (मेहुन्न के०) मैथुन ते कामचेष्टा करवी, छठी (सुअण के०) सुवुं ते शयन करवुं, सातमी (निठ्ठवणं के०) थूंकवुं, श्लेष्म नाखवुं आठमी (मुत्त के०) मात्रा एटले लघुनीति करवी, नवमी (उच्चारं के०) उच्चार ते वडीनीतिनुं करवुं, दशमी (जूअं के०) जूवटे रमवुं, ए दश आशातना ते (जिणनाह के०) जिननाथ एटले जगवा-नना देरासरनी (जगईए के०) जगतीने विषे एटले देरासरनी कोटडीमांहे पेसतां ए दश-वानां (वज्जे के०) वर्जवां; ए जघन्यथी दश आशातना महोटी छे, तेनां नाम कह्यां ॥ ६१ ॥

हवे उत्कृष्टथी चोराशी आशातना त्य-जवी जोश्ये तेनां नाम इहां प्रसंगे लखीये छैये, १ खेल–श्लेष्म, २ द्यूतादिक्रीमा, ३ कलह, ४ धनुर्वेदादिक कला, ५ कोगला नांखवा, ६

तांबूल पूगीफल–सोपारी पत्रादि भक्षण, ७ तांबूल खावाना कूचा, तथा उग्गार नाखवो, ८ गालो देवी, विरुद्ध बोलवुं, ए लघुनीति वडीनीति करवी, वातनिर्गमनादि पवित्रीकरणादि, १० शरीर धोवन, ११ केश समारवा, १२ नख समारवा, १३ रुधिरादि नाखवा १४ शेकेलां धान्य प्रमुख खावां, १५ त्वचा चाडादिक नांखवां १६ औषधादिके करी पित्त वमन करे १७ वमन करे, १८ दंतधावनादि करे, १ए वीसामण करावे, २० बकरी, गज, अने अश्वादिकनुं दमन–बंधन करे, २१ दांत, २२ आंख, २३ नख, २४ गंमस्थल, २५ नासिका, २६ कान, २७ मस्तकादिक, ते सर्वनो मेल डांमे, २८ सूवे, २ए मंत्र जूतादि ग्रह तथा राजादि कार्यना आलोच विचार करे, ३० वृद्ध पुरुषनो समुदाय तिहां आवी मले, ३१ नामां लेखां करे, ३२ धनना जाग प्रमुख मांहोमांहे वहेंचे, ३३ पोतानुं ड्रव्य जंमार करी तिहां थापे, ३४ पग

उपर पग चमावीने बेसे, ३५ बाणां थापे, ३६ वस्त्र सुकवे, ३७ दाल ढंढणीयादिक उगवे, ३० पापड शालेवां करे, ३ए वमीआदि देइ कच्चर चीज्ञमी प्रमुख सर्व शाक जाति उगवे, ४० राजादिकना ज्ञयथी देरासर मध्ये नासीने बुपी रहे, ४१ शोकादिके रुदन आक्रंद करे ४२ स्त्री, ज्ञक्त, राज्य, देशादिकनी विकथा करे, ४३ शर–बाण, तथा बीजा पण अधिकरण शस्त्र घडे, ४४ गाय, बलद प्रमुख थापे, ४५ टाढे पीम्यो अग्नि सेवे, ४५ अन्नादिकनुं रांधवुं करे, ४७ नाणादिक पारखे, ४० अविधिये निसीहि कह्या विना प्रवेश करे, ४ए छत्र, ५० उपानह, ५१ शस्त्र, ५२ चामर न मूके. एटले ए चार वानां साथे लइ प्रवेश करे, ५३ मननी एकाग्रता न करे, ५४ अभ्यंग एटले शरीरे तैलादिक चोपमे, ५५ सचित पुष्पफलादिक न मूके, ५६ अजीव वस्तु जे हार मुद्रादिक वस्त्रादिक ते बाहेर मूकी कुशोज्ञावंत थइ देरासरमां प्रवेश

करे,५७ नगवंत दीठे अंजलि न जोमे,एक शाटक उत्तरासंग न करे ५ए मुकुट मस्तके धरे ६० मौली–पाघमी उपर वस्त्र बोकानी घोस पेच प्रमुख न छोडे, ६१ कुसुमना सेहरा, गेगां प्रमुख माथाथी न मूके, ६२ होरु पामे, ६३ गेडीदडे रमत करे, ६४ प्राहुणादिकने जुहार करे, ६५ नांड चेष्टा, गाल, काख, पूंठ बजावे, ६६ रेकार तुकारादि तिरस्कारनां वचन बोले, ६७ लेवा देवा आश्रयी धरणुं मांमे, ६ए रणसंग्राम करे, ६ए वाल छूटा होय ते समा करे, जुदा करे, माथुं खणे,७० पलांठीवाळे पग बांधे, ७१ चांखमीये चडे, ७२ पग पसारी बेसे. ७३ पुमपुडी देवरावे, ७४ पगनो मेल जाटके, वस्त्रादिक जाटके, ७६ माकड यूकादिक वीणे, तथा तेने त्यांज नांखे, ७७ मैथुनक्रीडा करे, ७ए जमण करे, ७ए व्यापार–क्रयविक्रय करे ए० वैडुं करे, ए१ शय्या समारे ए२ गुह्य लिंगादिक उघाडे तथा समारे, ए३ बाहुयुद्ध करे तथा कुकडादिकना युद्ध करा-

वे, ८४ वर्षाकालादिकने विषे प्रणालीथी पाणी संग्रहे, अंघोल स्नान करे, तथा पाणी पीवाना जाजन मूके, ए उत्कृष्टथी चोराशी आशातना जिनजुवनमां वर्जवी.

हवे मध्यम बहेंतालीश आशातना वर्जवी तेनां नाम कहे छे.१ मूत्र,२ पुरीष,(विष्टा),३ पाणी, ४ उपानह, ५ शयन, ६ अशन, ७ स्त्री प्रसंग, ८ तंबोल, ए थुंकवुं, १० जूवटुं रमवुं, ११ जूवटादिकनुं जोवुं, १२ पलांठी वालवी, १३ पग पसारवा, १४ परस्पर विवाद, १५ परिहास, १६ मत्सर, १७ सिंहासन परिजोग, १८ केश शरीर विजूषा, १ए छत्र, २० खड्ग, २१ मुकुट, २२ चामरनुं राखवुं, २३ धरणुं करवुं, २४ हास्यादि विलास परिहास, २५ विटसाथे प्रसंग करवो, २६ मुखकोश न करवो, २७ मलिन शरीर राखे, २८ मलिन वस्त्र पहेरे, २ए अविधिये पूजा करे, ३० मननुं एकाग्रपणुं न करे, ३१ सचित्त द्रव्य बाहिर न मूकी आवे, ३२ उत्तरासंग न

करे, ३३ अंजलि न करे, ३४ अनिष्ट, ३५ हीन, कुसुमादि पूजोपकरण राखे, ३६ अनादर करे, ३७ जिनेश्वरना प्रत्यनिकने वारे नही, ३८ चैत्यद्रव्य खाय, ३९ चैत्यद्रव्यनी उपेक्षा करे, ४० बती सामर्थ्ये पूजावंदनादिके मंदता करे, ४१ देवद्रव्यादि न्नक्षक साथे व्यापार मित्राइ सगाइ करे, ४२ तेहवा वगेरानी मुख्यता करे, तथा तेनी आज्ञाये प्रवर्त्ते, ए बहेंतालीश मध्यम आशातना वर्जवी. एटले ए चोवीशमुं आशातनानुं द्वार थयुं॥ उत्तरबोल२०७४ पूर्ण थया॥

हवे देव वांदवानो विधि कहे छे.

इरि नमुकार नमुत्तुण, अरिहंत थुई लोग सव्व थुइ पुरक ॥ थुइ सिद्धा वेआ थुइ, नमुत्तु जावंति थय जयवी ॥ ६२ ॥

अर्थ—प्रथम (इरि के०) इरियावहि संपूर्ण पडिक्कमि पछी चैत्यवंदननो आदेश मागी (नमुकार के०) नमस्कार कही पछी (नमुत्तुण के०) नमुत्तुणं कहे. पछी उन्नो थइ

(अरिहंत के०) अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी एक तीर्थंकरनी (थुई के०) स्तुति कहे. पढी (लोग के०) लोगस्स कहीये पढी (सव्वथुइ के०) सव्वलोए अरिहंत चेइयाणं कही काउस्सग्ग करी सर्व तीर्थंकरनी बीजी स्तुति कहिये,पढी(पुक्ख के०)पुक्खरवरदी कही काउस्सग्ग करी श्री सिद्धांतनी त्रीजी (थुइ के०) स्तुति कहेवी पढी (सिद्धा के०) सिद्धाणं बुद्धाणं (वेआ के०) वेयावच्चगराणं इत्यादिक कही काउस्सग्ग करी अधिष्ठायिक देवोनी चोथी (थुइ के०) स्तुति कही पछी नीचे बेसीने (नमुत्थु के०) नमुत्थुणं संपूर्ण कहीने (जावंति के०) जावंति चेइआइं, जावंत केवि साहू कही नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः कही (थय के०) स्तवन कहीने, संपूर्ण (जयवी के०) जयवीयराय कहीये; ए देव वांदवानो विधि कह्यो ॥ ६१ ॥

हवे यद्यपि कोइ प्राणी एटला बोल तथा

एवो विधि न जाणतो होय तो पण आ कहेला आठ बोल तेमां होय तेने जक्तिवंत कहीये. जे माटे संबोधप्रकरणमध्ये कह्युं बे ॥ जत्ति-बहुमाणो वन्न, संजलण आसायणाइ परिहारो ॥ पडिणीयसंगवज्जण, सइसामब्ठ तयुज्जाणणं ॥ १ ॥ विहिजुंजण–मस्सवण,–मवन्नवायाण विहिपडिसेहो ॥ सद्धाए इय अडगुण,–जुत्तो संपुन्न–विहिजुत्तो ॥ २ ॥

ए बे गाथानो जावार्थ कहे बे. एक जक्ति ते अंतरंग राग, बीजुं बहुमान ते बाह्य लोकोपचार विनयादि गुण. त्रीजो वर्णवाद यशोवादनुं बोलवुं. चोथो आशातनादिकनो परिहार, पांचमो तेमना प्रत्यनिकनी साथे संग वर्जवो. बठ्ठो बती सामर्थ्यें विघ्ननुं टालवुं. सातमो आगलाने विधिमां जोडवुं, आठमो अवर्णवाद न सांजलवापूर्वक अविधिनो निषेध करवो अने विधिनो प्रतिसेवन करवो, एवा आठ गुणे विशुद्ध ते सर्वोपाधिविशुद्ध संपूर्ण विधि

युक्त कहीये ॥ २ ॥

सव्वोवाहि-विसुद्धं, एवं जो वंदए सया देवे ॥
देविंदविंद-महिअं, परमपयं पावइ लहुसो ॥६३॥

अर्थ-एम (सव्वोवाहिविसुद्धं के०) सर्वोपाधि विशुद्ध जेम होय तेम (एवं के०) एम एटले सर्व श्रीजिनधर्म संबंधिनी चिंता तेणे करी निर्दोष प्रकारे शुद्ध श्रद्धाये करी (जो के०) जे भव्य प्राणी (देवे के०) श्रीदेवाधिदेवने (सया के०) सदा सर्वदा (वंदए के०) वांदे, ते भव्य प्राणी भवभयरूप पद जिहां नथी एवो (परमपयं के०) परमपदं एटले मोक्षरूप पद ते प्रत्ये (लहुसो के०) शीघ्र उतावलो (पावइ के०) पामे. ते परम पद कहेवुं? तो के (देविंद के०) देवना इंद्र तेमना जे (विंद के०) समूह एटले इंद्रोना समूहे जेने (महियं के०) अर्चितं एटले पूज्युं एवुं छे. एमा ग्रंथकर्त्ता श्रीदेवेंद्रसूरिये पोतानुं नाम पण सूचव्युं छे. ए श्रीचैत्यवंदनभाष्यनुं वार्त्तिक

संक्षेपथी कह्युं, अने विस्तारथी तो श्रीआव-
श्यकनिर्युक्ति तथा प्रवचनसारोद्धारनी वृत्त्या-
दिकथी जाणवुं. इति श्रेयः
एवं श्रीजिनवंदन विधि कृतपुण्यादवाप्त जयः ।
न्नवतु न्नुवि न्नविकलोकः स ज्ञानादिमल हृदयोऽयं१
॥ इति श्रीदेववंदनन्नाष्यं बालावबोधस-
हितं संपूर्णम् ॥ ६३ ॥
हवे ए श्रीदेवाधिदेवने विधिथी वांदवाना
फलना कहेवावाळा ते श्रीगुरु ठे माटे तेमने
पण न्नक्ति विनये करी विधि पूर्वक वंदना क-
रवा थकी सकल आगमनां रहस्य पामीये. ए
श्रीगुरुने वांदवानां पण घणां फल आगममांहे
कह्यां ठे ॥ यदुक्तं ॥ वंदणएणं न्नंते जीवे किं
जणइ, गोयमा! वंदणएणं जीवे नीयागोयं खवेइ,
उच्चागोयं णिबंधइ. सोहग्गंचणं अपडिलेहियं
आणाफलं निवित्तेइ दाहिण न्नावं च जण-
इत्ति ॥ ते माटे देववंदनानंतर गुरुवंदनाधिकार
हवे कहे ठे.



श्रीगुरुवंदन भाष्य प्रारंभः

गुरुवंदण-मह तिविहं, तं फिट्टा छोभ बार-
सावत्तं, सिरनमणाइसु पढमं, पुण्ण-खमासमण-
दुग बीअं ॥ १ ॥

अर्थ-(अह के०) अथ शब्द ते मंगला-
धिकारे छे, तथा प्रथम प्रारंभने कारणे अथ
शब्दे करी चैत्यवंदन भाष्य कह्या, पछी हवे
गुरुवंदन भाष्य कहीये छैये. (तं के०) ते
(गुरुवंदणं के०) गुरुवंदन (तिविहं के०)
त्रण प्रकारे छे. तेमां पहेलुं (फिट्टा के०) फेटा
वंदन, बीजुं (छोभ के०) थोभवंदन, त्रीजुं
(बारसावत्तं के०) द्वादशावर्त्त वंदन, तिहां
(सिरनमणाइसु के०) मस्तक नमाडवादिकने
विषे, आदि शब्द थकी अंजलिकरण ते हाथ

जोम्ब्रादिक जाणवा. ते (पढमं के०) पहेलुं फेटा वंदन जाणवुं. तथा (पूम-खमासमण-डुगि के०) पूर्ण पंचांग बे खमासमण देवे करीने एटले बे हाथ, बे गोठण अने एक मस्तक ए पांच अंग नमाववा रूप ते (बीयं के०) बीजुं थोन्नवंदन जाणवुं ॥ १ ॥

इहां शिष्य पूछे छे के थोन्नवंदने तथा द्वादशावर्त्त वंदने प्रथम एक वार वांदीने फरी बीजी वार शे हेतुये वांदीये छैये ? त्यां आचार्य उत्तर आपे छे.

जह दूउ रायाणं, नमिउं कज्जं निवेइयं पछा ॥ वीसज्जिउवि वंदिअ, गछइ एमेव इत्थ डुगं ॥ २ ॥

अर्थ-(जह दूउ के०) जेम दूत पुरुष छे ते (रायाणं के०) राजाने (नमिउं के०) नमिने (कज्जं निवेइयं के०) कार्य निवेदन करे वली (पछा के०) पाछो राजाये (वीस-ज्जिउवि के०) विसर्ज्यो थको पण (वंदिअ

के०) वांदीने (गच्छइ के०) जाय (ए मेव के०) एनी पेरे (इत्थ के०) इहां गुरुवंदनने विषे पण वंदननुं (डुगं के०) ढिक जाणवुं, अने द्वादशावर्त्त वंदने तो बेहु वांदणे मलीने आवश्यक आवर्त्तादि बोल नीपजे छे. ते माटे बेहु वांदणानी जोडीये एकज वंदन कहेवाय छे ॥ २ ॥

हवे वांदणां देवानुं कारण शुं ? ते कहे छे.

आयारस्सउ मूलं, विणउ सो गुणवउ अ पडिवत्ती ॥ सा य विहि–वंदणाउ, विही इमो बारसावत्ते ॥ ३ ॥

अर्थ–जे माटे श्रीसर्वज्ञप्रणीत जे (आयारस्स के०) आचार तेनो (उ के०) वली (मूलं के०) मूल जे छे, ते (विणउ के०) विनय छे (सो के०) ते विनय केवी रीते होय ? ते कहे छे. (गुणवउ के०) गुणवंत गुरुनी (अ के०) वली (पडिवत्ती के०) प्रतिपत्ति एटले सेवा करवी, ते जाणवो (सा

के०) ते ज्ञक्ति (य के०) वली (विहिवंदणाउं के०) विधिये करीने वांदवाथकी थाय ते (विही के०) विधि (इमो के०) आ आगल (बारसावत्ते के०) द्वादशावर्त्त वंदनने विषे कहेशे ॥ ३ ॥

हवे ए त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन केम होय ? ते कहे ठे.

तइयं तु ठंदण–डुगे, तत्र मिहो आइमं सयलसंघे ॥ बीयं तु दंसणीण य, पयछिआणं च तइयं तु ॥ ४ ॥

अर्थ–(तइयं के०) त्रीजुं द्वादशावर्त्त वंदन ते (तु के०) वली (ठंदणडुगे के०) बे वांदणां देवे करीने होय, एटले बे वांदणां देवे करी थाय, इहां ठंदण शब्द वंदनवाचक जाणवो. (तत्र के०) ते पूर्वोक्त त्रण वादणांमां (आइमं के०) आदिम एटले पहेलुं फेटावंदन जे ठे, ते साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध (सयलसंघे के०) समस्तश्रीसंघे

मली (मिहो के०) मिथः एटले मांहोमांहे परस्पर तेवा तेवा अवसरने विषे करवुं होय त्यारे थाय, अने (बीयं के०) बीजुं जे थोन्न-वंदन बे, ते (तु के०) निश्चें वली सुसाधु एवा (दंसणीण के०) दर्शनीयनेज अर्थें होय, एटले एक गबगत, बीजो अनुयोगी, त्रीजो अनियतवासी, चोथो गुरुसेवी, पांचमो आयुक्त जे संयममार्गमां सावधान एवा गुणवंत यतिने ए वांदणुं देवाय, तथा (य के०) चकारथी, तथा विधिविशिष्ट कार्यने विषे लिंगमात्रधारी पण जो सम्यक्त्वदर्शनवंत होय, तो ते पण थोन्नवंदने वंदनीय होय. तथा (तश्यं के०) त्रीजुं द्वादशावर्त्तवंदन जे बे ते (तु के०) वली आचार्य, उपाध्याय, गुणवंत गीतार्थादिक एवा (पयठिआणं के०) पदप्रतिष्ठित जे होय तेमने (च के०) निश्चे होय.

हवे ए वांदणांनां पांच नाम बे, ते कहे बे.

वंदण–चिइ–किइ–कम्मं, पूआकम्मं च वि-

णयकम्मं च ॥ कायवं कस्स व के,-ण वावि काहेव कइ खुत्तो ॥ ५ ॥

अर्थ-एक (वंदण के०) वंदन कर्म ते अज्निवादन स्तुतिरूप, अर्द्धावनत काय करवी, ते शरीर मस्तकादिके अवनत तथा कर्मथकी ज्नलां कर्म बंधाय एटला माटे बीजुं (चिइ के०) चितिकर्म, त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म वांदणुं, (च के०) वली ज्नलां मन, वचन अने कायानी चेष्टानुं जे कर्म करवुं, ते माटे चोथुं (पूआकम्मं के०) पूजाकर्म कहिये, तथा विनयनुं करवुं ते माटे पांचमुं (विणयकम्मं के०) विनयकर्म कहीये, ए पांच प्रकारे वदन (च के०) वली (कायवं के०) करवुं एटले पांच प्रकारे वांदणां देवां ते (कस्स के०) केने अर्थे देवां ? (व के०) वली (केणवावि के०-) कोणे वांदणां देवां ? अपि शब्द निश्चयार्थमां डे. (काहेव के०) केवारे वांदणां देवां? (कइखुत्तो के०) केटलीवार वांदणां

आपीये ? ॥ ५ ॥

कइउणयं कइसिरं, कइहि व आवस्सएहिं परिसुद्धं ॥ कइदोसविप्पमुक्कं, किइकम्मं कीस किरई वा ॥ ६ ॥

अर्थ—वांदणाने विषे (कइउणयं के०) केटला अवनत करवा, (कइसिरं के०) केटलीवार मस्तक नमाड्वुं, (कइहि के०) केटला (व के०) वली (आवस्सएहिं के०) आवश्यके करीने (परिसुद्धं के०) परिशुद्ध थको तथा (कइदोसविप्पमुक्कं के०) केटला दोषे करी विप्रमुक्त एटले रहित थके (कीस के०) शामाटे (किइकम्मं के०) कृतिकर्म (किरई के०) करवुं. वांदणां दीजे ? वा शब्द पुनर्वाचक छे ॥ ६ ॥ ए पांचमी अने छठी बे गाथा आवश्यक निर्युक्तिमां कही छे ते इहां कही ॥

हवे त्रण गाथाये करी वंदनानां बावीश द्वार कहे छे.

मूलदार गाहा ॥ पणनाम पणाहरणा,

अजुग्गपण जुग्गपण चउअदाया ॥ चउदाय
पणनिसेहा, चउअणिसेह–ठकारणया ॥ ७ ॥
आवस्सय–मुहणंतय,–तणुपेह–पणीस दोस ब-
त्तीसा ॥ ठ गुण गुरुठवण डुग्गह, डुठवीसक्कर
गुरु पणीसा ॥ ठ ॥ पय अम्रवन्न ठठाणा, ठ
गुरुवयणा आसायणतित्तीसं ॥ डुविही डुवी-
सदारे,–हिं चउसयाबाणुइ ठाणा ॥ ए ॥

अर्थ–(मूलदारगाहा के०) मूलद्वारनी
गाथाउं जाणवी. पहेलुं वांदणांनां (पणनाम
के०) पांच नाम कहेशे, बीजुं वांदणांनां (प-
णाहरणा के०) पांच आहरण एटले वांदणांनां
पांच उदाहरण दृष्टांत ज्व्य अने ज्ञावथी क-
हेशे; त्रीजुं वांदणां देवाने (अजुग्गपण के०)
अयोग्य एवा पांच पासत्थादिक कहेशे, चोथुं
वांदणां देवाने (जुग्गपण के०) योग्य एवा
आचार्यादिक पांच कहेशे, पांचमुं जेनी पासे
वांदणां न देवरावीये एवा (चउअदाया के०)
चार जण वांदणांना अदाता कहेशे, छवुं जेनी

पासे वांदणां देवरावीये एवा (चउदाय के०) चार वांदणांना दातार कहेशे, सातमुं (पण-निसेहा के०) पांच स्थानके वांदणानो निषेध करवो एटले वांदणां न देवां ते कहेशे, आठमुं (चउअणिसेह के) चार स्थानके वांदणानो अनिषेध करवो एटले चार स्थानके वांदणां देवां ते कहेशे, नवमुं वांदणां देवानां (अठ-कारणया के०) आठ कारण कहेशे ॥ ७ ॥

दशमुं वांदणाने विषे (आवस्सय के०) आवश्यक साचववां, अग्यारमुं (मुहणंतय के०) मुखनंतक एटले मुहपत्तिनी पडिलेहणा करवी, बारमुं (तणुपेह के०) शरीरनी पडि-लेहणा करवी, ए त्रणे वानां (पणीस के०) पच्चीश पच्चीश करवां ते कहेशे, पणीस शब्द सर्वने जोडवो. तेरमुं वांदणा देतां (दोसब-त्तीसा के०) बत्रीश दोष टालवा ते कहेशे, चौदमुं वांदणां देतां (ढ गुण के०) ढ गुण उपजे ते कहेशे, पन्नरमुं वांदणां देवामां साक्षात्

गुरु न होय तेवारे सद्भाव अने असद्भाव रूप (गुरुठवण के०) गुरुनी स्थापना करवी ते कहेशे, सोलमुं वांदणां देतां (डुग्गह के०) बे अवग्रह साचववा, ते कहेशे, सत्तरमुं वांदणाना सूत्रने विषे (डुछवीसस्कर के०) बशें ने ठवीश अक्षर छे, तेम (गुरुपणीसा के०) गुरु अक्षर पच्चीश छे ते कहेशे ॥ ८ ॥

अढारमुं वांदणानां सूत्रोने विषे (पयअमवन्न के०) पद अठावन छे ते कहेशे, उंगणीशमुं वांदणां देतां शिष्यने प्रश्न पूछवालक्षण वीसामानां (छठाणा के०) छ स्थानक छे ते कहेशे, वीशमुं वांदणां देतां प्रश्नोत्तररूप (छगुरुवयणा के०) छ गुरुनां वचन छे, ते कहेशे, एकवीशमुं वांदणां देतां गुरुनी (आसायणतित्तीसं के०) तेत्रीश आशातना न करवी तेनां नाम कहेशे, बावीशमुं वांदणाने विषे (डुविही के०) बे प्रकारनो विधि कहेशे. एम वांदणाना (डुवीसदारेहिं के०) बावीशद्वारे

करीने सर्व मली (चउसयाबाणुइ ठाणा के०) चारशेंने बाणुं स्थानक थाय ॥ ए ॥

अंक.	मूलद्वारनां नाम.	उत्तर ज्ञेद.	सरवालो.
१	वदननाम.	५	५
२	दृष्टांत.	५	१०
३	वांदवाने अयोग्य.	५	१५
४	वांदवाने योग्य.	५	२०
५	वांदणांना अदाता.	४	२४
६	वांदणांना दाता.	४	२८
७	निषेधनां स्थानक.	५	३३
८	अनिषेधनां स्थानक.	४	३७
ए	वांदणांना कारण.	८	४५
१०	आवश्यक.	२५	७०
११	मुहपत्ति पडिलेहण.	२५	ए५
१२	शरीर पडिलेहण.	२५	१२०
१३	वांदणांना दोष.	३२	१५२
१४	वांदणांना गुण.	६	१५८
१५	गुरु स्थापना.	१	१५ए

हवे पूर्वोक्त बावीश द्वारमां पहेलुं पाच नामनुं द्वार कहे छे.

पडिदार गाहा ॥ वंदणयं चिइकम्मं, किइकम्मं विणयकम्म पुअकम्मं ॥ गुरुवंदण-पणनामा, दवे भावे दुहोहेण ॥१०॥ दारं ॥ १ ॥

अर्थ-(पडिदारगाहा के०) प्रतिद्वारनी गाथा कहे छे. प्रथम (वंदणयं के०) वंदनकर्म ते अभिवादन स्तुति रूप जाणवुं. बीजुं (चि-इकम्मं के०) चितिकर्म ते रजोहरणादि उप-करण विधि सहितपणे कुशलकर्मनुं करवुं, जाण-

वुं. त्रीजुं (किइकम्मं के०) कृतिकर्म ते शरीर मस्तकादिके अवनमन करवुं. चोथुं (पुञकम्मं के०) पूजाकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने काय चेष्टा रूप जाणवुं. पांचमुं (विणयकम्म के०) विनयकर्म ते पूर्वोक्त चार प्रकारे विशेष उद्यमपणुं जाणवुं. ए (गुरुवंदण के०) गुरु वांदणांनां (पणनामा के०) पांच नाम ते वंदनानां पर्याय जाणवा. ए (दव्वे भावे के०) एक द्रव्यथकी वांदणां अने बीजां भावथकी वांदणां एम (डुह के०) बे प्रकारे (उंहेण के०) उंघेन एटले सामान्यप्रकारे जाणवां ॥ १० ॥

हवे पांच दृष्टांतोनुं बीजुं द्वार कहे छे.

सीयलय खुड्डए वी,–र कन्ह सेवग–डु पालए संबे ॥ पंचे ए दिठंता, किइकम्मे दव्व–भावेहिं ॥ ११ दारं ॥ २ ॥

अर्थ–प्रथम वंदनकर्मउपर द्रव्यवंदन अने भाववंदन आश्रयी (सीयलय के०) शीतलाचार्यनो दृष्टांत, बीजा चितिकर्म उपर

(खुड्डए के०) क्षुल्लकाचार्यनो दृष्टांत जाणवो. त्रीजा कृतिकर्म उपर (वीरकन्ह के०) वीरा शालवीनो अने कृष्ण महाराजनो दृष्टांत जाणवो. चोथा पूजाकर्म उपर (सेवग दु के०) राजाना बे सेवकोनो दृष्टांत जाणवो. पांचमा विनयकर्म उपर (पालए संबे के०) श्रीकृष्ण-महाराजना पुत्र पालक अने साम्बनो दृष्टांत जाणवो (ए के०) ए (पंचे के०) पांच (दिठंता के०) दृष्टांत ते (किइकम्मे के०) कृतिकर्म एटले वांदणाने विषे (दव्वभावेहिं के०) द्रव्यभावे करीने जाणवा ॥ ११ ॥ हवे ए पांचे दृष्टांतोनी कथा कहे छे.

हस्तिणाउर नगरना वज्रसिंह राजानी सौभाग्यमंजरी राणीने शीतलनामा पुत्र हतो, अने शृंगारमंजरी नामे पुत्री हती. ते कंचनपुर नगरे, विक्रमसेन राजाने परणावी, अनुक्रमे शीतल राजा थयो, तेणे धर्मघोषसूरि पासेथी दीक्षा लीधी, पछी विज्ञातसिद्धांत गीतार्थ थइ,

आचार्यपद पाम्या. हवे तेनी ज्ञगिनीने चार पुत्र सकलकलामां निपुण थया जाणी, तेमनी माता निरंतर पोताना पुत्र आगल ज्ञाइनी प्रशंसा करे अने कहे के धन्य कृतपुण्य पृथिवीमांहे एक तमारो मातुल बे, के जेणे राजज्ञार बांमी दीक्षा लीधी! एवी प्रशंसा सांज्ञली ते चारे पुत्र संवेगपणुं पाम्या. पबी स्थविरपासे दीक्षा लइ बहुश्रुत थइ गुरुने पूछी पोताना मामा शीतलाचार्यने एक पुरे आव्या सांज्ञली तेने वांदवाने अर्थे गया. तिहां जातां विकाल वेलाये गाम बाहेर एक देवलमां रह्या. मांहे पेसतां एक श्रावकने जणाव्युं के अमारा मातुलने कहेजो जे ज्ञाणेज साधु आव्या बे. हवे ते चारे ज्ञाणेजने राते शुक्लध्यानथी केवलज्ञान उपज्युं. प्रभाते तेमनुं अनागमन जाणी मातुल आव्या, तेहने अनादर करता जाणी कषाय दंमकमां आवते दंमक थापी इरियापथिका प्रतिक्रमी द्रव्यथी वंदन कीधुं; ते वारे ते बोल्या

अहो द्रव्यवंदने कषाय दंमक वधते वांद्या, परंतु ज्ञाववंदने कषायोपशांतिये वांदो, ते सांज्ञली मामा बोल्या तमे केम जाएयुं? तेवारे ज्ञाणेज बोल्या के अमे अप्रतिपाती ज्ञाने करी जाण्युं, ते सांज्ञली मामा मनमां विचारवा लाग्या के अहो मे केवलीनी आशातना करी, एम विचारी कषायस्थानकथी निवर्त्यो अने ते वारे केवलीने वांदवा लाग्या, अनुक्रमे चोथा केवलीने वांदतां मामाने पण केवलज्ञान उपन्युं. ए शीतलाचार्यने प्रथम द्रव्यवंदन अने पढी ज्ञाववंदनकर्म थयुं. ए प्रथम उदाहरण ॥

हवे बीजा चितिकर्म उपर क्षुल्लकनो दृष्टांत कहे ढे. जेम एक क्षुल्लक ज्ञला लक्षणवालाने, आचार्यें अंत समये पोताने पदे स्थाप्यो. ते गीतार्थ साधु पासे ज्ञणे, ते पण विशेषथी ज्ञक्ति साचवे. एकदा समये मोहनीय कर्मना उदयथी आचार्य ज्ञग्न परिणामी थयो; पढी साधु ज्ञिक्षाये गये थके बाहेर ज्ञूमिने विषे निकल्यो. पढी

एक वनने विषे एक दिशे जातां थकां, तिलक, अशोक चंपकादि विविधवृक्ष तिहां हतां, तेम छतां एक शमी एटले खीजमीनो वृक्ष तेनुं कोइक पूजन करतो हतो ते देखी पूजक प्रत्ये पूछयुं, के तमे ए कंटकवृक्षने केम पूजो छो ? तेणे कह्युं के अमारा वडिलोये पूर्वे ए वृक्षने पूज्युं छे माटे अमे पण पूजीये छैये. ते वचन सांभळीने क्षुल्लके विचार्युं जे आ शमी एटले जांखरांना वृक्ष सरिखो हुं छुं; तेने उत्तम वृक्ष समान गुणवंत लोक पूजे छे. अने महारामां श्रमणपणुं नथी; मात्र रजोहरणादि चितिकर्मगुणे करी मुजने पूजे छे, एम विचारी, पाछो आवी, साधुनी पासे आलोयणा लई, उजमाल थयो. एम ते आचार्यने पूर्वे द्रव्य चितिकर्म हतुं, पछी भावचिति कर्म उत्पन्न थयुं. ए बीजुं उदाहरण जाणवुं.

हवे त्रीजा कृतिकर्म उपर वीरा शालवी अने श्रीकृष्णनुं उदाहरण कहे छे. श्रीनेमिनाथ

भगवान् द्वारिकाये समोसस्या तेवारे श्रीकृष्णे सर्व साधुर्जने द्वादशावर्त वांदणे वांद्या, एने भावकृतिकर्म कहीये, अने श्रीकृष्णने रूडुं मनाववाने अर्थे वीरा शालवीये पण वांद्या एने द्रव्य कृतिकर्म कहीये. एना संबंधनो विस्तार आवश्यकवृत्तिथी जाणवो. ए त्रीजुं उदाहरण जाणवुं.

हवे चोथा पूजाकर्म उपर बे सेवकनो दृष्टांत कहे छे. जेम एक राजाना बे सेवक हता, ते गामनी सीमा निमित्ते विवाद करता राजपंथे जाता हता, मार्गमां साधु देखीने प्रशस्त मन, वचन अने कायाये करी एके कह्युं के " साधौ दृष्टे ध्रुवा सिद्धिः " एटले साधु दिठे छते निश्चये कार्यसिद्धि थाय, एमां संशय नथी, एम कही एकाग्र चित्ते साधुने वांद्या. अने बीजे सेवके उलटी हांसी रूपे व्यवहार मात्रे तेने अवनमन कर्युं, पछी राजद्वारे गये थके पहेला सेवकनो जय थयो, अने बीजानो

पराजय थयो. एम एकने द्रव्यथी पूजाकर्म अने बीजाने भावथी पूजाकर्म थयुं; ए चोथुं उदाहरण.

हवे पांचमा विनयकर्मने विषे पालक अभव्य अने सांबनो दृष्टांत कहे छे. श्रीनेमिनाथ भगवान् द्वारिका नगरीयें समोसर्या, तेवारे श्रीकृष्ण बोल्या के जे श्रीनेमीश्वर भगवानने सर्वथी पहेलुं जई वंदन करशे, तेने महारो पट्ट तुरंगमविशेष आपीश, ते सांभली तुरंगमने लोभे प्रथम रात्रि छतां पण पालके आवीने वांद्या, ते द्रव्यथकी वंदन जाणवुं. अने त्यां सांब कुमारे भावथकी वांद्या छे, ते भाववंदन जाणवुं. ए पांचमुं उदाहरण कह्युं. ए पांच दृष्टांतनुं बीजुं द्वार थयुं, उत्तर बोल दश थया ॥ ११ ॥

हवे पासत्थादिक पांच अवंदनीयनुं त्रीजुं द्वार कहे छे.

पासत्थो उस्सन्नो, कुसील संसत्तउ अहा-

छंदो ॥ डुग-डुग-ति-डुग-णेगविहा, अवंदणिज्जा जिणमयंमि ॥ १२ ॥ दारं ॥ ३ ॥

अर्थ—जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी पासे रहे ते प्रथम (पासत्थो के०) पासत्थो जाणवो तथा जे साधु सामाचारीने विषे प्रमाद करे ते बीजो (उस्सन्नो के०) उस्सन्नो जाणवो. तथा जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी विराधना करे ते त्रीजो (कुसील के०) कुशीलीयो जाणवो. तथा जे वैरागी मले तो तेनी साथे पोते पण वैरागी जेवो बनी बेसे अने जो अनाचारी मले तो तेनी साथे पोते पण अनाचारी बनी बेसे, ते चोथो (संसत्तउ के०) संसक्त जाणवो तथा जे श्रीतीर्थंकरनी आज्ञा विना पोतानी इच्छाये प्रवर्त्ते, पोतानी इच्छाये प्ररूपणा करे, ते पांचमो (अहाछंदो के०) यथाछंदो जाणवो. ए पोताने छंदे प्रवर्त्ते माटे एने यथा छंदो कहीये. तिहां एक देशथी बीजो सर्वथी मली (डुग के०) बे भेद पासत्थाना,

तथा एक देशथी बीजो सर्वथी मली (डुग के०) बे ज्रेद उस्सन्नाना, तथा ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील मली (ति के०) त्रण ज्रेद कुशीलीयाना, तथा संक्लिष्ट-चित्त अने असंक्लिष्ट चित्त मली (डुग के०) बे ज्रेद संसक्तना, तथा (अणेगविहा के०) अनेक प्रकार, अहाछंदाना जाणवा, एटले यथाछंदा अनेक ज्रेदना थाय छे. ए पासह्लादिक पांच जे कह्या ते (जिणमयंमि के०) श्रीजिनमतने विषे (अवंदणिज्जा के०) अवंदनीय जाणवा॥१२॥

हवे ए पांचनुं कांइक विशेष स्वरूप लखीये छैये. तिहां मिथ्यात्वादिक बंध हेतुरूप पाश तेने विषे जे रहे, तेने पासह्लो कहीये. अथवा ज्ञानादिकने पोतानी पासे करी मिथ्यात्वादिक पाशमां रहे एटले ज्ञानादिकने पासे राखे पण सेवे नहि अथवा पाशनी पेरे पोतानुं पासुं मलिन राखे ते पासह्लो कहीये. तेना बे ज्रेद छेः—एक देश पासह्लो अने बीजो

सर्वपासत्थो. तेमां जे कारण विना शय्यातर पिंम, अभ्याहृत एटले साहामो आण्यो पिंड, राज्यपिंम, नित्यपिंड अने अग्रपिंडादिक भुंजे. तथा गाम, देश, कुल श्रावकनी ममता मांमे, जेम के " आ महारा वासित भाव्या छे " ते कुलादिकनी निश्राये विचरे, तथा गुर्वादिकने जे विशेष भक्तियोग्य रहस्यभूत थापना कुल छे, ते कुलमांहे निष्कारणे प्रवेश करे, तथा " नित्यप्रत्ये तमने एटलुं देइशुं तमे नित्य आवजो" एवी रीतनी जे निमंत्रणा करे तेनी पासे ते पिंड लीये तेने नित्य पिंम कहीये. तथा भाजनमांहेथी वापर्या विना उदन भक्तादिकनी शिखा उपरितन भाग लक्षण लीये, तेने अग्रपिंम कहिये. केटलाएक एम कहे छे के कारण विना प्रधान सरस आहार लीये तेने अग्रपिंम कहिये. तथा बहेंतालीश दोष आहारना न राखे, वारंवार आहार लीये तथा जमणवार, विवाह अने प्राहुणामां संखमि जोतो फरे,

आहारनी लालचे मुखे कहे. तिहां निमित्त दोष न होय, सूजतो होय ते माटे. तथा सूर्य आथमता उगताथी मांभी जमे, मांभलीये आहार न करे, सन्निधि राखे, पोतानी निश्राये औषधादिक अलगु गृहस्थने घरे मूकावे, द्रव्यादिक सहित विचरे, तथा ज्ञान द्रव्यादिक मिषे करी स्वनिश्राये ज्ञानादि भंभारनां नाम लेई पुस्तकादि संग्रहे, द्रव्यादि सहित विचरे, मुखे कहे अमे निर्ग्रंथ छैये, पूर्व साधु समान गर्व राखे. इत्यादिक अनेक प्रकारे साधु लक्षणथी विपरीत होय ते देश पासत्थो जाणवो.

तथा जे सर्वथा ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी अलगो रहे, केवल लिंगधारी, वेषविंडबक, गृहस्थाचारधारी होय, ते सर्वथी पासत्थो जाणवो.

बीजो जे क्रियामार्गने विषे शिथिलता करे, अथवा खेद पामे तेने उस्सन्नो कहीये; तेना बे भेद छे. एक देशथी अवसन्नो अने

बीजो सर्वथी अवसन्नो. तिहां जे आवश्यक, प्रतिक्रमण, देववंदनादि, सज्जाय ते पठन पाठनादि, पमिलेहण, मुखवस्त्रिका, वस्त्रपात्रादि, ज्ञिक्षा ते गोचरी कालादि, ध्यान ते धर्मध्यानादि, अन्नकार्थ ते तप नियम अज्ञिग्रहादि, आगमन ते बाहेरथी उपाश्रयमां प्रवेशलक्षण, निसीहिया ते पग पुंजवादि, निगमन ते प्रयोजन विना उपाश्रयथी बाहेर निकलवा लक्षण, स्थान ते कायोत्सर्गादि, निषीदन ते बेसवुं. तुयट्टण ते त्वग्वर्तन एटले शयन इत्यादिक, दशविध चक्रवाल साधु समाचारी, तथा उंघ पद विज्ञाग समाचारी प्रमुख विधि संयुक्त न करे, अथवा उंठी अधिकी करे अथवा कषाय दंडक सहित करे, अथवा राजवेठनी पेरे करे, ज्ञय मानीने करे, तथा गुर्वादिकना वचन सांज्ञली डुमणां थइने वचन खंमन करे, आक्रोश करे, इत्यादिक लक्षणे करी देश अवसन्नो जाणवो.

अने सर्वथकी असवन्नो तो चोमासा विना शेषकाळे पाट, बाजोठ, निष्कारण संथारे, सेवे, स्थापनापिंम जमे, संथारो पाथर्यो राखे, प्राभृतिकादि दोष जमे. इत्यादिक लक्षणे सर्व अवसन्नो जाणवो.

त्रीजो जेनुं कुत्सित, निंदनीय मावुं शील एटले आचार होय, तेने कुशील कहीये. तेना त्रण भेद छे. ज्ञानकुशील, दर्शनकुशील अने चारित्रकुशील, तिहां ज्ञानकुशील ते अकाल, अविनय, अबहुमान, गुरुनिन्हवता, योग उपधानहीन सूत्र, अर्थ अने तदुभय हीन, इत्यादिक आशातना युक्त थको ज्ञान भणे तथा आजीविकाहेते पठन पाठन संभलाववुं, लखवुं, लखाववुं, भंमार कराववा, नंदी समारवादि स्वार्थना उपदेश देवा, तथा आजीविका हेते धर्मकथा कहे, भणे, घर घर धर्म संभलाववा जाय, पोताना थवाने हेते स्त्रीबालकादिकने भणावे, अनेरा ज्ञानना भंमार उलवे, ज्ञानने

उंलवे, लखवा लखाववां, क्रयविक्रय पुस्तकादिकोनो करे, करावे, इत्यादिक लक्षणे ज्ञानकुशील जाणवो.

बीजो दर्शनकुशील ते शंका कांक्षा विचिकित्सा व्यापन्न, दर्शननिन्हव, अहाछंदा, कुशीलिया वेषविडंबकादिक साथे परिचय करे, एटले तेनी साथे आलाप संलाप पठनादिक करे, ते दर्शनकुशील जाणवो.

त्रीजो चारित्रकुशील ते ज्योतिष, निमित्त, अक्षरकर्म, यंत्र, मंत्र, भूत कर्म, बलिपिंड, उजोणी, दानादि, सौभाग्य दौर्भाग्यकारी, जडी, मूली, विद्यारोहणादिक, पादलेप, आंख अंजन, चूर्ण, स्वप्नविद्या, चिपुटीदान प्रमुख, अतीत अनागत वर्त्तमान निमित्तकथन, पोतानी जाति कुल विज्ञानादिक स्वार्थकार्यें प्रकाश करे. नख, केश, शरीर, शोभा करे, वस्त्र पात्र दंडादिक बहु मूल्यवाळां सुंदर सुकोमलनी वांछा करे, शिष्यादिक परिग्रहनी विशेष तो-

व्रता धरे, निष्कारण अपवाद पद सङ्क्षण मार्ग प्रकाशे, तथा सेवे, इत्यादिक लक्षणे चारित्र-कुशील जाणवो.

चोथो संसक्त, ते पासत्था अथवा संवि-ज्ञादिक जन जेवानी साथे मले त्यां तेवो थइ प्रवर्त्ते, अथवा मूलोत्तर गुण दोष सर्व एकठा प्रवर्त्तावे, जेम गायनी आगल सुंमलो मूक्यो होय तेमां सरस, नीरस, कपाशिया, खोल, घृत, दुग्धादिक एकठुं मेल्युं होय तो ते सर्व-ने एकठांज खाइ जाय पण तेनुं विवेचन न करे; तेम ए पण गुण अने दोष सर्वने एकठा प्रवर्त्तावी देखाडे तेने संसक्तो कहीये. ते एक संक्लिष्टचित संसक्तो अने बीजो असंक्लिष्ट चि-त्तसंसक्तो एवा बे भेदे जाणवो.

तिहां जे प्राणातिपातादिक पांच आश्रवनो सेवनार, ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव ए त्रण गारवे करी सहित, स्त्रीगृहादिक सेव-नने विषे प्रसक्त, अपध्यानशील, परगुणमत्सरी,

इत्यादि गुणयुक्त ते संक्लिष्ट चित्तसंसक्तो जाणवो. तथा पोताना आत्माने जेवारे जेवारे प्रसंग मले ते वारे तेवो थाय एटले प्रियधर्मी साधु मले ते वारे साधुना आचार पाले अने अप्रियधर्मी पासन्नो मले तेवारे तेवो थाय, लिंबूना पाणीनी पेरे तद्रूप थइ जाय; ते असंक्लिष्टचित्तसंसक्तो जाणवो. इति. ॥

पाचमो यथाछंदो ते यथा रुचिये प्रवर्ते यथा तथा लवे, उत्सूत्र न्नाषे, पोताना स्वार्थना उपदेश आपे, स्वमति विकल्पित करे, परजातिने विषे प्रवर्त्ते, पारकी तांत करे, उपकारी धर्माचार्यादिकनी हेलना करे, आचार्य उपाध्यायना अवर्णवाद बोले, जेनाथी ज्ञानादिक पामे तेवा वहुश्रुतनी निंदा करे, गारव प्रतिबंधि होय, कारणविना विगय खाय, इत्यादक अनेक न्नेदे यथाछंदो जाणवो. ए पांचेनां विशेष लक्षण श्री प्रवचनसारोद्धारवृत्ति तथा आवश्यकवृत्ति तथा उपदेशमालावृत्ति प्र-

मुख ग्रंथोथी जाणवा. ए पांचेने अवंदनीय जाणवा. एमने वांदवाथी कर्मनिर्जरा न थाय, केवल क्लेश अने कर्मबंध उपजे तथापि ए कहेलां लक्षणवालो जो ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना सहाय कारणे सेव्यो होय तो वंदनीय जाणवो, जे माटे श्री आगममांहे कह्युं वे के पासञादिक चारित्रना असंन्नवी होय पण दर्शनना असंन्नवी न होय ते कारणे ते सेव्य जाणवो, पण इहां तो चारित्रीयो वंदनीय कह्यो वे ते अधिकार माटे चारित्रवंत ते वंद्य वे. अन्यथा जो अचारित्रीयाने वंद्य कहीये तो जेटला तेना प्रमादनां स्थानक वे ते सर्व अनुमोदनीय थाय तेथी तेने वांदता थको प्रवचन बाधाकारी थाय. ए रीते वांदणां देवाने पासत्थादिक पांच अयोग्य तेमनुं त्रीजुं द्वार कह्युं. उत्तर बोल पन्नर थया ॥ १२ ॥

हवे पांच वांदवाने योग्य तेमनुं चोथुं द्वार कहे वे.

आयरिय उवज्झाए, पवत्ति थेरे तहेव रा-

यणिए ॥ किइकम्म निज्जरठा, कायव्व–मिमेसि पंचएहं ॥ १३ ॥ दारं ॥ ४ ॥

अर्थ–पहेला ज्ञानादिक पांच आचारे करी युक्त ते (आयरिय के०) श्री आचार्य कहीये, बीजा (उवज्झाए के०) श्री उपाध्यायजी, त्रीजा जे तप संयमने विषे प्रवर्त्तावे, गछनी चिंता करे ते (पवत्ति के०) प्रवर्त्तक कहीये, चोथा जे चारित्रथी पमता होय तेने प्रतिबोध आपीने पाठा ठेकाणे आणे तेने (थेरे के०) थिविर कहीये (तहेव के०) तथैव एटले तेमज वली पांचमा गछने अर्थे क्षेत्र जोवा माटे विहार करे, सूत्र अर्थना जाण तेने (रायणिए के०) रत्नाधिक–गणाधिप कहीये,-(इमेसि पंचएहं के०) ए कह्या जे आचार्यादि पांच जण तेने (किइकम्म के०) कृतिकर्म एटले वांदणानुं कर्म (कायव्वं के०) करवुं एटले वांदणां देवां ते केवल (निज्जरठा के०) कर्मनिर्ज्जराने अर्थे जाणवुं ॥ १३ ॥ ए आचा-

र्यादिक पांचनुं कांइक विशेष स्वरूप नीचे लखीये बैये.

आचार्य ते सूत्र अने अर्थ उन्नयना वेत्ता, प्रशस्त समस्त लक्षणे लक्षित, प्रतिरूपादि गुणयुक्त शरीर होय, जाति कुल गांन्नीर्य धैर्यादि अनेक गुणमणियुक्त, आठ प्रकारनी गणिसंपदाये करी युक्त, पंचाचार पालक, पलाववाने समर्थ, बत्रीश बत्रीशी गुणे करी बिराजमान, आर्य पुरुषे सेववा योग्य, गछमुलस्तंन्नन्नूत गछचिंतारहित अर्थन्नाषी, एटले जेमां गछचिंता न उपजे एवा अर्थ न्नाषे एवा गुणयुक्त ते आचार्य जाणवा.

तथा उपाध्याय ते जेनी पासे अगीयार अंग, बार उपांग, चरणसित्तिरी, करणसित्तिरी न्नणीये, आचार्यने युवराज समान, ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप रत्नत्रयी युक्त, सूत्र अर्थना जाण, आचार्यने हितचिंतक, ते उपाध्याय.

तथा प्रवर्त्तक ते यथोचित प्रशस्त योग

जे तप संयम तेने विषे साधुसमुदायने प्रवर्त्तावे, गच्छने योगक्षेम करवाने योग्यतानी संभाल करनार जाणवा.

तथा थिविर ते ज्ञानादिकगुणोने विषे सीदाता साधुने इहलोक तथा परलोकना अपाय दृष्टांत देखाडी संयममार्गमां स्थिर करे ते स्थविर त्रण प्रकारे छे. एक साठवर्षना ते वयःस्थविर, बीजा वीश वरस दीक्षापर्याय जेने थयो होय ते पर्यायस्थविर, त्रीजा जे निशीथादिक छेदग्रंथना रहस्य जाणे, जघन्यथी समवायांगादि श्रुत जाणे, ते श्रुत स्थविर, पण इहां तो जेने आचार्यादिके स्थविर कीधा होय ते स्थविर जाणवा.

तथा रत्नाधिक ते गच्छने कार्ये शिष्य उपधि प्रमुख लाभने अर्थे विहारकरणशीलवाळा सूत्रार्थवेत्ता; एनुं गणावच्छेदक एवुं पण नाम कहीये. एवा गुणवंत ते पर्याये ज्येष्ठ अथवा लघु होय तो पण तेने रत्नाधिक कहीये. एटले

पांच वंदनिकनुं चोथुं द्वार थयुं. उत्तर बोल वीश थया ॥

हवे चार जण पासे वांदणां न देवराववां तेनुं पांचमुं द्वार तथा चार जण पासे प्रायः वांदणां देवराववां तेनुं छठुं द्वार,

माय पिअ जिठभाया, अजमावि तहेव सव्वरायणिए ॥ किइकम्म न कारिज्जा, चउसमणाई कुणंति पुणो ॥ १४ ॥ दारं ॥ ५ ॥ ६ ॥

अर्थ—एक (माय० के) पोतानी माता, बीजो (पिअ के०) पोतानो पिता, त्रीजो (जिठभाया के०) पोतानो ज्येष्ठ भाइ एटले मोहोटो भाइ, चोथो (अजमावि के०) वयादिके लघु होय एटले वय प्रमुखे तो यद्यपि पोताथी न्हानो होय तो पण (तहेव के०) तेमज ए त्रणेनी परे ते (सव्वरायणिए के०) सर्व रत्नाधिक एटले सघला पर्याये करी ज्येष्ठ होय ज्ञान, दर्शन अने चारित्रे करी अधिक होय ए चारनी पासे प्रायः (किइकम्म के०)

वांदणां देवराववानुं (न कारिज्ञा के०) न करावे. ए विधि साधुने जाणवो, अने गृहस्थ पासे तो वंदन देवरावे. ए पांचमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल चोवीश थया ॥

तथा (चउसमणाई के०) चार श्रमणादिक एटले साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका ए चार जण ते कृतिकर्मने (पुणो के०) वली (कुणंति के०) करे एटले ए चार जन वांदणां आपे. ए छठुं वांदणां देवा योग्य चार जण तेनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल अठ्ठावीश थया ॥

हवे पांच स्थानके वांदणां न देवां, तेनुं सातमुं द्वार कहे छे.

वक्खित्त पराहुत्ते, पमत्ते मा कयाइ वंदिज्जा ॥ आहारं नीहारं, कुणमाणे काउ कामे अ ॥ १५ ॥ दारं ॥ ७ ॥

अर्थ—एक (वक्खित्त के०) व्याक्षिप्त गुरुथके एटले जेवारे धर्मकथा करवामां व्यग्रचित्त होय, बीजो कार्यादिके करीने (पराहुत्ते

के०) पराङ् मुख होय एटले सन्मुख बेठा न होय पण उपरांठा बेठा होय, त्रीजुं (पमत्ते के०) प्रमादी थका होय एटले क्रोधादिके अथवा संथारवादिके प्रमाद सेवता होय, निद्रालु थका होय, चोथुं (आहारं के०) आहार पांचमुं (नीहारं के०) नीहार एटले लघुनीति अथवा वडीनीति प्रत्ये (कुणमाणे के०) करता होय, अथवा (काउ के०) करवानी (कामे के०) कामना एटले वांछना करता होय (अ के०) वली करवा जता होय एटले स्थानके (कयाइ के०) केवारे पण गुरुने (मा वंदिज्जा के०) वांदवा नही. अहीं माशब्द निषेधवाचक छे ॥ १५ ॥ ए सातमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल तेत्रीश थया ॥ ३३ ॥

हवे चार स्थानके वांदणां देवां, तेनुं आठमुं द्वार कहे छे.

पसंते आसणछे अ, उवसंते उवठ्ठिए ॥

अणुन्नवि तु मेहावी, किइकम्मं पउंजई ॥१६॥

॥ दारं ॥ ८ ॥

अर्थ—एक (पसंते के०) प्रशांतचित्त एटले व्याक्षेपरहित गुरु होय, बीजुं (आसणत्थे के०) आसनस्थ एटले पोताने आसने बेठा होय, (अ के०) वली त्रीजुं (उवसंते के०) उपशांतचित्त एटले क्रोधादिके रहित होय, चोथुं (उवट्ठिए के) उपस्थित होय एटले छंदेण इत्यादिक कहेवाने सन्मुख उजमाल थया होय, एवा गुरु आदिकने वांदणां देवानी (अणुन्नवि के०) अनुज्ञा मागीने (तु के०) वली वांदणां देवाना विधिना जाण एवा (मेहावी के०) मेधावी एटले पंमितजनो ते (किइकम्मं के०) कृतिकर्म एटले वांदणां देवा प्रत्ये (पउंजई के०) प्रयुंजे एटले उद्यम करे ॥ १६ ॥ ए आठमुं द्वार थयुं, उत्तर बोल साडत्रीश थया ॥

हवे आठ कारणे वांदणां देवां, तेनुं नवमुं द्वार कहे छे.

पडिकमणे सज्झाए, काउस्सग्गा–वराह पाहुणए ॥ आलोयणसंवरणे, उत्तमठे य वंदणयं ॥ १७ ॥ दारं ॥ ए ॥

अर्थ–एक (पडिकमणे के०) प्रतिक्रमणने विषे सामान्य प्रकारे वांदणां देवाय, बीजा (सज्झाए के०) स्वाध्याय–वाचनादिलक्षण तथा सज्झाय पढाववाने विषे विधि वांदणां देवाय, त्रीजा (काउस्सग्ग के०) पच्चरकाण करवाना कायोत्सर्गने विषे एटले आचाम्लादि योगादि पारणे परिमित विगय विसर्जामगी विगयपरिभोगनी आज्ञा रूपे वांदणां देवाय, चोथा (अवराह के०) अपराध एटले गुरुनो विनय उलंघवा रूप पोतानो अपराध खमावतां वादणां देवाय, पांचमा (पाहुणए के०) प्राहुणो महोटो यति आवे तेवारे तेमने वांदणां देवाय एटले महोटाना समागमे वांदणां देवाय.

छठा गुरुनी पासे (आलोयण के०) आलोचना लेवाने अर्थें एटले आलोचना विहारादि समाचारी पद भिन्न हुंते थके वांदणां देवाय, सातमा पच्चक्खाण करतां अथवा मासखमणादिक विशेष तपरूप (संवरणे के०) संवरने विषे वांदणां देवाय, आठमा (उत्तमठे के०) उत्तमार्थे एटले अंतसमये अनशन करवाने विषे संलेषणाने विषे (य के०) वली वांदणां देवाय, अथवा वांदवुं थाय. ए आठ कारणे (वंदणयं के०) वांदणां देवाय, तेनुं नवमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल पिस्तालीश थया ॥१७॥

हवे अवश्य साचववा माटे आवश्यक कहीये, ते वांदणां देतां पच्चीश आवश्यक सचवाय, तेनुं दशमुं द्वार कहे छे.

दोवणय–महाजाय, आवत्ता बार चउसिर तिगुत्तं ॥ दुपवेसिग निक्कमणं, पणवीसावसय किइकम्मे ॥ १८ ॥

अर्थ–(दोवणयं के०) बे अवनत वांद-

णाने विषे जाणवां एटले बे वार उपरितन शरीर भाग नमाडवो. तिहां एक तो जेवारे "इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए" एम कहीने नमे. तेवारे छंदेण-नो अणुजाणह एटले आज्ञा मागतो शरीरनो उपरितन भाग नमाडे त्यारे गुरु छंदेण कहे. ए एक अवनत थयुं, एम बीजी वार वांदणां देतां बीजुं अवनत थाय. ए बे अवनत रूप बे आवश्यक थयां.

तथा (अहाजाय के०) एक यथाजात एटले जे रूपे दीक्षानो जन्म थया हतो अर्थात् रजोहरण, मुहपत्ति चोलपट्टमात्रपणे श्रमण थयो हतो तेवीज मुद्राए हाथ जोडे अ-थवा योनिथी बालक निकलते जेम रचितकर-संपुट होय तेम करसंपुट कर्या हाथ जोडेलाने ललाटे लगाडे ते यथाजात कहीये, एम बे अ-वनत अने त्रीजुं यथाजात मली त्रण आव-श्यक थयां.

हवे शरीरना व्यापार रूप (बार के०) बार (आवत्ता के०) आवर्त्त सूत्राभिधान गर्भित कायव्यापार विशेष जाणवां. तेमां प्रथम वांदणे ७ आवर्त्त थाय, ते आवी रीते–प्रथम त्रण आवर्त्त तो "अहो" "कायं" "काय" ए बे बे अक्षरे नीपजे एटले पोताना हाथनां तलां बे उंधा गुरु चरणे लगाडे तथा उत्तान हाथे पोतानो ललाटदेश फरसे अने "अहो २ कायं ३ काय संफासं" कहेतो मस्तक नमाडे तेवार पछी "खमणिज्जोथी मांडीने वइक्कंतो" पर्यंत यावत् कर संपुटे कहीने वली त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना करे. तेमां एक अक्षर गुरु चरणे हाथ लगाडतां कहे, बीजो अक्षर उत्तान हाथे वचाले विशामा रूप कहे अने त्रीजो अक्षर ललाटदेशे हाथ लगाडतां कहे, जेम "ज त्ता भे" "ज व णि" "ज्जं च भे" एवा त्रण आवर्त्त त्रण त्रण अक्षरना करतो खामेमि खमासमणो कही बीजो वार मस्तक

नमाडे. ए रीते ए प्रथम वांदणे छ आवर्त्त थयां तेम वली बीजे वांदणे पण एज रीते छ आवर्त्त थाय, बे वार मली बार आवर्त्तरूप बार आवश्यक थाय. सर्व मली पंदर थयां. अहीं बेत्र अक्षरना आवर्तमां पहेलो अक्षर अनुदात्त अने बीजो अक्षर उदात्त बोलवानो छे अने त्रण अक्षरना आवर्तमां पहेलो अक्षर अनुदात्त बीजो स्वरित अने त्रीजो उदात्त बोलवानो छे.

तथा (चउसिर के०) चतुःशिरः एटले चार वार शिर नमाडवुं. तिहां पहेले वांदणे बे-वार मस्तक नमाडवुं अने बीजे वांदणे पण बे वार मस्तक नमाडवुं, मली चार वार शिर न-मन थाय, एवं उगणीश आवश्यक थयां.

तथा (तिगुत्तं के०) त्रण गुप्ति ते मन, व-चन अने काया ए त्रणने अन्य व्यापारथी गोपवी राखे, ए त्रणने द्रव्यथी तथा भावथी अयत्नाये न प्रवर्त्तावे, एवं बावीश आवश्यक थयां.

तथा (डुपवेस के०) द्विप्रवेश एटले बे वार

आवश्यके बे वार गुरुनी आज्ञा मागी अवग्रह मांहे प्रवेश करवा रूप बे आवश्यक अने (इग निरकमणं के०) एक वार अवग्रहथी बाहेर निकले एटले पहेले वांदणे आज्ञा मागी निसीहि कहेतो पग पुंजतो थको एकवार अवग्रह मांहे प्रवेश करे अने पछी आवस्सियाए कहेतो पाछल पुंजतो एकवार पहेले वांदणे अवग्रहथी बाहेर निकले, अने बीजा वांदणामां प्रवेश करे पण फरी पाछो बाहेर निकले नहि, माटे बे वार पेसवुं अने एकवार निकलवुं मली त्रण आवश्यक थयां. ते पूर्वोक्त बावीश साथे मेलवतां (पणवीसा के०) पच्चीश (आवसय के०) आवश्यक ते (किइकम्मे के०) कृतिकर्म एटले वांदणांने विषे थाय ॥ १८ ॥

किइकम्मंपि कुणंतो, न होइ किइकम्मनिज्जराभागी ॥ पणवीसामन्नयरं, साहू ठाणं विराहंतो ॥१९॥दारं॥१०॥

अर्थ—हवे ए (पणवीसां के०) पच्चीश

आवश्यक जे छे, तेमां (अन्नयरं के०) अनेरुं एक पण (ठाणं के०) स्थानक प्रत्ये (विराहंतो के०) विराधतो एवो जे (साहू के०) साधु तेमज साध्वी श्रावक, श्राविका होय, ते (किइकम्मंपि कुणंतो के०) कृतिकर्मने करतो छतो पण एटले वांदणां देतो छतो पण (किइकम्म के०) कृति कर्म थकी जे कर्मपरिशाटनरूप (निज्जरा के०) निर्जरा थाय तेनो (भागी के०) संविभागी (न होइ के०) न थाय एटले ते वांदणांनुं जे निर्जरा रूप फल, ते न पामे ॥ १ए ॥ ए दशमुं द्वार थयुं उत्तर बोल सित्तेर थया ॥

यंत्र स्थापना.

अवनत नमवुं	यथाजात मुद्रा.	आवर्त्त.	शिरो नमन.	गुप्ति.	प्रवेश.	निकलवुं.
२	१	१२	४	३	२	१

हवे मुहपत्तिनी पच्चीश पडिलेहणानुं
अगीयारमुं द्वार कहे छे.

दिठि–पडिलेह एगा, छ उद्धपप्फोड तिग

तिगंतरिआ ॥ अक्खोम पमज्जणया नव नव मुहपत्ति--पणवीसा ॥ २० ॥

अर्थ--प्रथम मुहपत्तिने पहेले पासे सूत्र अने बीजे पासे अर्थ तेनुं तत्त्व सम्यक् प्रकारे हृदयने विषे धरुं एम चिंतवीने मुहपत्ति उकेली तेना बेहु पासां सर्वत्र दृष्टिये करी जोवां ते (दिठिपडिलेह के०) दृष्टि पडिलेहणा (एगा के०) एक जाणवी. तेवार पछी (छ के०) छ (उड्डपप्फोड के०) उंचा पप्फोडा करवा एटले मुहपत्तिने फेरवी बे हाथे साहीने एकेका हाथे नचाववा रूप त्रण त्रण उंचा पप्फोडा करवा. तिहां डाबे हाथे करतां सम्यक्त्व मोहनीय, मिश्रमोहनीय अने मिथ्यात्वमोहनीय ए त्रण मोहनीय परिहरुं एम चिंतवीये. तथा जमणे हाथे करतां कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग, ए त्रण राग परिहरुं. एम चिंतवीये, ए छ खंखेरवा रूप छ पडिलेहणा थइ तेनी साथे प्रथमनी एक दृष्टि पडिलेहणा मेळवीये तेवारे सात थाय.

तेवार पछी (तिग के०) त्रण (अक्खोमा के०) अक्खोमा अने (तिग के०) त्रण (पमज्जणया के०) प्रमार्जना एटले पुंजवुं ते अनुक्रमे एक बीजा केमे त्रणवार (अंतरिआ के०)एकेकने अंतरे करवा एटले मुहपत्तिये एक पमवाली मुहपत्तिना त्रण वधूटक करी जमणा हाथनी अंगुलीना आंतरानी वचमां जरावीने त्रण अक्खोमा पसली जरीये तेम त्रणवार मुहपत्ति ऊंची राखी माबा हाथना तलाने अण लागते खंखेरीये पण हाथने तले लगामीये नहीं; पछी त्रण प्रमार्जना पशलीमांहेथी घसी काहाडीये एम एकेकने आतरे त्रण वार त्रण त्रण अक्खोमा करवा अने त्रण वार त्रण त्रण प्रमार्जना करवी. एवी रीते त्रण वार करतां (नव के०) नव अक्खोमा खंखेरवा रूप थाय. अने (नव के०) नव पक्खोमा प्रमार्जना एटले पुंजवा रूप थाय, मली अढार पमिलेहणा थाय, तेनी साथे पूर्वोक्त सात मेलवीये, तेवारे सर्व मली (मुहपत्ति के०) मु-

हपत्तिनी पमिलेहणा (पणवीसा के०) पच्चीश थाय ॥ २० ॥ हवे अढार पमिलेहणा करतां एकेका त्रिके शुं शुं मनमां चिंतवियें? ते कहे छे.

पहेला त्रण अख्कोमामां सुदेव, सुगुरु अने सुधर्म, ए त्रण तत्त्व आदरुं, पछी त्रण प्रमार्ज्जनामां कुदेव, कुगुरु अने कुधर्म, ए त्रण परिहरुं, बीजा त्रण अख्कोमामां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, ए त्रण आदरुं, पछी त्रण प्रमार्ज्जनामां ज्ञानविराधना, दर्शनविराधना अने चारित्रविराधना, ए त्रण परिहरुं, त्रीजा त्रण अख्कोडामां मनोगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रण गुप्ति आदरुं, पछी त्रण प्रमार्ज्जनामां मनोदंम, वचनदंम अने कायदंम ए त्रण दंम परिहरुं, एवी रीते मनमां चिंतववुं, ए क्रिया करवानी मुहपत्ति एक वेंत ने चार अंगुल आत्म प्रमाणनी जोइये अने रजोहरण तथा चरवलो बत्रीश अंगुलनो जोइये. तेमां चोवीश अंगुलनी दांमी अने आठ अंगुलनी दशी जोइये अथवा न्यु-

नाधिक करी होय तोपण सरवाले बत्रीश अं-गुल जोइये, ए पच्चीश पमिलेहणा स्त्री पुरुष बेहुए करवी. ए अगीयारमुं द्वार थयुं, अने उत्तर बोल पच्चाएुं थया ॥

हवे शरीरनी पच्चीश पमिलेहणानुं बारमुं द्वार कहे ठे.

पायाहिणेण तिअ तिअ, वामेअर बाहु सीस मुह हियए ॥ अंसुड्डाहो पिठे, चउ ठप्पय देह–पणवीसा ॥ २१ ॥

अर्थ–(पायाहिणेण के०) प्रदक्षिणाये एटले प्रदक्षिणावर्त्ते करी एक (वाम के०) माबे (बाहु के०) बाहुये अने बीजुं (इअर के०) इतर ते जमणे बाहुये तथा त्रीजुं (सीस के०) मस्तके, चोथुं (मुह के०) मुखे अने पांचमुं (हियए के०) हैयाने विषे ए पांच ठामे (तिअ तिअ के०) त्रण त्रण वार पमिलेहणा करवी एटले मुहपत्तिने वधूटकनी पेरे ग्रहण करीने वामज्ञुजादिक पांच स्थानके फेरववी ते-

वारे पन्नर पडिलेहण थाय, अने (अंसुद्धाहो के०) अंसुद्ध एटले बे खंन्नानी उपर अने ते बे खं-न्नानी अहो एटले नीचे काखमां (पिठ के०) पिठ एटले वांसानी बाजुये (चउ के०) चार पडिलेहण करवी एटले बे खंन्ना उपर अने बे काखने विषे. एमज (छप्पय के०) छ पडिलेहण बे पगनी उपर करवी, तेमां त्रण वाम पगे अने त्रण दक्षिण (जमणा) पगे करतां छ थाय, एवी रीते सर्व मली (देह के०) शरीरनी पडिलेहणा (पणवीसा के०) पच्चीश थाय ॥ २१ ॥

इहां यद्यपि श्रीआवश्यकवृत्ति तथा प्रवचनसारोद्धारादिके पडिलेहणानो विशेष विचार कह्यो नथी, तो पण इहां परंपराथी संप्रदाय समाचारीये स्त्रीनुं शरीर वस्त्रे आवृत होय माटे एने शरीरनी पडिलेहणा पच्चीशमांथी त्रण मस्तकनी, त्रण हृदयनी अने बे पासाना खंन्नानी चार, एवं दश पडिलेहणा न होय शेष पन्नर होय तथा वली साध्वीने तो उघाडे माथे क्रिया

करवानो व्यवहार ढे माटे तेने मस्तकनी त्रण पडिलेहणा होय, शेष सात न होय; बाकी अ-ढार पडिलेहणा होय.

ए पडिलेहणा जे ढे, ते यद्यपि जीवरक्षानी कारणज्ञूत ज्ञव्य जीवने ढे एम तीर्थंकरनी आ-ज्ञा ढे, तो पण मनरूप मांकमाने नियंत्रवा सारु बोल धारीये. ते यद्यपि आवश्यकवृत्ति तथा प्रव-चनसारोद्धारादि ग्रंथे कह्युं नथी, तोपण अल्प-मतिने मन स्थिर राखवा माटे " सुत्तत्र तत्त-दिठि " इत्यादि पांच गाथानुं कुलक कह्युं ढे, ते इहां वांदणामां अधिकार नथी तोपण ते पांच गाथानो अर्थ लखीये ढैये.

जमणा फेरथी मुहपत्तिने वधूटकनी पेरे ग्रहण करीने पडिलेहण करीये ते कहे ढे. डाबा हाथनी ज्ञुजाये त्रण वार पुंजिये त्यां हास्य, रति अने अरति, ए त्रण परिहरुं, एम चिंत-वीये. जमणा हाथनी भुजाए त्रण वार पुंजीये त्यां ज्ञय, शोक अने डुगंढा, ए त्रण परिहरुं,

एम चिंतवीये. मस्तक त्रण वार पुंजीये तेमां कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण माठी लेश्या छांडुं, एम चिंतविये. मुखनी त्रण पडिलेहण करीये त्यां ऋद्धिगारव, रसगारव अने शाता-गारव, ए त्रण परिहरुं, एम चिंतवीये. हृदयनी त्रण पडिलेहणा करीये त्यां मायाशल्य, नि-याणशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्य छांडुं, एम चिंतवीये. डाबा खंभा अने जमणा खंभानी नीचे उपर बे पासानी पडिलेहणा चार करीये त्यां क्रोध, मान, माया अने लोभ ए चार कषायने छांडुं, एम चींतवीये. डाबे जमणे पगे अनुक्रमे त्रण पडिलेहणा करीये, तिहां अनुक्रमे पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायु-काय, वनस्पतिकाय अने त्रसकाय ए छ काय जीवोनी रक्षा करुं, एम चींतवीये ॥

तथा वली पडिलेहणनो अधिकार छे माटे वस्त्र, पात्र, पाट, बाजोठ, पायावाला पाटला, पाटली, स्थापनाना डबा, ढांकणां, अने भाजन

प्रमुखनी पच्चीश पमिलेहण तथा कंदोरा, झांझा अने झांमीनी दश पमिलेहण तथा थापनानी तेर, पायानी तेर इत्यादिक सर्वे परंपरागते जाणवी ॥

आवस्सएसु जह जह, कुणइ पयत्तं अहीण–मइरित्तं ॥ तिविह–करणोवउत्तो, तह तह से निज्जरा होई ॥ २२ ॥

अर्थ–ए (आवस्सएसु के०) आवश्यकने विषे तथा मुहपत्ति अने शरीरनी पडिलेहणाने विषे (जहजह के०) जेम जेम उजमाल चित्त थको (पयत्तं के०) प्रयत्न एटले उद्यमप्रत्ये (अहीण के०) हीन नहि परंतु जेम कह्यो छे तेमज करे, पण तेथकी उंछो करे नही तेमज (अइरित्तं के०) अतिरिक्त ते तेथकी जूदो एटले जेम हीन न करे, तेम अधिक पण न करे एवी रीते भली बुद्धिये सहित थको (तिविहकरण के०) त्रिविध करण ते मन, वचन अने काया, ए त्रण करणे करी (उवउत्तो

के०) उपयुक्त थको एटले शुद्ध उपयोगी थयो थको एकाग्रचित्त ठतो (कुणइ के०) करे (त-हतह के०) तेम तेम (से के०) ते उद्यम करनार पुरुषने (निज्जरा होई के०) विशेषे कर्मोनी निर्ज्जरा थाय अने जो अविधिये प्र-तिलेखनादिक करे तो ते ठ कायनो विराधक कह्यो ठे. एटले पडिलेहणानुं बारमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल एकसो वीश थया ॥ २२ ॥

हवे चार गाथाये करी बत्रीश दोष त्यागवानुं तेरमुं द्वार कहे ठे.

दोस अणाढिअ थद्धिअ,–पविद्ध परिपिं-डिअं च ढोलगइं ॥ अंकुस कठ्ठरिंगिअ, मठ्ठुवत्तं मणपउठं ॥ २३ ॥ वेइयबद्ध ज्ञयंतं, ज्ञय गारव मित्त कारणा तिन्नं ॥ पडिणीय रुठ तज्जिअ– सढ हीलिअं विपलियचिअयं ॥२४॥ दिठमदिठं सिंगं, कर तम्मोअण अणिद्धणा-लिद्धं ॥ ऊणं उत्तर चूलिअ, मूअं ढढ्ढर चुड-लियं च ॥ २५ ॥ बत्तीसदोस–परिसुद्धं, किइ–

कम्मं जो पउंजई गुरूणं ॥ सो पावइ निव्वाणं, अचिरेण विमाणवासं वा ॥ २६ ॥ दारं ॥ १३ ॥

अर्थ—जे अनादर पणे संभ्रांत थको वांदे, ते पहेलो (अणाढ्यि के०) अनादृत (दोस के०) दोष. तथा जे जात्यादिके करी धीठो थको स्तब्धपणुं राखतो वांदे, अथवा द्रव्य भावादिक चउभंगीये करी स्तब्ध थको वांदे ते बीजो (थद्धिअ के०) स्तब्ध दोष, तथा जे वांदणां आपतो भाडुतनी पेरे तुरत नासे, अथवा वांदणां देतो अरहो परहो फरे ते त्रीजो (अपविद्ध के०) अपविद्ध दोष. तथा जे घणा साधु प्रत्ये एकज वांदणे वांदे अथवा आवर्त्त, व्यंजन, अने आलाप ए सर्व एकठा करे, ते चोथो (परिपिंडियं के०) परिपिंडित दोष. (च के०) वली जे तीडनी पेरे उछलतो एटले उपडी उपडी विसंष्ठुल वांदे, ते पांचमो (ढोलगइ के०) ढोलगति दोष. तथा जे अंकुशनी पेरे रजोहरणने बे हाथे ग्रहीने वांदे ते छठो (अंकुस के०) अंकुश दोष. तथा जे

काचबानी पेरे रिंगतो रिंगतो वांदे, ते सातमो (कब्रन्निरिंगिय के०) कब्रपरिंगित दोष. तथा जे उन्नो थइ बेसीने जलमांहेला माछलानी परे एकने वांदीने उतावलो बुपी फरी बीजाने वांदे, अथवा पाठ प्रब्रन्न करे अथवा रेचकावर्त्ते अनुलोम प्रतिलोम वांदे, ते आठमो (मब्रुवत्तं के०) मत्स्योद्धर्त्त दोष. तथा कोइ साधु पोताथी एकाद गुणे हीन होय ते दोषने मनमां चिंतवतो ईर्ष्या सहित थको वांदे, ते नवमो (मणपउट्ठं के०) मनःप्रदुष्ट दोष जाणवो ॥ २३ ॥

तथा जे बे ढींचणनी उपर तथा हेठे हाथ राखीने अथवा बे हाथ विचाले बे ढींचण राखीने अथवा बे हाथनी वचमां एक ढींचण राखीने अथवा खोले हाथ मूकीने वांदे, ते दशमो (वेइयबद्ध के०) वेदिकाबद्ध दोष जाणवो. तथा ए कांइक अमने न्नजशे एटले विद्यामंत्रादिक शीखवशे इत्यादिक लालचनी बुद्धिये वांदे, अथवा न ही वांदीश तो रीसे करशे एवुं जाणीने वांदे, ते

अगीयारमो (भयंतं के०) भजंत दोष जणवो. तथा एमने नही वांदीश तो मुजने गछादिकथी बाहिर काढी मूकशे, अथवा शापादिक आक्रोश करशे, इत्यादिक भये करी वांदे, ते बारमो (भय के०) भयदोष जाणवो. तथा जो हुं भली रीते वांदीश तो सर्व एम जाणशे जे ए सामाचारीमां कुशल छे, डाह्यो छे, विधिप्रविण छे, एवी रीते जाणपणाना गारवे करी वांदे, ते तेरमो (गारव के०) गारव दोष जाणवो. तथा एमनी साथे महारे पूर्वे मित्राइ छे, एवुं जाणी मित्रादिकनी अनुवृत्तिये वांदे, ते चौदमो (मित्त के०) मित्रदोष जाणवो. तथा जे ज्ञानदर्शनादिक कारण विना बीजा अन्य कारण जे वस्त्रादिक पदादिक मुजने देशे, एम उद्देशीने जे वांदे, ते पन्नरमो (कारण के०) कारण दोष जाणवो. तथा जे चोरना पेरे छानो रह्यो थको वांदे एटले परथी पोताना आत्माने छानो राखे, रखे कोइ मुजने उलखी लेशे तो माहारी लघुता थशे. एवी

रीते पोताने बुपावतो वांदे, ते सोलमो (तिन्नं के०) स्तैन्यदोष जाणवो. तथा आहारादिकनी वेलाये प्रत्यनिकपणे अनवसरे वांदे, ते सत्तरमो (पडिणीय के०) प्रत्यनिक दोष जाणवो. तथा क्रोधे धमधम्यो थको वंदना करे, अथवा क्रोधांतप्रत्ये वांदे, ते अढारमो (रुठ के०) रुष्टदोष जाणवो. तथा जे घणीये वार वांद्या, तो पण प्रसन्न थता नथी तेम कोप पण करता नथी काष्ठनी पेरे देखाय छे, एम तर्जना करतो वांदे, अथवा तर्जनी अंगुलियादिके तर्जना देतो थको वांदे, एटले कहे के एने रूषेथी शुं? अने तुठेथी पण शुं? एम तर्जतो थको वांदे, ते उंगणीशमो (तज्जिय के०) तर्जित दोष जाणवो. तथा जे मायादिक कपटे करी वांदे, अथवा ग्लानादिक व्यपदेश करी सम्यक् प्रकारे न वांदे, ते वीशमो (सढ के०) शठ दोष जाणवो. तथा हे गणि ! हे वाचक ! तमने वांदवाथी शुं फल थाय? एवी रीते जात्यादिकनी हेलना करतो थको

वांदे, ते एकवीशमो (हीलिअं के०) हीलितं दोष जाणवो. तथा अर्द्धां वांदणां देइने वचमां वली देशकथादिक विकथाउं करतो करतो अन्नि-माने वांदे, ते बावीशमो (विपलियचिअयं के०) विपलितचित्तकं एटले विपलितचित्त दोष जाणवो ॥ २४ ॥

जे मुंगो रही ढानो मानो बेसे, तने कोइ बीजो जाणी जाय जे आ ढानो बेसी रह्यो ढे, तो वांदे तथा कोइ अपरनुं वचमां अंतर ढते न वांदे, एम दीठुं अणदीठुं करे, एटले कोइये दीठुं, कोइये न दीठुं एम लाजतो थको अं-धारामां वांदणां आपे, ते त्रेवीशमो (दिठम-दिठं के०) दृष्टादृष्ट दोष जाणवो. तथा जे पोताना मस्तक ने एक देशे करी एटले मस्त-कनुं एक पासुं गुरुने पगे लगाके तथा मुद्रा-हीन पणे धर्मोपकरणादिक विपरीत पणे राख-तो ढतो वांदे, ते चोवीशमो (सिंगं के०) शृंग दोष जाणवो. तथा जे राजादिकना कर

वेठनी पेरे जाणीने वांदे, पण कर्म निर्ज्जराने अर्थे वांदे नही, ते पच्चीशमो (कर के०) कर दोष जाणवो. तथा जे गुरुने वांदणां दीधा विना छुटको नथी, केवारे एथी छुटशुं ! एम चिंतवतो वांदे, ते छवीशमो (तम्मोअ्रण के०) तन्मोचन दोष जाणवो. तथा सत्तावीशमा आश्लिष्टानाश्लिष्टदोषनी चउन्नंगी थाय ते आवी रीते के, हाथे करी रजोहरण अने मस्तक फरसे ए प्रथम न्नांगो ते शुद्ध जाणवो, तथा रजोहरणने हाथ लगाडे पण मस्तके हाथ न लगाडे, ए बीजो न्नांगो, तथा मस्तके हाथ लगाडे पण रजोहरणे हाथ न लगाडे ते त्रीजो न्नांगो, तथा रजोहरण अने मस्तक बेहुने हाथ फरसे नही, एटले लगाडे नहीं, आश्लेषे नहीं, ते चोथो न्नंग जाणवो. ए चार न्नांगामां प्रथम न्नांगो शुद्ध छे अने पाछला त्रण न्नांगा अशुद्ध दोषावतार जाणवा. ए त्रण न्नांगे करी वंदन करे ते सत्तावीशमो (अणिद्धणालिद्धं

के०) आश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष जाणवो. तथा जे आवश्यकादिके पाठ आलावा असंपूर्ण कहेतो थको वांदे, ते अठावीशमो (ऊणं के०) ऊण दोष जाणवो. तथा जे वांदणे वांदीने पछी महोटे शब्दे करी 'मत्थएण वंदामि' एम कहे, ते उंगणत्रीशमो (उत्तरचूलिअ के०) उत्तरचूलिका दोष जाणवो. तथा जे आलाप आवर्त्तादिकने मूकनी परे अणउच्चरतो वांदे, ते त्रीशमो (मूअं के०) मूकदोष जाणवो. तथा जे आलावाने अत्यंत महोटे स्वरे उच्चार करतो वांदे, ते एकत्रीशमो (ढड्ढर के०) ढड्ढर दोष जाणवो. तथा जे अंबुअडानी परे रजोहरण बेहक्रे ग्रहण करी रजोहरणने जमाम्तो थको वांदणां आपे, ते (च के०) वली बत्रीशमो (चुम्हलियं के०) चुम्हलिक दोष जाणवो. ॥ २५ ॥

ए पूर्वोक्त (बत्तीसदोस के०) बत्रीश दोष तेणे करीने रहित थको (परिसुद्धं के०)

परिशुद्ध निर्दोषपणे (किइकम्मं के०) कृतिकर्म जे वांदणां तेने (गुरूणं के०) गुरुना चरण प्रत्ये (जो के०) जे ज्नव्य प्राणी (पउंजई के०) प्रयुंजे, एटले आपे ढे (सो के०) ते प्राणी (अचिरेण के०) थोमा कालमां (निव्वाणं के०) निर्वाण एटले कर्मरूपदावानलनो उपशम जे मोक्त ते प्रत्ये (पावइ के०) पामे (वा के०) अथवा (विमाणवासं के०) वैमानिक देवपणाना वास प्रत्ये पामे ॥२६॥ एटले ए तेरमुं बत्रीश दोषनुं द्वार पूरुं थयुं, उत्तर बोल १५२ थया ॥

हवे वांदणां देतां छ गुण उपजे, तेनुं
चौदमुं द्वार कहे ढे.

इह ढच्च गुणा विणउ,-वयार माणाइ ज्नंग गुरुपूआ ॥ तिढयराण य आणा, सुअधम्मारा-हणा-किरिया ॥२७॥ दारं ॥१४॥

अर्थ-(इह के०) ए वांदणाने विषे (ढच्च के०) ढ वली (गुणा के०) गुण उपजे ते कहे ढे. तेमा एक तो (विणउवयार के०)विनयो-

पचार करवो ते गुण उपजे एटले जे विशेषे करी सर्वकर्मनो नाश करे तेने विनय कहीये. तेहिज उपचार एटले आराधवानो प्रकार जाणवो. बीजो (माणाइभंग के०) पोताना अभिमानादिकनो भंग थाय एटले पोताना माननुं गालवुं थाय. त्रीजो (गुरुपूआ के०) गुरु जे पूज्यजन तेमनी पूजा-सेवा-भक्तिनुं साचववुं थाय. चोथो समस्त कल्याणनुं मूल रूप एवी (तिब्बयराण य के०) श्रीतीर्थंकर देवनी (आणा के०) आज्ञा तेनुं आराधन थाय एटले आज्ञानुं पालवुं थाय केमके भगवंते विनय मूल धर्म कह्यो छे, तथा पांचमो (सुयधम्माराहणा के०) श्रुतधर्मनी आराधना थाय, केमके श्रुतज्ञान जे गुरु पासेथी भणवुं ते पण वंदन पूर्वक भणवुं कह्युं छे. तथा छठ्ठो गुण तो परंपराये एथी (अकिरिआ के०) अक्रियारूप फल एटले सिद्धपणुं पामीये ए छ गुण वांदणां देवाथी उपजे, तेनुं चौदमुं द्वार पूर्ण थयुं, उत्तर बोल १५८ थया.

हवे त्रण गाथाये करी गुरुस्थापनानुं पन्नरमुं द्वार कहे छे.

गुरुगुणजुत्तं तु गुरुं, ठाविज्जा अहव तत्थ अरकाइ ॥ अहवा नाणाइतिअं, ठविज्ज सक्खं गुरुअभावे ॥ २८ ॥ अक्खे वराडए वा, कट्ठे पुत्थे अ चित्तकम्मे अ ॥ सप्भावमसप्भावं, गुरुठवणा इत्तरावकहा ॥२९॥ गुरुविरहंमी ठवणा, गुरुवएसोवदंसणत्थं च ॥ जिणविरहंमी जिणबिं,-बसेवणा-मंतणं सहलं ॥ ३० ॥ दारं ॥१५॥

अर्थ-(गुरु के०) महोटा विशेष प्रतिरूपादि छत्रीश (गुणजुत्तं के०) गुणे करी युक्त एवा (तु के०) निश्चे (गुरुं के०) गुरुने (ठाविज्जा के०) स्थापन करीने तेनी आगल प्रतिक्रमणादि क्रिया करीये (अहवा के०) अथवा (सक्खं के०) साक्षात् पूर्वोक्त गुणयुक्त एवा (गुरुअभावे के०) गुरुनो अभाव छते (तत्थ के०) तत्र एटले ते गुरुने स्थानके (अरकाइ के०) अक्षादिक स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीये ते

अक्षादिक स्थापनाचार्य न होय तो (नाणाइ-तियं के०) ज्ञानादिक त्रण एटले एक ज्ञान, बीजुं दर्शन, त्रीजुं चारित्र, ए त्रणेना उपकरण जे पोथी नवकारवाली प्रमुख ठे तेने (ठविज्ज के०) स्थापीने तेनी आगल क्रिया करीये, परंतु अगुरुने विषे गुरुबुद्धि आणीने तेनी आगल क्रिया करवी नहीं. केमके आगममां अगुरुने विषे जे गुरुबुद्धि आणवी तेने अत्यंत आकरुं लोकोत्तर मिथ्यात्व कह्युं ठे ॥ २७ ॥

हवे अक्षादिक कया ते कहे छे. एक (अरके के०) अक्ष ते चंदणग (गोळ शंखाकृति)नी स्थापना जाणवी, तेना अन्नावे (वराडए के०) वराटके एटले त्रण लींटीना कोमानी स्थापना करवी, (वा के०) अथवा (कठे के०) काष्ठ ते मांमा मांमी प्रमुख चंदनादिकनी पाटी आदिकनी स्थापना करवी, (पुठे के०)-पुस्तकनी स्थापना करवी, (अ के०) वली तेना अन्नावे (चित्तकम्मे के०) चित्रकर्म ते गुरुनी

मूर्तिनां चित्राम–आलेख, अथवा गुरुनी काष्ठनी प्रतिमा. ए विषे श्रीअनुयोगद्वार सूत्रनो पाठ लखीये छीये, "से किं तं ठवणाणुसा जसां वा अक्खे वा वराडए वा कठ्ठकम्मे वा पोछकम्मे वा लेप्पकम्मे वा चित्तकम्मे वा गंथिकम्मे वा वेढिकम्मे वा पूरिकम्मे वा संघातिकम्मे वा एगेवा अणेगे वा सप्नावठ वा असप्नावठ वा ठवणा ठविज्जत्ति ॥ एवी रीते गुरुनी स्थापना करवी. ते बे प्रकारे जाणवी ते कहे छे. (सप्नावमसप्नावं के०) एक सद्भावस्थापना अने बीजी असद्भाव स्थापना, तिहां गुरुनी मूर्ति तथा प्रतिमादिकनी आकार सहित जे स्थापना ते सद्भाव स्थापना जाणवी, अने आकार विना अक्षादिकनी जे स्थापना करवी ते असद्भाव स्थापना जाणवी, वली (गुरुठवणा के०) गुरुनी स्थापना ते एक (इत्तर के०) इत्वर अने बीजी (यावकहा के०) यावत् कथिका, तेमा इत्वर ते थोडा काल लगे स्थापना रहे, जेम

नवकारवाली अने पुस्तकादिकनी जे स्थापना बे, ते स्थापना क्रिया करवाने वखते थापे छे, माटे ज्यां सुधी ते क्रिया करीये, तिहां सुधी ते स्थापना रहे, जो दृष्टि तिहांनी तिहा राखीये, तो रहे, नहीं तो वली फरी बीजो स्थापना स्थापवी पडे, ते इत्वर कालनी स्थापना जाणवी. अने बीजी यावत् कथिक स्थापना ते घणा काल पर्यंत रहे, ते प्रतिमादिक तथा अद्गादिकनी ब प्रकारनी स्थापना करीये ढोये. ए स्थापनानी आशातना पण गुर्वादिकनी पेरे टालवी ॥ २ए ॥

हवे स्थापना शा कारण माटे स्थापवी? ते कहे बे. जेवारे साक्षात् गुणवंत (गुरुविरहंमी के०) गुरुनो विरह एटले अन्नाव होय, तेवारे (गुरुवएसोवदंसणछं के०) गुरूपदेशोपदर्शनने अर्थे एटले गुरुनो उपदेश देखाडवाने माटे (ठवणा के०) स्थापना स्थापवी जोइये (च के०) वळी, इहां ज्नावार्थ ए बे जे, स्थापनानी आ-

गल क्रिया करता ते एवुं जाणे जे गुरुज मुजने आदेश आपे छे, ते म्हारे इछाकारि कही प्रमाण करवुं. केमके गुरुना अन्नावे जे धर्मानुष्ठान करवुं, ते शून्य न्नाव गणाय. हवे दृष्टांत कहे बे. जेम (जिणविरहंमी के०) हमणा श्रीजिनेश्वरनो विरह बतां (जिणबिंब के०) श्रीतीर्थंकरना बिंब एटले प्रतिमानी (सेवणा के०)सेवना करीने (आमंतणं के०) आमंत्रण करवुं. जे हे न्नगवंत! तमे मुजने संसार समुद्र थकी तारो, मोक्ष आपो इत्यादिक जे कहेवुं, ते (सहलं के०) सफल थाय बे. ए दृष्टांते इहा पण श्रीगुरुना विरहे गुरुनी स्थापना पण सफल होय छे. ए गुरु स्थापनाना एकज बोलनुं पन्नरमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल १५ए थया ॥ ३० ॥

हवे बे प्रकारना अवग्रहनुं सोलमुं द्वार कहे बे.

चउदिसि गुरुग्गहो इह, अहुठ तेरस करे सपरपके ॥ अणणुन्नायस्स सया, न कप्पए

तब पविसेउं ॥ ३१ ॥ दारं ॥ १६ ॥

अर्थ-(इह के०) ए श्रीजिनशासनमांहे (गुरुग्गहो के०) गुरुथकी अवग्रह (चउदिसि के०) चारे दिशाने विषे (सपरपक्खे के०) स्व अने परपक्ष आश्रयी अनुक्रमे केटलो केटलो होय? ते कहे छे. तिहां एक (अहुठ के०) साडा त्रण अने बीजो (तेरस के०) तेर (करे के०) हाथनो जाणवो. तेमां स्वपक्ष ते पोतामां साधु साधुमां अने बीजा श्रावक जाणवा. तथा परपक्ष ते साधु अने साध्वी तथा श्राविका जाणवी. तेमां साधु साधुने तथा श्रावकने मांहोमांहे साडा त्रण हाथ वेगलो अवग्रह होय अने गुर्वादिकथी साध्वी तथा श्राविकाने तेर हाथ वेगलो अवग्रह होय. तेमज साध्वी तथा श्राविकाने मांहोमांहे साडा त्रण हाथनो अवग्रह होय (तब के०) तेटला अवग्रहमांहे (अणणुन्नायस्स के०) गुरुनी अनुज्ञा लीधा विना (सया के०) सदा निरंतर (पविसेउं के०) प्रवेश करवाने

(न कप्पए के०) न कल्पे. ए बे अवग्रहनुं सोलमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल १६१ थया ॥३१॥

हवे वांदणांना सूत्रना अक्षरनी संख्यानुं सत्तरमुं द्वार तथा पदनी संख्यानुं अढारमुं द्वार कहे छे.

पण तिग बारस डुग तिग, चउरो उठा- ण पय इगुणतीसं ॥ गुणतीस सेस आव,-स्सयाइं सवपय अम्रवन्ना ॥३२॥ दारं ॥ १७ ॥ १८ ॥

अर्थ—प्रथम वंदनक सूत्रना अक्षर(२२६) छे. तेमां लघु अक्षर (२०१) छे, अने गुरु अक्षर तो इच्छामिथी मांडीने वोसिरामि पर्यंत पच्चीश छे, ते लखे छे;--च्छा ज्जा ग्ग ज्जो प्प क्कं त्ता ज्जं क्क क्क त्ती न्न च्छा क्क क्क क्क व्व व्व च्छो व्व म्मा क्क स्स क्क प्पा. ए पचीश अक्षर गुरु जाणवा एटले सत्तरमुं वंदनक सूत्रना अक्षरोनुं द्वार थयुं. उत्तर बोल (३०७) थया.

हवे अढारमुं वंदनक सूत्रना पदनी संख्यानुं द्वार, गाथाना अर्थ कहे छे. तिहां 'वि-

भत्तयंतं पदं' एटले विभक्ति जेना अंतमां होय तेने पद कहीये, ते इहां वंदनक सूत्रनां छ स्थानक मध्ये सर्व मली अट्ठावन पदनी संख्या छे, तिहां प्रथम स्थानकमां 'इच्छामि, खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहियाए,' ए (पण के०) पांच पद जाणवां.

तथा बीजा स्थानकमां अणुजाणह 'मे, मिउग्गहं,' ए (तिग के०) त्रण पद जाणवां, तथा त्रीजा स्थानक मध्ये ' निसीहि, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो, भे, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुभेण, भे, दिवसो, वइक्कंतो ' ए (बारस के०) बार पद जाणवां तथा चोथा स्थानकमां 'जत्ता, भे,' ए (दुग के०) बे पद जाणवां. तथा पांचमा स्थानकमां ' जवणिज्जं, च, भे,' ए (तिग के०) त्रण पद जाणवां, तथा छठा स्थानकमां ' खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कमं,' ए (चउरो के०) चार पद जाणवां, एम (छठाण के०) छ

(पय इगुणतीसं के०) उगण-
.णवा.

ा (सेस के०) शेष रह्यां जे (गुण-
्न के०) उगणत्रीश पद ते (आवस्सयाइं
के०) आवसिआएथी मांडीने वोसिरामि प-
र्यंत थाय, तेवारे (सव्व के०) सर्वे मलीने
(पय के०) पद (अडवन्ना के०) अठावन्न
थाय छे. हवे ए पाछला उगणत्रीश पद कही
देखाडे छे. 'आवसियाए पडिक्कमामि खमासम-
णाणं देवसियाए आसायणाए तित्तीसन्नयराए
जं किंचि मिछाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए
कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए
सव्वकालियाए सव्वमिछोवयाराए सव्वधम्माइ-
क्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कउ
तस्स खमासमणो पडिक्कमामि निंदामि गरिहा-
मि अप्पाणं वोसिरामि.' ए उगणत्रीश पद
थयां. आ ठेकाणे केटलाएक जंकिंचिमिछाए
ए एक पद माने छे तथा केटलाएक आव-

सियाए ए अनिष्ठित पद छे माटे नथी गणा-
ता. तेमाटे बहुश्रुत कहे ते प्रमाण जाणवुं. ए
अठावन पदनुं अढारमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल
४४५ थया ॥ ३२ ॥

हवे वांदणांना दायकना स्थानकनुं उंगणीशमुं
द्वार कहे छे.

इच्छाय अणुन्नवणा, अव्वाबाहं च जत्त ज-
वणा य ॥ अवराह--खामणावि य, वंदणदाय-
स्स छठाणा ॥ ३३ ॥ दारं ॥ १ए ॥

अर्थ–(इच्छाय के०) इच्छामि खमासमणो
वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए लगे पांच
पदनुं प्रथम स्थानक जाणवुं, तथा (अणुन्न-
वणा के०) अणुजाणह मे मिउग्गहं ए त्रण
पदनुं बीजुं स्थानक, तथा (अव्वाबाहं च के०)
अव्याबाध एटले निराबाधपणुं पूछवा अर्थे
'निसीहिथी मांमीने दिवसो वइक्कंतो' पर्यंत बार
पदोनुं त्रीजुं स्थानक जाणवुं, तथा (जत्त के०)
'जत्ताभे' ए बे पदोनुं चोथुं स्थानक, तथा (ज-

वणा य के०) जवणिज्जं च भे ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक, तथा (अवराहखामणाविय के०) अपराधनुं खमाववुं एटले खामेमि खमासमणो देवसियं वइक्कमं ए चार पदोनुं छठ्ठुं स्थानक जाणवुं. अपि च एटले वली ए (वंदणदायस्स के०) वांदणानो जे देवावालो तेना (छठ्ठाणा के०) छ स्थानक जाणवां. ॥ ३३ ॥ ए छ स्थानकनुं उंगणीशमुं द्वार थयुं ॥ उत्तर बोल ४५१ थया.

हवे ए स्थानकमां छ गुरु वचन होय तेनुं वीशमुं द्वार कहे छे.

छंदेणणुजाणामी, तहत्ति तुब्भंपि वट्टए एवं ॥ अहमवि खामेमि तुमं, वयणाइं वंदणरिहस्स ॥ ३४ ॥

अर्थ—जिहां इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए एटलो पाठ शिष्य कहे, तेवारे गुरु जो वांदणां देवरावे तो (छंदेण के०) छंदेण ए पाठ कहे, अने वांदणां न देवरावे

तो "तिविहेण" एवो पाठ कहे, ए प्रथम गुरुवचन जाणवुं, तथा 'अणुजाणह मे मिउग्गहं' ए पाठ शिष्य कहे, तवारे गुरु कहे (अणुजाणामी के०) आज्ञा आपुं बुं. ए बीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा निसीहि इत्यादिक जेवारे शिष्य कहे, ते वारे गुरु कहे (तहत्ति के०) तथेति ए त्रीजुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जेवारे जत्ता भे इत्यादि शिष्य कहे, तेवारे गुरु कहे (तुम्मंपि वट्टए के०) तमने पण वर्ते ढे ? ए चोथुं गुरुवचन जाणवुं, तथा जे वारे 'जवणिज्जं च भे' शिष्य कहे तेवारे गुरु कहे (एवं के०) एमज, तुं पूढे ढे तेमज. ए पांचमुं गुरुवचन जाणवुं. तथा जेवारे खामेमि खमासमणो शिष्य कहे, ते वारे गुरु कहे (अहमवि खामेमि तुमं के०) हुं पण खमावुं बुं तुम प्रत्ये. ए बहुं गुरुवचन जाणवुं. ए ब (वयणाइं के०) वचन ते (वंदण के०) वादणां देवा योग्य (अरिहस्स के०) आचार्यादिकनां जाणवां, एटले वीशमुं

ब गुरुना प्रतिवचननुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल ४५७ ॥ ३४ ॥

हवे त्रण गाथाये करी तेत्रीश आशातनानुं एकवीशमुं द्वार कहे बे. तिहां प्रथम आशातना शब्दनो अर्थ करे बे. जिहां ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेनो (आय के०) लाज्ञ थाय ते लाज्ञने (शातना के०) पामवुं--नाश करवो तेने आशातना कहिये, ते इहां शिष्यादिक जो अविनयथी प्रवर्त्तता होय तो गुरु आदिकनी आशातना करे, ते तेत्रीश प्रकारे बे तेनां नाम गाथाना अर्थथी कहे बे.

पुरउ पक्कासन्ने, गंता चिठण निसीअणायमणे ॥ आलोयण पमिसुणणे, पुव्वालवणे अ आलोए ॥ ३५ ॥ तह उवदंस निमंतण, खद्धायमणे तहा अपमिसुणणे ॥ खद्धत्ति य तबगए, किं तुम तज्जाय नो सुमणे ॥ ३६ ॥ नो सरसि कहं ग्नित्ता, परिसं न्नित्ता अणुठियाइ

कहे ॥ संथार--पायघट्टण, चिठ्ठु-च्च-समासणे आ-
वि ॥ ३७ ॥ दारं ॥ २१ ॥

अर्थ—प्रथम गुरुने (पुरउ के०) आगल चालतां शिष्यने विनयज्ञंगादिक लागे, माटे ए अकारणे आशातना थाय परंतु जो मार्गादिकनी विषमता होय अथवा गुरुने मार्ग देखाम्वा माटे जो गुरुथी आगल चालवुं पडे तो ते आशातना गणाय नही. बीजी (पख्क के०) गुरुने पडखे बेहु पासे गमन करे गुरुनी बराबर चाले तो आशातना थाय, त्रीजी (आसन्ने गंता के०) एमज गुरुने आसन्ने एटले अरूकतो गंता एटले चाले, पठवाडे ढूकडो चाले तो श्वास, ठींक, श्लेष्म, उध्रसादि दोष रूप आशातना थाय, एम ए त्रण आशातना जेटले ज्रूमिज्ञागे गुरुनी साथे चालतां थकां थाय, तेटलेज ज्रूमिज्ञागे गुरुनी पासे (चिठ्ठण के०) उज्ञा रहेवाथकी पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय, एम त्रण स्थानके गुरुनी

पासे (निसिअणा के०) बेसता थका पण पूर्वोक्त त्रण आशातना थाय, एवं नव थइ. द-शमी (आयमणे के०) आचमने एटले गुरुनी साथे उच्चार भूमिये गयां थकां शिष्य जो आचार्यथकी पहेला आचमन लीये अथवा गुरुनी पहेला चलु करे अथवा हाथपाणी लीये तो आशात-ना थाय. अगीयारमी उच्चारादिक बहिर्दिशी गुर्वादिक साथे आव्या पछी गमणागमणेथी जो गुरुथकी प्रथम (आलोयण के०) आलो-वे, तो आशातना थाय, बारमी गुर्वादिक व-डेरा तथा रत्नाधिक जे होय ते रात्रिये बो-लावे जे कोण सूतो छे ? कोण जागे छे ? एम वचन सांभलतो जागतो थको पण (अप-डिसुणणे के०) अण सांभलतानी पेरे पाछो प्रत्यु-त्तर नहीं आपे तो आशातना थाय, तेरमी गुरु आदिकने आलापवा-बोलाववा योग्य एवा कोइ श्रावकादिक आव्या होय अथवा आवेला जे तेने आवर्जवा माटे गुरु बोलाव्यानी (पुव्वाल-

वणे य के०) पूर्वेज पोते बोलावे तो आशातना थाय, (अ के०) वली चौदमी अशन पान खादिम स्वादिम ए चारे आहार रूप जे निक्षा आणी होय ते प्रथम कोइ बीजा शिष्यादिक आगल आलोईने पठी गुरु आगळ (आलोए के०) आलोचे तो आशातना थाय ॥ ३५ ॥

पन्नरमी (तह के०) तेमज वली अशनादिक चार जे लाव्या होय ते प्रथम बीजा यतिने देखामीने पठी गुरुने (उवदंस के०) देखाडे तो आशातना थाय, सोलमी तेमज अशनादिक चार लाव्या होय तेनी प्रथम बीजा यतिने निमंत्रणा करे के आ नात पाणी लेशो ? पठी गुरुने (निमंतण के०) निमंत्रणा करे तो आशातना थाय. सत्तरमी अशनादिक चार सूरि प्रमुख साथे भिक्षाये आणीने पठी गुर्वादिकने पूछ्या विना जेनी साथे पोतानुं मन माने तेने मधुर जाणीने (खद्ध के०) खवरावे तो आशातना लागे, अढारमी गुर्वा-

दिक तथा रत्नाधिक साथे जमतो थको (आ-
यमणे के०) अशनादिक स्निग्ध–सरस होय
ते पोतेज वावरे, ते आशातना जाणवी. यदुक्तं
दशाश्रुतस्कंधसूत्रे ॥ सेसेहे असणं वा राइणिहिं-
सएहिं भुंजमाणे तब सेहे खद्धं खद्धं डायं डायं
उसढं उसढं मणुन्नं मणुन्नं मणामं मणामं नि-
द्धं निद्धं लुख्कं लुख्कं आहारित्ता हवइ आसायणा
सेहस्सत्ति ॥ (तहा के०) तेमज उगणीशमी
गुरु जे वारे साद करे तेवारे (अपडिसुणणे
के०) अप्रतिश्रवणे एटले अणसांभळतानी पे-
रे गुरुने पाछो जवाब आपे नही, ते आशातना
जाणवी. ए आशातना पूर्वे कही छे, परंतु ते
रात्रिसंबंधी शयन करवा पछीनी जाणवी, अ-
ने आ दिवससंबंधि धिठाइपणे तथा अना-
भोगपणे जाणवी, वीशमी रत्नाधिक तथा
गुर्वादिक जेवारे साद करे, तेवारे तेने (ख-
द्धत्तिअ के०) खरे एटले अत्यंत कर्कश
महोटे स्वरे करी प्रत्युत्तर घणा वाले, कहे के

अरे भाइ खाधो रे भाइ खाधो ! केम केरु मूकता नथी. इत्यादिक कठिन वचन बोले, अथवा आक्रोश गाढस्वरादिक गुरुने करावे, ते आशातना जाणवी, वली एकवीशमी गुर्वादिके बोलाव्यो थको (तत्थगए के०) त्यांथीज एटले पोताने ठेकाणे बेठो थकोज उत्तर आपे, परंतु गुरुनी समीपे आवीने जवाब न आपे तो आशातना थाय. बावीशमी वली गुर्वादिके बोलाव्यो थको कहे के (किं के०) शुं ठे ते ? (तुम के०) तमे कहो, कोण कहेवरावे छे, शुं कहो ठो ? इत्यादिक विनयहीन वचन बोले, ते आशातना जाणवी, तथा त्रेवीशमी वली गुर्वादिके बोलाव्यो थको कहे के तूंज कां नथी करतो ? एवी रीते पोताना पूज्यने एकवचनात बोलावे अथवा कहे के तमे कोण थका मुजने प्रेरणा करो छो ? इत्यादिक वचन कहे, ते आशातना जाणवी. चोवीशमी गुर्वादिक तथा रत्नाधिक शिष्यने कहे के तमे समर्थ

छो, पर्याये लघु छो, माटे वृद्धनुं तथा ग्लाननुं वेयावच्च करो, तेवारे ते पाछो जवाब आपे के जो तमेज लान्न जाणो छो, तो तमे पोते केम नथी करता ? तथा तमारो बीजो पण शिष्यादिकनो बहु परिवार छे ते शुं लान्ननो अर्थी नथी ? तो तेमनी पासे करावो. तेवारे वली गुर्वादिक तेने कहे के हे शिष्य ! तमे आलसु न थाउ. ते वारे वली गुरुने कहे के तमे ते शुं अमनेज दीठा छे ? एवी रीतनां वचन बोलीने गुरुनी (तज्जाय के०) तर्जना करे ते आशातना जाणवी. पच्चीशमी गुर्वादिक धर्मकथा कहेता होय तेवारे शिष्य डुमणो थाय परंतु (नोसुमणे के०) सुमनो न थाय, गुर्वादिकना गुणनी प्रशंसा करे नहीं अने कहे के तमे गृहस्थने विशेष प्रकारे समजावो छो, कहो छो, ते रीते अमने समजावता नथी अथवा गुर्वादिक तथा रत्नाधिकनो जे रागी होय तेने देखीने डुमणो थाय ते आशातना जाणवी ॥२६॥

छवीशमी जेवारे गुरु कथा करता होय ते वारे कहे के तमने ए अर्थ (नो सरसि के०) नथी सांज्ञरतो ? आ अमुकनो अर्थ एम न होय. एवी रीते कहेतां आशातना लागे. सत्तावीशमी गुर्वादिक कथा करता होय तेनी वचमां पोतानुं डाहापण जणाववाने अर्थे सभ्य लोकने कहे के ए कथा हुं तमने पछी समजावीश एम कही (कहं छित्ता के०) कथानो छेद करे, ते आशातना जाणवी, अठावीशमी गुरु कथा कहेता होय अने तेने सभ्य लोक हर्षवंत हृदयथी सांज्ञळतां होय ते सभ्य जनोने देखतां छतां गुरुने कहे के एवमी शी कथा कहो छो? हमणा ज्ञिक्षानो अवसर छे, ज्ञोजनवेला पोरिसि वेला छे, एम कही (परिसं ज्ञित्ता के०) पर्षदानो भंग करे तो आशातना थाय, उंगणत्रीशमी गुर्वादिक धर्मकथा कही रह्या पछी पर्षदा (अणुठियाइ के०) अणउठे थके तेज कथाने पोतानुं डाहापण जणाववाने हेतुये जे

गुरुये अर्थ कह्यो होय तेहिज अर्थ वली वि-
शेषथी विस्तारी चर्ची देखाडीने (कहे के०)
कहे तो आशातना थाय, त्रीशमी (संथा-
रपायघट्टण के०) गुरुनी शय्या तथा संथाराने
पोताना पादादिके करी संघट्टे, तेने खमावे
नही, तो आशातना थाय, इहां शय्या ते,
सर्वांग प्रमाण जाणवी, अने संथारो ते अढी
हाथ प्रमाण जाणवो, अथवा शय्या ते ऊनवगेरे
वस्त्रमय जाणवी, अने संथारो ते दर्न्नादिक
तृणमय जाणवो. एकत्रीशमी गुरुनी शय्या
संथारो तथा बेसणादिकने विषे (चिठ के०)
तिष्ठेत् एटले बेसे, अथवा आलोटे, असभ्य
शरीरने अवयवे करी फरसे, तो आशातना
थाय, बत्रीशमी गुरुथी (उच्च के०) उंचे आ-
सने बेसे, अथवा अधिक बेसणे बेसे तथा
गुरु जेवां वस्त्र पहेरे, अगर तेथकी अधिक मूल्य-
वालां वस्त्रादिकनो परिन्नोग करे, तो आशातना
थाय, तेत्रीशमी (समासणेआवि के०) गुरुने

समान आसने बेसे, अथवा गुरुनां जेवां व-स्त्रादि होय, तेवांज समान वस्त्रादिकनो परि-न्नोग करे तो आशातना थाय छे. इहां अपि-शब्द निश्चयवाचक छे, तथा गुरुने आगल अने पाछल तथा बे बाजुये बेसवादिकनी आशातना तो पूर्वे कहेली छे. ए तेत्रीश आ-शातना टालतो थको शिष्य विनयी कहेवाय, ते शिष्य वांदणां देवा देवरावववाने योग्य जा-णवो, ए प्रवचनपात्र थाय ए तेत्रीश आशात-नानुं एकवीशमुं द्वार संपूर्ण थयुं. सर्व बोल (४ए०) थया ॥ ३७ ॥

हवे बे विधिनुं बावीशमुं द्वार कहे छे. गुरु सामग्रीना अन्नावे तथा प्रतिक्रमण करणादि पर्याप्तिने अन्नावे प्रन्नाते अने संध्याये वांदणां बे देवां. ते बेहु विधिनो. अनुक्रम जाणवो, ते कहे छे.

इरिया कुसुमिणुस्सग्गो, चिश्वंदण पुत्ति वंदणा—लोयं ॥ वंदण खामण वंदण, संवर चछ

छोभ दु सज्झाउ ॥ ३० ॥

अर्थ–तिहां प्रथम प्रभातनो वंदनक विधि कहे छे. इहां पहेली १ (इरिया के०) इरियापथिकी प्रतिक्रमीने, पछी २ (कुसुमिणुस्सग्गो के०) कुसुमिण दुसुमिण उड्डावणी निमित्ते चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करे, ते वार पछी ३ आदेश मागीने, (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे, पछी ४ आदेश मागीने, (पुत्ति के०) मुहपत्ति पडिलेहे, पछी (वंदण के०) वांदणां बे आपे, ते वार पछी ६ (आलोयं के०) राइयं आलोए, तेवार पछी ७ (वंदण के०) बे वांदणां आपे. पछी ८ (खामण के०) अब्भुठ्ठिउंमि अब्भिंतर राइयं खामवुं, पछी ९ (वंदण के०) बेवार वांदणां आपे, पछी १० (संवर के०) पच्चक्काण करे, पछी ११ (चउछोभ के०) चार खमासमण पूर्वक भगवान् आचार्यादिक चारने थोभ वंदन करे, पछी १२ (दु सज्झाउ के०) सज्झाय संदिसावुं, सज्झाय

करुं, ए बे आदेश बे खमासमणे मागी सज्ञाय करे, ए प्रजात वंदनकविधि जाणवो ॥ ३७ ॥

हवे संध्यावंदनकविधि अथवा लघुप्रतिक्रमणविधि कहे छे.

इरिया चिइवंदण पु,-त्ति वंदणं चरिम वंदणालोयं ॥ वंदण खामण चउछो,-ज दिवसुस्सग्गो डुसज्ञाउं ॥ ३ए ॥ दारं ॥ २२ ॥

अर्थ-प्रथम १ (इरिया के०) इरियावहि पडिक्कमीने पछी आदेश मागी २ (चिइवंदण के०) चैत्यवंदन करे, तेवार पछी ३ (पुत्ति के०) मुहपत्ति पडिलेहे, पछी ४ (वंदणं के०) बे वांदणां दीये, ते दइने पछी ५ (चरिम के०) दिवसचरिम पच्चरकाण करे, पछी ६ (वंदण के०) बे वांदणां दइने ७ (आलोयं के०) देवसियं आलोए, पछी ८ (वंदण के०) बे वांदणां दइने, ए (खामण के०) देवसियं खामवुं करे, पछी १० (चउछोज के०) चार

खमासमण दइ भगवानादिक चारने वांदी पढी आदेश मागीने ११ (दिवसुस्सग्गो के०) देवसियपायछित्तविसोहणत्थं चार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी आदेश मागीने १२ (डुस-ष्ठाउं के०) बे खमासमणे सद्याय करे, एटले एक खमासमणे सद्याय संदिसावुं, बीजे ख-मासमणे सद्याय करुं.॥ इति संध्यावंदनकविधिः समाप्तः ॥ ए बावीशमुं द्वार प्राजातिकवंदन तथा संध्यावंदन मली बे विधिये करी बे प्रका-रनुं कह्युं, उत्तर जेद ४एश थया ॥ ३ए ॥

एयं किइकम्मविहिं, जुंजंता चरण-करण-माउत्ता ॥ साहू खवंति कम्मं, अणेगजवसं-चियमणंतं ॥ ४० ॥

अर्थ-(एयं के०) ए पूर्वे कही आव्या जे बोल, तेणे करी (किइकम्म के०) कृति-कर्म जे वांदणां, तेनो जे (विहिं के०) विधि जे व्यवहार ते प्रत्ये (जुंजंता के०) प्रयुंजतां थकां (चरणकरणं के०) चरणसित्तरी अने

करणसित्तरी तेना गुणे करी (आउत्ता के०) आयुक्त एटले सहित एवा (साहू के०) जे साधु निर्ग्रंथ चारित्रीया ते (अणेगभवसंचियं के०) अनेक भवनां संचित एटले कोटि जन्मनां उपार्जन करेलां अने जेनो (अणंतं के०) दुरंत विपाक छे एटले अनंता काल पर्यंत भोगवाय एवां अछेहपणे रहेनारां जे कर्म अथवा अनंत काळनां उपार्ज्जन करेलां एवां जे (कम्मं के०) कर्म छे ते कर्मों प्रत्ये तुरत शीघ्रपणे (खवंति के०) क्षपवी निराकरण करे छे, अर्थात् क्षय पमाडे छे ॥ ४० ॥

अप्पमइ–भवबोहढं, भासियं विवरियं च जमिह मए ॥ तं सोहंतु गीयछा, अणभिनिवेसी अमछरिणो ॥ ४१ ॥ इति ॥

अर्थ–आ वांदणांनो विचार ते (अप्पमइ के०) अल्प छे मति जेहनी एवा जे (भव के०) भव्यप्राणी तेमना (बोहढं के०) बोध ज्ञानने अर्थे (भासियं के०) भांख्यो परंतु

आवश्यक बृहद्वृत्त्यादिक ग्रंथने विषे एनो अत्यंत विस्तार छे त्यांथी विशेषे जोवुं, इहां संक्षेपथी कह्यो छे. तेमांहे जे अनाभोगे (विव-रिअं के०) विपरीतपणे (च के०) वली (जं के०) जे (इह के०) ए भाष्यमांहे (मए के०) महाराथी कहेवाणुं होय (तं के०) तेने वली (अणभिनिवेसी के०) अक-दाग्रही एटले हठवादरहित एवा अने (अ मच्छरिणो के०) मत्सरपणाना परिणामे रहित, गुणना रागी एवा जे (गीयत्था के०) गीतार्थ एटले गीतना अर्थ तेना जाण अर्थात् सूत्रा-र्थना जाण तथा निश्चय व्यवहारने विषे कुशल होय ते (सोहंतु के०) शोधजो, अर्थात् शुद्ध करजो. ए ४९२ बोले करी श्रीगुरुने वांदणां देवानो विधि कह्यो ॥

गुरुवंदनभाष्यार्थं,विवृण्वता यन्मयार्जितं सुकृतम् सज्ज्ञानविमलविजयी, तेनास्तु सदा सुदृग् लोकः

इतिश्री गुरुवंदनक भाष्य अर्थ सहित संपूर्ण॥४२॥

हवे एवा गुणवंत गुरुप्रत्ये वांदणां देइने तेमना मुखथी यथाशक्तिये पच्चरकाण लेवुं, केमके 'ज्ञानस्य फलं विरतिः' एवुं वचन ढे. वली आगम मध्ये कह्युं छे के, "पच्चरकाणेणं न्नंते जीवे किं जणई? पच्चरकाणेण य आसवदाराइ रुंधेइत्ति" एटले 'हे भगवंत! पच्चखाणवडे जीवने शुं प्राप्त थाय? उत्तर पच्चखाणवडे आश्रवना द्वारो रोकाय ए प्रकारे.' तेमाटे पच्चरकाण करवानो महोटो लाज्ञ छे. ते पच्चरकाण शुं? अने ते केटला प्रकारनां पच्चरकाणो छे? इत्यादिक जाणवा माटे त्रीजुं पच्चरकाण न्नाष्य कहे ढे.



श्रीपच्चक्खाणभाष्यप्रारंभः

तिहां प्रथम पच्चक्खाणनां नव द्वार एक गाथाये करी कहे छे.

दस पच्चक्खाण चउविहि, आहार दुवीसगार अडुरुत्ता ॥ दस विगई तीस विगइ,--गय दुहभंगा छ सुद्धि फलं ॥ १ ॥

अर्थ–प्रथम (दसपच्चक्खाण के०) पच्चक्खाणना दश भेद छे, तेनुं द्वार कहेशे. बीजुं पच्चक्खाण करवाने विषे पाठ विशेषरूप (चउविहि के०) चार प्रकारनो विधि छे तेनुं द्वार कहेशे. त्रीजुं चार प्रकारना (आहार के०) आहारना स्वरूपनुं द्वार कहेशे, चोथुं पच्चक्खाणमां (अडुरुत्ता के०) अद्विरुक्त एटले बीजी वारनां अण उच्चरयां अर्थात् एकवार

कह्यां तेनां ते फरी जुदां जुदां पच्चक्खाणमां आवे, ते न लेवां एवा (डुवीसगार के०) बावीश आगारनुं द्वार कहेशे, पांचमुं (दसविगइ के०) दश विकृति एटले दश विगयनी संख्यानुं द्वार कहेशे, छठुं (तीसविगईगय के०) त्रीश विकृतिगत एटले छ मूल विगयना त्रीश निवीयातां थाय तेनी संख्यानुं द्वार कहेशे, सातमुं एक मूलगुण पच्चक्खाण तथा बीजुं उत्तरगुण पच्चक्खाण एम (डुहभंगा के०) बे प्रकारना भांगा पच्चक्खाणना थाय, तेनुं द्वार कहेशे. आठमुं पच्चक्खाणनी (छ सुद्धि के०) छ शुद्धिनुं स्वरूप निश्चयथी कहेवुं तेनुं द्वार कहेशे, नवमुं पच्चक्खाण कर्याथी इहलोक तथा परलोक मली बे ठेकाणे (फलं के०) फल थाय तेनुं द्वार कहेशे ॥ १ ॥ ए मूल नवद्वारनां नाम कह्यां. एनां उत्तरद्वार अहीं विवर्यां नथी, पण ग्रंथांतरे नेवुं कह्यां छे, अने अहीं पण सरवालो आपतां

नेवुं थाय छे, ते आगळ विस्तारे कहेशे.

इहां प्रथम पच्चक्खाण शब्दनो अर्थ करे छे. तिहां एक प्रति, बीजुं आ, अने त्रीजुं आख्यान, ए त्रण पद मलीने प्रत्याख्यान शब्द थयो छे, तेमां अविरतिपणानां स्वरूपप्रत्ये प्रति एटले प्रतिकूलपणे करी आ एटले आगार मर्यादाकरणस्वरूपे करी आख्यान एटले कहेवुं कथन करवुं ते छे जेने विषे, तेने प्रत्याख्यान कहिए.

अथवा प्रति एटले आत्मस्वरूप प्रत्ये आ एटले अभिव्यापीने करण एटले करवुं एटले अनाशंसारूप गुण आत्माने उपजे एम करे, तेनुं जे आख्यान एटले कथनरूप ते छे जेने विषे तेने प्रत्याख्यान कहीये.

अथवा (प्रति के०) परलोके (आ के०) क्रियायोगार्थे शुभाशुभ फल कथनरूप जेने विषे छे, तेने प्रत्याख्यान कहीये. एम घणां व्याख्यान छे.

ते प्रत्याख्यान एक मूलगुणरूप अने बीजुं उत्तरगुणरूप एवा बे भेदे छे. तेमां मूलगुणनुं पच्चक्खाण यतिने पंचमहाव्रतादि रूप छे अने उत्तरगुण प्रत्याख्यान तो यतिने पिंडविशुद्ध्यादिक छे तथा श्रावकने मूलगुण तो पांच अणुव्रतादिकनुं छे अने उत्तरगुण ते शिक्षाव्रतादिकनुं छे. तथा सामान्य प्रकारे जे अविरतिपणानुं प्रतिपक्ष ते सर्व पच्चक्खाण कहीये.

हवे प्रतिदिन उपयोगीपणा माटे उत्तरगुण प्रत्याख्यान दश प्रकारे होय, ते आ ग्रंथना

प्रथम द्वारना भेदरूप कहे छे.

अणागय-मइक्कंतं, कोडीसहियं नियंटि अणगारं॥ सागार निरवसेसं, परिमाणकडं सके अद्धा ॥ २ ॥

अर्थ–प्रथम जे कारण विशेषे आगलथी करे पण ते दिवसे न करी शके ते (अणागयं के०) अनागत पच्चक्खाण ते पर्युषणादिक पर्व आव्यानी पहेलांज एवुं विचारे जे गुरु, ग्लान,

शिष्य अने तपस्वी प्रमुखनुं वेयावच्च महारे करवुं पमशे, तेवारे व्याकुलताने लीधे महाराथी अष्टम्यादिक तपश्चर्या थइ शकशे नही, तो मने लाभनी हानि थशे; माटे ते पर्व आव्यानी पहेलांज गुरुपासे पच्चरकाण लइने तप करे ते अनागत भावी पच्चरकाण जाणवुं.

बीजुं (अइक्कंतं के०) अतिक्रान्त पच्चरकाण ते पूर्वोक्त रीते पर्युषणादिक पर्व अतिक्रम्या पछी तेहिज कार्यादिकने हेतुये जे पाछलथी अष्टम्यादिक तप गुरुपासे पच्चरकाण लइने करे, तेने अतिक्रांत--अतीत पच्चरकाण कहीये.

त्रीजुं (कोमीसहियं के०) कोटिसहित पच्चरकाण ते प्रभाते उपवास प्रमुख व्रत करीने वली बीजा दिवसना प्रभात समये पण तेहिज उपवासादिकनुं पच्चरकाण करे, एम छठादिकनी पण कोटि एटले संधि मेळवे एटले छठादि एक पच्चरकाण पूर्ण थयाने वखते बीजुं पच्चरकाण पच्चरके. एवा कोटिक्रमे जे तप करवुं, ते कोटि-

सहित तप अथवा नीवी, एकाशनादिकने विषे पच्चरकाण पारया पहेलां आंबिलादिक करवुं ते, एटले एकनो अंत अने बीजा पच्चरकाणनी आदि ते कोटिसहित पच्चरकाण जाणवुं.

चोथुं (नियंटि के०) नियंत्रित तप ते पुष्ट नीरोगी तथा ग्लानपणे होय तो पण एवुं चिंतवे जे अमुक दिवसे महारे अमुक छठ अठमादिक तप करवुं. पछी गमे तेवुं कारण उपजे तो पण ते निर्धारेला दिवसे ते तप अवश्य करे, पण मूके नही. एम नियतकाले ते पच्चरकाण चौदपूर्वी दशपूर्वी, जिनकल्पीने विषे प्रथम वज्रऋषभनाराच संहनने विषे हतुं. हमणां व्युछिन्न थयुं छे. थिविर पण ते वेलाये ते तप करता हता, परंतु हमणा ते पच्चरकाण नथी. ए नियंत्रित पच्चरकाण जाणवुं.

पांचमुं (अणागारं के०) अनांगार तप ते "अन्नत्थणाभोगेणं" तथा "सहसागारेणं" ए बे आगार तो सर्वत्र होयज छे, परंतु महत्तरा-

गारादिक आगार जे पच्चरकाणने विषे न होय,
ते आगार रहित पच्चरकाण कहीये. ए पण
पहेला संघयणनी साथे व्युछेद थयुं.

छहुं (सागार के०) आगारसहित ते म-
हत्तरागारादि आगारसहित पच्चरकाण करवुं,
ते आगार सहित पच्चरकाण जाणवुं.

सातमुं (निरवसेसं के०) निरवशेष तप
ते समस्त अशनादिक चार आहार वस्तु अने
अनाहार वस्तु प्रमुख सर्वनुं पच्चरकाण करीये,
चउविहार प्रमुख करीये, अनशन करिये ते नि-
रवशेष पच्चरकाण जाणवुं.

आठमुं (परिमाणकडं के०) परिमाण-
कृत तप पच्चरकाण ते दत्तीनी संख्या करे
तथा कवलनी संख्या करे तथा घरनी संख्या
करे, एटले दत्ती (जे वडे आहार वहोरावाय ते
कडछी वगेरे) नुं परिमाण, तेमज कोलीयानुं
परिमाण तथा घरनुं परिमाण जे भिक्षादिके
करवुं, अथवा मग अडद प्रमुख द्रव्यादिके जे

भिक्षानो परित्याग ते सर्व परिमाणकृत पच्च-
रकाण जाणवुं.

नवमुं (सके के०) सांकेतिक पच्चरकाण
ते इहां (केत के०) गृह तेणे करी जे सहित
वर्त्ते तेने गृहस्थ कहीये, ते संबंधी प्रायः ए
पच्चरकाण गृहस्थने होय अथवा (संकेत के०)
चिन्ह जे अंगुष्ठादिक तणे करी होय ते संकेत
कहेवाय एटले कोइ एक श्रावक पोरिसी आ-
दिक पच्चरकाण करीने बाहेर कोइ कामे अथ-
वा क्षेत्रादिके गयो होय तिहां पोरिसीनो काल
पूर्ण थयो अथवा घरमांज बेठो छे अने पोरि-
सीनो काल पूर्ण थयो छे, परंतु ज्ञोजन सामग्री
तैयार थइ नथी ते वखत विचार करे, जे ए-
टलो काल वचमां म्हारो अपच्चरकाणपणे रहे-
शे, ते श्रावकने योग्य नथी. एम चिंतवी पहेलुं
अंगुठसहिअं पच्चरकामि एटले जिहांसुधी मु-
ठीमां अंगुठो राखुं त्यांसुधी म्हारे पच्चरकाण-
नी सीमा छे; एमज बीजुं मुठसहियं पच्चरका-

मि एटले मुठी बांधी राखुं तिहां सुधी; त्रिजुं गंठसहियं पच्चक्खामि एटले गांठ बांधी राखुं तिहां सुधी; चोथुं घरसहिअं पच्चक्खामि एटले घेर जाउं त्यां सूधी; पांचमुं प्रस्वेदसहियं पच्च-क्खामि ते ज्यां सुधी अंगना परसेवानां बिंदु निक-ले, त्यां सुधी; छठुं उस्सासहियं पच्चक्खामि एटले श्वासोश्वास लउं (जीवुं) त्यां सुधी; सातमुं थिबुकसहियं पच्चक्खामि एटले स्तिबुक ते ज्यां सुधी पाणीनां बिंदूआ भाजनादिके तथा करा-दिक सूके तिहां पर्यंत जाणवुं; आठमुं जोइक्ख-सहियं पच्चक्खामि एटले ज्योतिष्क जे दीवा प्रमुखनी ज्योति रहे तिहां सुधी मारे पच्च-क्खाणनी सीमा छे एम संकेत करे. ए आठ प्रकारे नवमुं सांकेतिक पच्चक्खाण कहे-वाय छे. जे माटे कह्युं छे के--॥ अंगुठ मुठि गंठी, घर सेउ उस्सास थिबुग जोइक्खो ॥ पच्चक्खाण विचाले, किच्च मणन्निग्गहे सुचियं ॥ १ ॥ तथा कोइ पोरिसी आदि पच्चक्खाण

न करे अने केवल अभिग्रहज करे तो गांठ प्रमुख न छोडे त्यां लगे पच्चक्खाण तेने थाय, तेथी ए पच्चक्खाण जेम बीजा पच्चक्खाणोनी वचमां थाय छे, तेम अभिग्रहने विषे पण थाय छे. तथा साधुने पण कोइक स्थानके ज्यां सुधी मंडल्यादिके गुर्वादिक न आव्या होय त्यां लगे अथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय, तेवारे पण एं अभिग्रह संकेत पच्च-क्खाण थाय.

दशमुं (अद्धा के०) अद्धा ते काल, मु-हूर्त्त पौरुष्यादिक प्रमाणने पण उपचारथी जाणी लेवो. ते काल पच्चक्खाण जाणवुं ॥ २ ॥

हवे ए दश पच्चक्खाण कह्यां, तेमां छेहलुं अद्धा पच्चक्खाण कह्युं, तेना दश भेद छे, ते एक गाथाये करी कहे छे.

नवकारसहिअ पोरिसि, पुरिमड्ढ--गासणे-गठाणे अ ॥ आयंबिल अभत्तट्ठे, चरिमे अ अभिग्गहे विगई ॥ ३ ॥ दारं ॥ १ ॥

अर्थ—प्रथम (नवकारसहिअ के०) नवकारसहित एटले नवकार कहीने पारीये ते बे घमी प्रमाण नोकारसी पच्चख्खाण कहीये, बीजुं पहोर दिवससुधी पच्चख्खाण ते (पोरिसि के०) पोरिसि कहीयें, एमां साड्ढपोरिसी सार्द्ध एटले दोढ पहोरनुं पच्चख्खाण पण जाणवुं. त्रीजुं (पुरिमड्ढ के०) पुरिमार्द्ध, ते बे पहोर प्रमाणनुं पच्चख्खाण जाणवुं. चोथुं (एगासण के०)एकाशननुं पच्चक्काण(अ के०) अने पांचमुं (एगठाणे के०) एकलठाणुं.एटले जिहां एक हाथ अने मुख विना बीजुं अंग हाले नही ते; ए त्रणेनुं बे पहोर प्रमाण पच्चख्खाण जाणवुं. छठुं (आयंबिल के०) आयंबिल पच्चख्खाण. सातमुं (अभत्तठे के०) अभक्तार्थे एटले उपवासनुं पच्चख्खाण. आठमुं (चरिमेअ के०) दिवसचरिम अथवा भवचरिमादिरूप जाणवुं. नवमुं (अभिग्गहे के०) अभिग्रह पच्चख्खाण ते अमुक वस्तु तेवारेज खाउं जेवारे अमुक करुं ? इत्या-

दिक अभिग्रह करे ते. तथा दशमुं (विगई के०) विगई निविगइनुं पच्चख्खाण जाणवुं. ए दशे पच्चख्खाणोने कालनी मुख्यता छे, माटे अद्धा पच्चख्खाण कहीये ॥ ३ ॥

इहां शिष्य पूछे छे के पोरिसी प्रमुखने काल पच्चरकाण कह्युं ते खरुं पण नोकारसीनुं कालमान न कह्युं माटे नोकारसी जे छे, ते अभिग्रह पच्चरकाण कहेवाय पण काल पच्च-रकाण थइ शके नहीं ?

त्यां गुरु उत्तर कहे छे. नवकारसहियं एमां सहित शब्द आव्यो माटे सहित शब्दे कालप्रमाण जाणवुं, अने अल्प आगार छे माटे अल्प काल जाणवो.

तेवारे शिष्य पूछे छे के पोरिसी तो एक प्रहर काल प्रमाण छे माटे ए नवकारसीने विषे मुहूर्त्त इत्यादिक काल केम न लीधो ? केम के मुहूर्त्त इत्यादिक काल पण पोरिसीथी अल्प छे माटे बे घमीनुंज मान शा

वास्ते लीधुं ?

गुरु उत्तर कहे छे, के हे शिष्य ! तें कह्युं ते सत्य छे, परंतु सर्वथी स्तोक काल अद्धापच्चक्खाणनो एक मुहूर्त्तज छे, मुहूर्त्तद्धा अद्धा इति वचनात् तेमाटे एनुं एक मुहूर्त्तज कालमान जाणवुं.

हवे ए नवकारसी पच्चक्खाण, सूर्योदय पहेलांज करवुं अने नमस्कारे करी पारवुं, अन्यथा भंग लागे, नोकारसी कस्या पछी आगल पोरिसीआदिक थाय, परंतु ते विना न थाय अने यद्यपि नोकारसी विना पोरिसीआदिक करे तो काल संकेत रूप जाणवो. तथा वली वृद्ध संप्रदाये एम कहे छे जे नोकारसी पच्चक्खाण जे छे, ते रात्रे चउविहारादिक पच्चक्खाणना तीरण रूप छे एटले शिक्षा रूप छे. इत्यादिक घणो विचार छे ते प्रवचनसारोद्धारग्रंथनी वृत्तिथी जाणवो. अहींयां विशेषे करी लख्यो नथी.

हवे पुरुष प्रमाण छाया जेहने विषे थाय ते पोरिसी जाणवी " आसाढमासे डुपया " इत्यादिक पाठ श्री उत्तराध्ययनादि सूत्रथी जाणवो.

ए रीते नोकारसी, पोरिसी, दिननुं पूर्वार्द्ध ते पुरिमड्ढ, एकासण, एकलठाणुं, आयंबिल, उपवास, दिवसचरिम, अभिग्रह अने विगइ एवं दश पच्चक्खाणनां नामनुं ए प्रथमद्वार थयुं. उत्तर भेद दश थया ॥ ३ ॥

हवे बीजे द्वारे पच्चक्खाण करवानो पाठरुप विधि चार प्रकारे कहे छे.

उग्गए सूरे अ नमो, पोरिसि पच्चक्ख उग्गए सूरे ॥ सूरे उग्गए पुरिमं, अभत्तठं पच्चक्खाइत्ति ॥ ४ ॥

अर्थ—प्रथम नवकारसीनुं पच्चक्खाण उच्चरीये तेवारे (उग्गए सूरे के०) उग्गए सूरे (अ के०) वली (नमो के०) नमुक्कारसहिअं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं असणं

पाणं खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सा-
गारेणं वोसिरई ए उच्चार करवानो प्रथम
विधि जाणवो.

बीजो (पोरिसी के०) पोरिसीनुं (पच्च-
क्ख के०) पच्चक्खाण उच्चरीयें, तेवारे (उग्गए
सूरे के०) उग्गए सूरे पोरिसियं पच्चक्खाइ,
उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं
खाइमं साइमं अन्नत्थणाभोगेणं सहस्सागारेणं
ए उच्चार करवानो बीजो विधि जाणवो.

त्रीजो पूरिमार्द्धनुं पच्चक्काण उच्चरीये
तेवारे (सूरे उग्गए पुरिमं के०) सूरे उग्गए पु-
रिमड्ढं पच्चक्खाइ चउविहंपि आहारं ए उच्चार
करवानो त्रीजो विधि.

चोथो अभत्तार्थ एटले उपवासनुं पच्च-
क्खाण उच्चरीये तेवारे (अभत्तठं पच्चक्खाइ
के०) अभत्तठं पच्चक्काइ तिविहंपि आहारं
चउव्विहंपि आहारं (इति के०) एम उच्चार
करीये, ए चोथो विधि जाणवो.

अहीं पुरिमार्द्ध ते दिवसनुं पूर्वार्द्ध समजवुं एटले नोकारसी आदि पच्चरकाण जो पूर्वे सूर्योदयथी न कर्युं होय तो पण पुरिमड्ढ थाय, एम उपवासादिक पण थाय. तथा सूर्योदयथी मांडीने यावत् आगला दिवसनो सूर्योदय थाय, त्यां सुधी अभक्तार्थ एटले उपवासनुं पच्चरकाण कहेवाय छे, एम जणाववाने तथा रात्रिनो चउविहार कर्यो होय अने बीजे दिवसे एक उपवासनुं पच्चरकाण करे, तेहने चोथभक्तनुं पच्चरकाण थाय. तथा रात्रिये चउविहारनुं पच्चरकाण न कर्युं होय अने बीजे दिने उपवास करे, तेने अभक्तठनुं पच्चरकाण कहीये, पण चोथभक्तनुं पच्चरकाण न कहीये. अने उभयकोटि एकासणादिके तो चोथभक्तनुं पच्चरकाण होयज. इत्यादिक जणाववा माटे चारे विधि देखाड्या ॥ ४ ॥

हवे बीजा पण चार विधि छे, ते देखाडे छे.

भणइ गुरू सीसो पुण, पच्चरकामित्ति एव

वोसिरई ॥ उवउगित्थ पमाणं, न पमाणं वंज-
णबलणा ॥ ५ ॥

अर्थ—प्रथम (गुरू के०) गुरु जे पच्च-
रकाणनो करावनार होय, ते पच्चरकाइ एम
(नणइ के०) नणे, एटले कहे; ए प्रथम
विधि जाणवो. (पुण के०) वली (सीसो के०)
शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार होय ते (प-
च्चरकामि के०) पच्चरकामि (इति के०)
एम कहे. ए बीजो विधि जाणवो. अने (एव
के०) एम संपूर्ण पच्चरकाणे गुरु (वोसिरई
के०) वोसिरई कहे. ए त्रीजो विधि जाणवो
अने शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार होय ते
वोसिरामि कहे, ए चोथो विधि जाणवो. ए
चार विधि कह्या.

(इब के०) इहां पच्चरकाणने विषे करतां
तथा करावतां थकां पोताना मननो जे (उ-
वउंग के०) उपयोग एटले मननी धारणा ठे
तेज (पमाणं के०) प्रमाण ठे एटले मनमांहे

जे पच्चरकाण धार्युं होय तेज प्रमाण बे परंतु (वंजण के०) अक्षर तेनी (बलणा के०) बलना एटले स्खलना अर्थात् अनाभोगने लीधे धारेला तिविहार पच्चख्खाणथ बीजा कोइ चउविहार पच्चख्खाणनाज पाठ उच्चरीये, ते वंजण छलना जाणवी ते (न पमाणं के०) प्रमाण नथी ॥ ५ ॥

हवे तेहीज उच्चारनो विशेष विधि कहे बे.

पढमे ठाणे तेरस, बीए तिन्निउ तिगाइ तइअंमि ॥ पाणस्स चउबंमि, देसवगासाइ पंचमए ॥ ६ ॥

अर्थ–हवे एनां पांच स्थानक बे तेमा (पढमे ठाणे के०) प्रथम स्थानकने विषे कालपच्चख्खाणरूप नोकारसी प्रमुख (तेरस के०) तेर पच्चख्खाण जाणवां, तेनां नाम आगली गाथाये कहेशे, तथा (बीए के०) बीजा स्थानकने विषे विगइ, नीवी अने आयंबिल ए (तिन्निउ के०) त्रण पच्चरकाण जाणवां. तथा

(तइअंमि के०) त्रीजा स्थानकने विषे (तिगाइ के०) त्रिकादिक एटले एकासण, बीयासण ने एकलगणादिक, ए त्रण पच्चरकाण जाणवां, तथा (चउत्थमि के०) चोथा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा इत्यादि अचित्त पाणीनां ब आगार जाणवां, तथा (पंचमए के०) पांचमा स्थानकने विषे (देसवगासाइ के०) देशावकाशिकादि पच्चरकाण जाणवां ॥ ६ ॥

ए पांचस्थावक मांहेला प्रथमादि स्थानकना पृथक् पृथक् जेद कहे बे.

नमु पोरिसीसङ्घा, पुरिमवड्ढ अंगुठमाइ अम्म तेर ॥ निवि विगइ अंबिल तिय, तिय ङु इगासण एगठाणाई ॥ ७ ॥

अर्थ—प्रथम स्थानके तेर भेदनां नाम कहे बे. पहेलो (नमु के०) नमुक्कारसी, बीजो (पोरिसी के०) पोरिसि, त्रीजो (सड्ढा के०) सार्द्धपोरिसि ते दोढ पहोर पर्यंत, चोथो (पु-

रिम के०) पुरिमड्ढ ते बे पहोर पर्यंत, पांचमो (अ-वड्ढ के०) अवड्ढ ते त्रण पहोरनुं पच्चक्खाण-ए पांचनी साथे पूर्वोक्त (अंगुठमाइ के०) अंगुष्टसहितादिक (अड के०) आठ भेद मेलवीये तेवारे (तेर के) तेर भेद थाय. तथा बीजा स्थानके एक (निवि के०) निवी, बीजो (विगइ के०) विगइ अने त्रीजो (अंबिल के०) आयंबिल ए (तिय के०) त्रण प[illegible]का-ण जाणवां, तथा त्रीजा स्थानकने विषे एक (डु के०) बेआसणु, बीजुं (इगासण के०) एकासणुं अने त्रीजुं (एगठाणाई के०) एकल ठाणादिक ए (तिय के०) त्रण पच्चक्खाण जाणवा.

हवे वली प्रकारांतरे उपवासादिक विधिये उपवासने दिवसे पांच स्थानक केवी रीते करवां ? ते कहे छे.

पढमंमि चउब्भाई, तेरस बीयंमि तइय पा-णस्स ॥ देसवगासं तुरिए, चरिमे जह संभवं नेयं ॥ ८ ॥

अर्थ-(पढमंमि के०) पहेले स्थानके (चउत्थाई के०) चोथादिक एटले एक उपवासथी मांडीने छट्ठ इत्यादि यावत् चोत्रीश भक्त पर्यंत पच्चरकाण करवां, तथा (बीयंमि के०) बीजा स्थानकने विषे नोकारसी, पोरिसी, सार्द्धपोरिसी, पुरिमड्ढ, अवड्ढ अने गंठसहियं, मुठसहियं, अंगुठसहियं, घरसहियं, प्रस्वेदसहियं, श्वासोछ्वाससहियं, जलबिंदुसहियं, दीपसहियं, ए (तेरस के०) तेर प[illegible]रकाण मांहेलुं हरकोइ पच्चरकाण करवुं, तथा (तइय के०) त्रीजा स्थानकने विषे (पाणस्स के०) पाणीना छ आगारनुं पच्चरकाण करवुं तथा (तुरिए के०) चोथा स्थानकने विषे (देसवगासं के०) देसावगासिकनुं पच्चरकाण करवुं तथा पांचमा स्थानकने विषे (चरिमे के०) छेहेमानुं पच्चरकाण जे दिवसचरिमं एटले रात्रिनुं डुविहार, तिविहार, चउविहार पाणाहार प्रमुखनुं पच्चरकाण ते (जहसंभवं के०) यथा-

संभवे जे पोताने करवानी इछा होय ते यथा-शक्तिये करवुं तथा भवचरिमादि जे छे, ते पण यथासंभवे करवुं. एम (नेयं के०) जाणवुं. ए पांच मांहेलुं जे कोइ करवुं ते पच्चरकाण कहीये ॥ ८ ॥

वली ए पच्चरकाण करवाना पाठनोज विशेष कहे छे.

तह मज्झ पच्चरकाणे,–सु न पिहु सूरुग्गयाइ वोसिरई ॥ करणविहीउ न भन्नइ, जहावसी-याइ बिअछंदे ॥ ए ॥

अर्थ–(तह के०) तथा ए पद विशेष देखाड वावाची छे (मद्यपच्चरकाणेसु के०) मध्यनां बे स्थानक जे विगइ, नीवी अने आयंबिलनुं तथा एकासण, बियासण अने एकलठाणानुं ए बेनां छ पच्चरकाणोने विषे पृथग् पृथग् पच्च-रकाणे (सूरुग्गयाइ के०) सूरे उग्गए विग-इउं पच्चरकाइ इत्यादिक पाठ (नपिहु के०) वारंवार न कहेवो, एटले प्रथम जे पच्चरकाण

मांडे, तिहां सूरे उग्गए कहेवो, परंतु पच्चक्का-ण पच्चक्काण प्रत्ये न कहेवो, तेमज (वोसिरई के०) वोसिरइ तथा वोसिरामि ए पाठ पण अंतने विषे एक वार कहीयें, पण वारंवार न कहीये ए (करणविहीउ के०) करवानो विधि एटले पूर्वाचार्य परंपराये एमज कहेता आव्या छे करवानो एहज विधि छे. माटे म-होटा पुरुष पण (नभन्नइ के०) नथी जणा-ता. (जहा के०) जेम (आवसीयाइ के०) आवस्सियाए ए पाठ (बिअछंदे के०) बीजा वांदणाने विषे कहेता नथी, ए पण पूर्वाचा-र्यनी परंपरा छे तेम इहां पण जाणी लेवुं ॥ए॥

तह तिविह—पच्चक्काणे, जन्नंति अ पाणग छ आगारा ॥ डुविहाहारे अचित्त,—जोइणो त-ह य फासुजले ॥ १० ॥

अर्थ—(तह के०) तेमज वली (तिवि-हपच्चक्काणे के०) तिविहारना पच्चक्काणने विषे तथा एकासणादि पच्चक्काणे प्रासुक

निर्जीव जलपान संबंधी (पाणग के०) पानक एटले पाणीना (छ आगारा के०) छ आगार (भणंति अ के०) भणे छे-कहे छे. तेनां नाम कहे छे. पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेण वा. ए छ आगारनां नाम जाणवां. तथा (दुविहाहारे के०) द्विविधाहार पच्चक्खाणने विषे (अचित्तभोइणो के०) अचित्तभोजी होय अर्थात् सचित्तभोज्य त्याग करे तेने तथा (तह य के०) तेमज जे एकासणा बियासणाविना (फासुजले के०) फासु पाणी पीतो होय एवा सचित्तपरिहारीने पण पच्चक्खाणने विषे पाणीना छ आगार कहेवा. ए प्रथम विकल्प.

तथा अचित्तभोजी होय अने फासु निर्जीव पाणी पीतो न होय तेने पाणस्सना आगार न कहेवा. ए बीजो विकल्प. तथा जे सचित्तभोजी होय पण फासु पाणी पीये छे तो

तेने पाणस्सना आगार ० कहेवा. ए त्रीजो विकल्प. तथा सचित्तभोजी छे अने फासु पाणी पीतो नथी तो तेने पाणस्सना ० आगार न कहेवा. तथा सचित्तभोजी छे अने केवल खादिम, अशन अने स्वादिम रूप त्रण आहारना पच्चक्खाणने उद्देशे रात्रिप्रमुखे तिविहार करे छे, तिहां पण पाणस्सना आगार न कहेवा. ए चोथो विकल्प. ए चार विकल्प आगारना कह्या, अहीं तथा शब्दथी विशेष जाणवुं ॥ १० ॥

इत्तुच्चिय खवणंबिल,–निवियाइसु फासुयं चिय जलं तु॥ सङ्घावि पियंति तहा, पच्चक्कंति य तिहाहारं ॥ ११ ॥

अर्थ–(इत्तुच्चिय के०) एटलाज माटे अचित्तभोजी होय तेने (खवण के०) क्षपण एटले उपवासने विषे (अंबिल के०) आयंबिलने विषे, तथा (निवियाइसु के) निवि आदिक एटले निवि एकासणादिक तिविहार

पच्चक्खाण तथा आदिशब्दथी सचित्त परिहारने विषे (चिय के०) निश्चयथकी (फासुयं के०) प्रासुक अचित्त (जलं के०) जल ते (तु के०) जेम यति प्रासुक निर्जीव पाणी पीये (तहा के०) तेनी पेरे (सड्ढावि के०) श्रावक पण प्रासुक पाणी (पियंति के०) पीये तेने पण एहिज आगार कह्येये, परंतु ते (य के०) वली (तिहाहारं के०) तिविहार पच्चक्खाण(पच्चक्खंति के०)पच्चक्खे. सचित्तभोजीने पण उपवास, आयंबिल, निविनुं पच्चक्खाण तिविहारे होय ते उष्ण पाणी पीये अने एकासणादि पच्चक्खाणनो नियम नथी. एमां तो दुविहार, तिविहार, चउविहार यथासंभवे होय ॥ ११ ॥

चउहाहारं तु नमो, रत्तिंपि मुणीण सेस तिहचउहा ॥ निसि पोरिसि पुरिमेगा,—सणाइ सड्ढाण दुतिचउहा ॥ १२ ॥ २ ॥

अर्थ–(नमो के०) नोकारसीनुं पच्चक्खाण

तथा (रत्तिंपि के०) रात्रिनुं पच्चख्खाण पण (मुणीण के०) मुनिने—यतिने (तु के०) वली नियमा (चउहाहारं के०) चउविहारज होय अने (सेस के०) शेष पोरिसी आदिक पच्चक्काण ते मुनिने (तिहचउहा के०) तिविहारा तथा चउविहारा यथासंभवे होय. हवे श्रावक आश्रयी कहे छे. (निसि के०) रात्रिनुं पच्चक्काण, (पोरिसि के०) पोरिसीनुं पच्चक्काण, (पुरिम के०) पुरिमढ्ढनुं पच्चक्काण अने (एगासणाइ के०) एकासणादिक पच्चक्काण जे छे, ते (सढ्ढाण के०) श्रावकने अर्थे (दु तिचउहा के०) दुविहार, तिविहार अने चउविहार, ए त्रण प्रकारे यथायोग्ये होय, तिहां नवकारसी अने पोरसी तो श्रावकने चउविहार पच्चख्खाणेज होय, अने शेष पूरिमढ्ढादि पच्चख्खाण तथा रात्रिनुं दिवस चरिमादि पच्चक्काण ते दुविहार तिविहार अने चउविहारे यथा योग्य होय, परंतु ग्रंथांतरे एटलो विशेष छे जे

एकासणादि तिविहार पच्चख्खाणीने रात्रे पाण-
हार होय अने दुविहार प[illegible]ख्काणे एकासणा-
दिकने विषे रात्रे चउविहार होय तथा केटले-
एक स्थानके श्रावकने पण पोरिसी तिविहारे
बोली छे. अने डुविहार पच्चख्खाणे रात्रे तिवि-
हार होय परंतु ते कारणिक जाणवुं, व्यवहारे
समजवुं नही, इत्यादि बीजी विशेष वात ग्रंथां-
तरथी जाणवी, एटले चार विधिनुं बीजुं द्वार
पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चौद थया ॥ १२ ॥ २ ॥

हवे चार प्रकारना आहारनुं त्रीजुं
द्वार कहे छे.

खुहपसमखमेगागी, आहारिव एइ देइ
वा सायं ॥ खुहिउ वि खिवइ कुठे, जं पंकु-
वम तमाहारो ॥ १३ ॥

अर्थ—प्रथम सामान्य प्रकारे आहारनुं
लक्षण कहे छे. जे (खुहपसम के०) क्षुधाने
उपशमाववाने अर्थे (खम के०) समर्थ होय
एवो जे (एगागी के०) एकाकी द्रव्य होय

तथा वली (आहारिव के०) आहारने विशे पण (एइ के०) एति एटले आवे एवा लवण हिंगादिक जे आहारमांहे (सायं के०) स्वाद प्रत्ये (देइ के०) आपे ते, (वा के०) वली (जं के०) जे (पंकुवम के०) पंकोपम एटले कादवनी पेरे असार होय कादवनी उपमा धारण करे, एवुं कादव सरखुं द्रव्य होय परंतु (खुहिज्जवि के०) क्षुधितोपि एटले क्षुधित थको (कुठ के०) कोठामां–उदरमां (खिवइ के०) क्षिपति एटले क्षेपवे ले अर्थात खाय छे (तं के०) ते सर्व (आहारो के०) आहार जाणवो ॥१३॥

हवे ए आहारना मूल चार ज्ञेद ले,
ते कहे छे.

असणे मुग्गोयण स,–त्तु मंम पय खज्ज रब्ब कंदाई ॥ पाणे कंजिय जव कयर, कक्कोमोदग सुराइजलं ॥ १४ ॥

अर्थ–तिहां एक (असणे के०) अशन ते, आशु एटले शीघ्र जे क्षुधाने उपशामावी

नाखे तेने अशन कहीये, तेने विषे (मुग्ग के०) मगादि सर्व कठोल जाति जाणवी. तथा (उंयण के०) उंदन ते चावल—भात प्रमुख सर्व उंदन जाति जाणवी. तथा (सत्तु के०) साथुउं (मंरू के०) मांरा, रोटली, पक्कान, रोटला, पूडा प्रमुख. (पय के०) दूध, दही, घृत, तेल. माखण विगयादि प्रमुख (खज्ज के०) खाजां खीर, सुकुमारिकालापसी, दहींथरां, प्रमुख पक्कान. (रब्ब के०) राबमी घेंस प्रमुख (कंदाई के०) कंदादिक ते सूरणकंदादिक जाणवां तेमज तुलसी नागरवल्यादि पत्र विना सर्व जातिनां फल फूल पत्र सर्वकंद सर्व वनस्पतिविकार शाकादि कूल्लरी चूरिम पर्पिटिकादि सर्व वस्तुनी जाति अशनमांहे आवे, तथा लवण, हिंग, सूआ दाणा, अजमो, वरीयाली, धाणादिके तल्यां एक वेसण पण अशंनमां आवे, इत्यादि सर्व अशनजाति समजवी.

हवे बीजो (पाणे के०) पानने विषे, तिहां

जेने पीजीये ते पाणी कहीये.तेमां अप्काय ते नदी, तलाव, द्रह, समुद्र इत्यादि पाणीना आश्रय संबंधी सर्व स्थलोनुं पाणी जाणवुं. तथा (कंजिय के०) कांजीनुं पाणी छासनी आछ, तथा (जव के०) यवनुं धोयण, (कयर के०) केरनुं धोयण, आमलादिकनुं धोयण, द्राक्षनुं धोयण, तथा (कक्कोमोदग के०) काकडी प्रमुख सर्व फलनां धोयणनुं उदक एटले पाणी, तथा (सुराइजलं के०) सुरादिजल ते मदिरादिकनां पाणी जाणवां, ए अभक्ष्यमां भले छे. एमां आदि शब्दथी द्राक्षादिकना आसव, नालिकेरादिकनां पाणी, इक्षुरस, सौवीर, तक्र ते छाश इत्यादि सर्व पदार्थ पाणीने विषे कल्पे छे, तथापि इक्षुरस, तक्र ते छास अने मदिरादि तथा नालिकेरादिकनां जलने सांप्रत जितव्यवहारे अशनमां गणीये छीये ॥ १४॥

खाइमे भत्तोस फलाइ, साइमे सुंठि जीर अजमाइं ॥ महुगुम तंबोलाई, अणाहारे मोय

निंबाई ॥ १५ ॥ दारं ॥ ३ ॥

अर्थ—हवे त्रीजो खादिम आहार कहे छे. (ख के०) आकाश एटले मुखनुं विवर कहिये, तेने पूरवाने लगारेक भूख मात्र भांजे, पण अन्नादिकनी परे तृप्ति न करे, परंतु कांइ एक अशन समान थाय ते खादिम वस्तु कहीये. ते (खाइमे के०) खादिमने विषे. तिहां प्रथम (भत्तोस के०) भक्तोष एटले शेकेलां धान्य चणा प्रमुख तथा अखोड सुखाशिका सर्व जाणवा, तथा आंबा केलां प्रमुख सर्व (फलाइ के०) फलादिक जाणवां, तथा फलजातिनी सुखडी मेवा सर्व केरी पाकादिकनी जातियो, गुंदपाकादिक, द्राक्ष, चारोली प्रमुख मेवा जातिनुं सर्व पक्वान्न, खांड साकरादि तेना विकार जे खांड कातली प्रमुख ते सर्व खादिमने विषे लीधा कल्पे. परंतु जीतव्यवहारे प्रसिद्धपणे अशन मध्ये लेपकृत उत्तम द्रव्यमां गण्या छे, परंपराये. इत्यादिक सर्व खा-

दिम " भत्तोसं दंताइं, खज्जुरनालिकेर-
दरकाइं ॥ कक्कडि अंबग फणसाइ, बहुविहं
खाइमं नेयं ॥ १ ॥ इत्यादिक विचार सर्व प्रव-
चनसारोद्धार ग्रंथथी जाणवो ॥ ए त्रीजो खा-
दिम आहार कह्यो ॥

हवे चोथो (साइमे के०) स्वादिमने
विषे शुं कल्पे ? ते कहे छे. तिहां प्रथम जे
आस्वादे करी लइये अथवा आहारादिक जे
कीधां होय ते सर्व तेना स्वादमां विनाश
पामे, लयलीन थाय ते स्वादिम कहीये तेमां
(सुंठि के०) सूंठ, (जीर के०) जीरुं, (अ-
जमाइं के०) अजमादिक; आदि शब्दथकी
पीपर, कंकोळ, हरडे, बेहेडां, आमलां, मरी,
पींपलीमूल, पीपर, अजमोद, आजोकाजो(तकम-
रीयां)काथो, कुलिंजर, कसेलो, कंटासिलो,मोथ,
जेठीमध, पुष्करमूल, एलची, बावची, चिणि-
कबाब, कर्पूर, तज, तमालपत्र, नागकेशर,
केशर, जायफल, लविंग, हिंगुलाष्टक, हिंगुत्रे-

वीसो, संचल, सैंधव, यवखार, खयरसार, कोठवऊी, गोली सर्व जातिनी अशनादिमां न ज्ञले तेवी जाणवी, सर्व जातिनां दातण, तुलसीपत्र, श्रीपत्र, वारासोया, मेथी, गोमूत्रादिकना कीधा अन्नमेलादिकनी गोलीयो, चित्रो, पिंम्रार्थ, कोइएक तो पिंम्रार्थने खजुर कहे ठे, परंतु ग्रंथांतरे एने जे सूरणादि कंदनां खार चूंदां करे ठे तेने कहे छे. कर्पूर, कचूरो, त्रिगडु, पंच पटोल, बिम्लवण, इत्यादिक अनेक जातिना स्वादिम आहार जाणवा.

तथा (महु के०) मधु एटले मध अने (गुड के०) गोल, खांड, साकर तथा (तंबोलाई के०) तंबोलादिक ते विविध जातिनो तंबोल नागरवेलीनां पान तथा सोपारी प्रमुख ए पण स्वादिम जाणवा.

हवे अणाहार वस्तु कहे ठे. जे पूर्वे कहेला चारे आहारमांहेला कोइ पण आहारमां न आवे, परंतु चउविहार उपवासे तथा

त्रिने चउविहारे वापरवी कल्पे, ते अणाहार वस्तु जाणवी. तेनां नाम कहे छे.

(अणहारे के०) अनाहारने विषे कल्पे ते वस्तु कहे छे. (मोय के०) लघुनीति ते गोमूत्रादि जाणवां. अने (निंबाई के०) निंबादिक ते लींबडानी शली पानडा प्रमुख पाचे अंग ए सर्व अनाहार वस्तु जाणवी, आदि शब्दथकी त्रिफला, (हरडां, बेडां अने आंबलां,) कडू, करियातुं, गलो, नाहि, धमासो, केरडामूल, बोरछालि मूल, बावलछालि, कंथेर मूल, चित्रो, खयर सार, सूखड, मलयागरु, अगरु, चीरु, अंबर, कस्तूरी, राख, चूनो, रोहिणी वज, हलिद्रा, पातली, आसगंधो, कुंदरु, चोपचीनी, रिंगणी, अफिणादिक सर्वजातिनां विष, साजीखार, चूनो, जीको, उपलेट, गुगल, अतिविष, पूंयाड, एळीउं, चूणीफल, सूरोखार, टंकणखार, गोमूत्र आदि दइने सर्व जातिनां अनिष्ट मूत्र, बोल, मजीठ, कणयरमूल, कुंआर, थोहर, अर्कादिक

पंचकूल, खारो, फटकडी, चिमेरू इत्यादिक व-स्तु सर्व अनिष्ट स्वादवान् छे, अने इच्छा विना जे चीज मुखमां प्रक्षेप करीये ते सर्व अणाहार जाणवी. ए उपवासमां पण लेवी सूजे, अने आयंबिल मध्ये पाणाहार पच्चक्खाण कर्या पछी सूजे ए आहारनुं त्रीजुं द्वार थयुं, उत्तर भेद अढार थया ॥ १५ ॥

हवे नवकारसी प्रमुखना आगारनी सं-ख्यानुं चोथुं द्वार कहे छे.

दो नवकार छ पोरिसि, सग पुरिमड्ढे इगा-सणे अठ ॥ सत्तेगठाण अंबिलि, अठ पण च-उत्थि छ प्पाणे ॥ १६ ॥

अर्थ—जे मूलगुण उत्तरगुण रूप पच्चक्खा-ण राखवाने अर्थे बारी रूप होय ते आगार(छूट) जाणवा. तिहां अपवाद पदे द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावादिके विचारतां मूलगुणं पच्चक्खाणने विषे अन्नत्थणादिक चार आगार जाणवा. अने उत्तर गुण पच्चक्खाणने विषे यथोक्त रीते आग-

त्र कहेशे ते प्रमाणे सर्वत्र आगार जाणवा. ते सर्व मली एकवार उच्चर्या थका बावीश आगार थाय. यद्यपि अन्नत्थऊससिएणादिक सोल आगार काउस्सग्गना ठे तथा समकितना राथाभिउंगादिक ठ आगार ठे, तेमज एक चोलपट्टागारेणं छे, एवं सर्व मली (४५) आगार थाय ठे, परंतु अहींयां तो दश पच्चरकाणने विषे बावीश आगारनुंज काम ठे, माटे ते कहे छे.

(नवकार के०) नोकारसीना पच्चरकाणने विषे (दो के०) बे आगार जाणवा. (पोरिसि के०) पोरिसीना पच्चरकाणने विषे (छ के०) ठ आगार, तेम सार्द्ध पोरिसिना पच्चरकाणे पण ठ आगार, (पुरिमड्ढ के०) पुरिमार्द्धना पच्चरकाणने विषे (सग के०) सात आगार, (इगासणे के०) एकासणाना पच्चरकाणने विषे (अठ के०) आठ आगार, (एगठाण के०) एकलठाणाना पच्चरकाणने विषे (सत्त के०) सात आगार, (अंबिलि अठ के०) आयंबिलना प-

च्चक्खाणने विषे आठ आगार जाणवा. (चउत्थि के०) चोथभक्ते एटले उपवासना पच्चक्खाणने विषे (पण के०) पांच आगार, (पाणे के०) पाणस्सना पच्चक्खाणने विषे (छ के०) छ आगार जाणवा ॥ १६ ॥

चउ चरिमे चउभिग्गहि, पण पावरणे नवठ निव्वीए ॥ आगारुक्खित्तविवेग, मुत्तु दव्व-विगइ-नियमिठ ॥ १७ ॥

अर्थ—(चरिमे के०) दिवसचरिमना पच्च-क्खाणने विषे (चउ के०) चार आगार जाण वा, (अभिग्गहि के०) अभिग्रहना पच्चक्खा-णने विषे (चउ के०) चार आगार जाणवा. (पावरणे के०) प्रावरण एटले वस्त्र मूकवाना पच्चक्खाणने विषे (पण के०) पांच आगार जाणवा, (नवठ निव्वीए के०) निवीना पच्च-क्खाणने विषे नव आगार पण होय अने आठ आगार पण होय, तिहां जे पिंड अने द्रव्य रूप बेहु विगइनुं पच्चक्खाण करे तेहने नव

आगार जाणवा, अने जे एकली (दव्वविगइ के०) द्रव्यविगइमात्रनो (नियमि के०) नियम करे तेने (उक्खित्तविवेग के०) उक्खि-त्तविवेगेणं ए (आगार के०) आगार तेने (मुत्तु के०) मूकीने बाकीना (अठ के०) आठ आगार होय ॥ १७ ॥ तेना यंत्रनी स्था-पना आगल करी छे.

हवे प्रत्येक पच्चरकाण संबंधी आगारोनां नाम कही देखाडे छे.

अन्न सह ड नमुक्कारे, अन्न सह पछ दि-सय साहु सव्व ॥ पोरिसि छ सड्ढपोरिसि, पुरिमड्ढ सत्त समहत्तरा ॥ १८ ॥

अर्थ—(नमुक्कारे के०) नवकारसिना पच्च-रकाणने विषे एक (अन्न के०) अन्नत्थणाभो-गेणं, बीजा (सह के०) सहस्सागारेणं ए (ड के०) बे आगार जाणवा, तथा एक (अ-न्न के०) अन्नत्थणाभोगेणं, बीजो (सह के०)

सहस्सागारेणं, त्रीजो (पन्न के०) पच्छन्नकालेणं, चोथो (दिसय के०) दिसामोहेणं, पांचमो (साहु के०) साहुवयणेणं, छठो (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए (छ के०) छ आगार ते (पोरिसि के०) पोरिसीना पच्चक्खाणने विषे जाणवा. तेमज (सड्ढपोरिसि के०) सार्द्धपोरिसीना पच्चक्खाणने विषे पण एहिज छ आगार जाणवा. तथा वली एज पोरिसीना छ आगारने एक (महत्तरा के०) महत्तरागारेणं ए आगारे करी (स के०) सहित करीये तेवारे (सत्त के०) सात आगार थाय. ते (पुरिमड्ढ के०) पुरिमड्ढ तथा अवड्ढना पच्चक्खाणने विषे जाणवा ॥ १८ ॥

हवे एकासणा तथा एकलठाणाना आगार कहे छे.

अन्न सहस्सागारिय, आउंटण गुरुअ पारि मह सव्व ॥ एग बिआसणि अठ्ठ, सग इगठाणे आउंट विणा ॥ १९ ॥

अर्थ–एक (अन्न के०) अन्नत्थणाभो-गेणं, बीजो (सहस्सा के०) सहस्सागारेणं, त्रीजो (सागारिय के०) सागारियागारेणं, चोथो (आउंटण के०) आउट्टणपसारेणं, पांचमो (गुरुअ के०) गुरुअप्भुठाणेणं, छठो (पारि के०) पारिठावणियागारेणं, सातमो (मह के०) महत्तरागारेणं, आठमो, (सव्व के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए (अठउ के०) आठ आगार ते (एग बिआसणि के०) एकासण अने बियासणना पच्चरकाणने विषे जाणवा. तथा एज आठमांथी एक (आउंट-विणा के) आउट्टणपसारेणं ए आगार विना शेष एकासणाने विषे जे कह्या छे तेज (सग के०) सात आगार ते (इगठाणे के०) एकल-ठाणाना पच्चरकाणने विषे होय ॥१९॥ जिहां जमणा हाथे जमे, मात्र कोलीया लेवानेज हाथ फेरवे, परंतु अंगोपांगने तो खरज खण-वादिकने कामे पण हलावे नही ते एकलठाणुं

जाणवुं ॥ १९ ॥

हवे विगइ, नीवि तथा आयंबिलना

आगार कहे छे.

अन्न सह लेवा गिह, उक्खित्त पडुच्च पारि मह सव्वे ॥ विगइनिव्विगइए नव, पडुच्च विणु अंबिले अठ ॥ २० ॥

अर्थ—एक (अन्न के०) अन्नछणाभोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागारेणं, त्रीजो (लेवा के०) लेवालेवेणं, चोथो (गिह के०) गिहछ संसठेणं, पांचमो (उक्खित्त के०) उक्खित्तविवेगेणं, छठो (पडुच्च के०) पडुच्चमक्खिएणं, सातमो (पारि के०) पारिठावणियागारेणं, आठमो (मह के०) महत्तरागारेणं नवमो (सव्वे के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए (नव के०) नव आगार ते (विगइ के०) विगइ तथा (निव्विगइए के०) निविगइ मली बे प[illegible]रकाणने विषे जाणवा, तथा ए नवमांहेथी एक (पडुच्चविणु के०)

ए आगा विना शेष (अठ के०) आठ आगार जे विगइ अने नीविना कह्या तेज (अंबिले के०) आयंबिलना पच्चक्खाणने विषे जाणवा. जिहां आम्ल एटले खाटो चोथो रस तेहथी निवर्त्तवुं ते आयंबिल कहीये; तेना त्रण प्रकार छे, एक उंदन, बीजो कुल्माष, त्रीजो साथुआदिक; ए त्रण नेदे छे. अथवा (आचाम्ल के०) उसामणनी पेरे जिहां अन्नादिक नीरस थइ निकले तेने आयंबिल कहीये ॥ २० ॥

हवे उपवासना आगार कहे छे.

अन्न सहपारि मह सव्व, पंच खवणे छ पाणि लेवाई ॥ चउ चरिमंगुट्ठाई, जिग्गहि अन्न सहमह सव्वे ॥ २१ ॥

अर्थ—एक (अन्न के०) अन्नत्थणाभोगेणं, बीजो (सह के०) सहस्सागारेणं, त्रीजो (पारि के०) पारिठावणियागारेणं, चोथो (मह के०) महत्तरागारेणं, पांचमो (सव्व

के०) सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए (पंच के०) पांच आगार (खवणे के०) उपवासना पच्चक्खाणने विषे जाणवा. तथा एमां अचित्त पाणी पीये माटे (पाणि के०) पाणस्सना पच्चक्खाणने विषे लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा, बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, असित्थेणवा, ए (लेवाई के०) लेपादिक (छ के०) छ आगार जाणवा, तथा एक (अन्न के०) अन्नत्थणाभोगेणं, बीजो (सह के०) सहसागारेणं, त्रीजो (मह के०) महत्तरागारेणं, चोथो (सव्व के०) सव्व समाहिवत्तियागारेणं ए (चउ के०) चार आगार ते (चरिम के०) दिवस चरिमना पच्चक्खाणने विषे तथा (अंगुठाई भिग्गहि के०) अंगुठमुठिसहियादिक अभिग्रहना पच्चक्खाणने विषे जाणवा ॥ २१ ॥

पच्चक्काणना आगारोनी संख्याना यंत्रनी स्थापना.

अंक	पच्चख्खाणनाम	संख्या.	आगारोनां नाम.
१	नोकारसी.	२	अन्न० ॥ सह० ॥
२	पोरिसी.	६	अन्न० ॥सह०॥ पच्छन्न० ॥ दिसामो० ॥ साहु०॥सव्व०॥
३	साढपोरिसी.	६	अन्न० ॥सह०॥ पच्छन्न० ॥ दिसामो० ॥ साहु०॥सव्व० ॥
४	पुरिमड्ढ.	७	अन्न०,सह०,पच्छ०, दिसा०,साहु०,सव्व०, महत्त० ॥
५	अवड्ढ.	७	अन्न०,सह० पच्छ०,दिसा०,साहु०,सव्व०, महत्त० ॥
६	एकासणुं.	८	अन्न०.सह०, सागा०,आउ०,गुरु०, पारि०, मह०,सव्व० ॥
७	बियासणुं.	८	अन्न०,सह०, सागा०,आउ०,गुरु०, पारि०, मह०,सव्व०॥
८	एकलठाणुं.	७	अन्न०,सह०,सागारि०,गुरु०, पारि०,मह०, सव्व० ॥
९	नीवी.	९	अन्न.,सहस्सा.,लेवा.,गिहत्थ०,उख्खित्त., पडुच्च०, पारि०,महत्त०,सव्व०॥
१०	विगइ.	९	(same as above)
११	आयंबिल.	८	अन्न०,सह०,लेवा०, गिह०,उख्खि०,पारि०, मह०,सव्व०॥
१२	उपवास.	५	अन्न०,सह०,पारि०,मह,० सव्व०,चोलपट्टागार यतिने.
१३	पाणहार.	६	लेवे०,अले०,अच्छे.,बहु.,ससित्थे.,असित्थे.॥

१४	अभिग्रह संकेत.	४ अन्न०, सह०, मह०, सव्व० ॥
१५	दिवसचरिमं.	४ " " " "
१६	भवचरिमं.	४ " " " "
१७	देशावगासिक.	४ " " " "
१८	समकितना.	६ राया०, गणा०, बला०, देवा०, गुरुनि०, वित्ति०॥

इहां उक्खित्तविवेगेणं ए जे आगार छे, ते आगार पिंडविगइ आश्रयी छे, ते पिंम विगय जणाववा माटे विगयना भेद कही देखाडे छे. परंतु विगयना भेदो कहेवानुं द्वार तो आगल आवशे हाल अहीयां तो मात्र पिंम विगय उंलखाववाने निमित्तेज कहे छे.

डुद्ध महु मज्ज तिल्लं, चउरो दवविगई च-उर पिंमदवा ॥ घय गुल दहियं पिसियं, मक्ख-ण पक्कन्न दो पिंमा ॥ २२ ॥

अर्थ–एक (डुद्ध के०) डुग्ध, बीजो (महु के०) मधु त्रीजो (मज्ज के०) मद्य एटले मदिरा अने चोथो (तिल्लं के०) तैल ए (चउरो के०) चार (दवविगई के०) द्रव्य विगय छे. ए चार ते ढीलुं विगय होय, रस रूप

होय, माटे एने रसविगय कहीये, अने ए (घय के०) घृत, बीजो (गुल के०) गोल, त्रीजो (दहियं के०) दधि एटले दहीं अने चोथो (पिसियं के०) पिशित ते मांस ए (चउर के०) चार विगय जे छे ते (पिंडदवा के०) पिंमद्र-व्यरूप जाणवा. एटले ए चार पिंडरूप थीणो पिंड होय अने कोइ वेला रसरुप होय. तथा एक (मरकण के०) माखण, बीजो (पक्कन्न के०) पक्वान ए (दो के०) बे विगय ते स्वन्नावे करीने (पिंडा के०) पिंम रूप होय. कठिन होय, माटे एने पिंमविगय कहीये. ए दसविगय कह्यां. इहां उक्खित्तविवेगेणं ए आ-गार जे छे ते पिंमविगयनो छे ते जणाववा माटे आ गाथा कही ॥ ३२ ॥

हवे केटलांएक पच्चरकाण मांहो मांहे आ-गार तथा पाठ उच्चार विशेषे करी सरखा छे. एटले तेना आगार पण मांहोमांहे सरखा छे, अने पाठ पण सरखो छे, ते कहे छे.

पोरिसि सढ्ढमवढ्ढं, दुन्नत्त निव्विगइ पोरसाइ समा ॥ अंगुठ मुठि गंठी, सचित्त दव्वाइ भि-ग्गहियं ॥ २३ ॥

अर्थ–(पोरसाइसमा के०) पोरिसि आदे देइने पच्चक्खाण जे छे, ते सरखां जाणवां, एटले एक पोरिसि अने बीजी (पोरिसिसढ्ढं के०) सार्द्ध पोरिसि ए बे सरखां जाणवां एटले पोरिसीने सार्द्ध पोरिसीना पच्चक्खाणना पाठनो उच्चार तथा आगार पण सरखा छे. तेमज पुरिमढ्ढं ने (अवढ्ढं के०) अवढ्ढ पच्चक्खाण पण सरखुं जाणवुं, तथा एकासणा अने (दुन्नत्त के०) द्विभक्त एटले बीआसणानु पच्चक्खाण अने आगार पण सरखा जाणवा, तथा विगइ ने (निव्विगइ के०) नीविनुं पच्चक्खाण अने आगार पण सरखा जाणवा. तथा (अंगुठ के०) अंगुठसहियं, (मुठि के०) मुठिसहियं, (गंठी के०) गंठिसहियं, (सचित्तदव्वा के०) सचित्त द्रव्यादिकनुं पच्चक्खाण एटले सचित्त द्र-

व्यादिकना पच्चक्खाण जे देसावगासिक, तेमज दिवसचरिमादिनां पच्चक्खाण ए सर्व (ज्ञिग्गहियं के०) अज्ञिग्रह पच्चक्खाण कहेवाय, तेना पण मांहोमांहे पाठ तथा आगार सरखा जाणवा. परंतु कालप्रमाणादिके तथा स्थानके तो फेरफार होयज ॥ २३ ॥

हवे ए सर्व आगारोना अर्थ कहे छे.

विस्सरण-मणाज्ञोगो, सहसागारो सयं मुहपवेसो ॥ पछन्नकाल मेहाइ, दिसि-विवज्जासु दिसिमोहो ॥ २४ ॥

अर्थ-जे (विस्सरणं के०) विस्मरण थइ जाय ते (अणाज्ञोगो के०) अनाज्ञोग जाणवो, एटले पच्चक्खाणनो उपयोग अनाज्ञोग थकी वीसरी जाय, तेवारे अजाणपणे कांइ मुखमां प्रक्षेप करे तो तेथी पच्चक्खाण ज्ञंग न थाय, ए प्रथम अणाज्ञोगेणं आगार कह्यो; एनी साथे अन्नछ शब्द जोमीये तेवारे अन्नछणाज्ञोगेणं एवुं नाम थाय, माटे तेनुं कारण समजवाने

नीचे अर्थ लखीये बीये,—अन्नत्थणाभोगेणं एटले अन्यत्र अने अनाभोगात् तिहां अन्यत्र एटले जे आगार कह्यां होय ते आगार वर्जीने बीजा सर्वत्र स्थानके पच्चरकाण पालवानी यत्ना राखवी. अन्नछ ए पद सर्वे आगारे जोमवुं, तथा अनान्नोगात् एटले वीसरवाथकी अर्थात् पच्चरकाणनो उपयोग वीसरते अजाणतां कांइ मुखमां प्रक्षेप कराइ जाय, पबी पच्चरकाण सांन्नरी आवे, तेवारे तरत मुखथकी त्याग करे, तेथी पच्चरकाण न्नंग थाय नहीं, अथवा अजाणे मुखथकी हेठे उतर्युं पबी कालांतरे अथवा तुरत स्मरणमां आवे तोपण पच्चरकाणनो न्नंग थाय नहीं, परंतु शुद्ध व्यवहार बे, तेथी फरी निःशंक न थाय ते माटे यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं. ए वात सर्व आगारोने विषे जाणवी. माटे अहीं पीठिकारूपे लखी बे.

बीजो (सहसागारो के०) सहसात्कार ते (सयं मुह के०) पोतानी मेले आवी मुखमांहे

(पवेसो के०) प्रवेश करे ते जाणवुं. एटले पञ्च-
स्काण कीधुं ठे तेनो उपयोग तो वीसर्यो नथी,
पण कार्य क वाना प्रवर्त्तनयोग लक्षण स .सा-
स्कारें स्वज्ञावेज पोताना मुखमां कांइ प्रवेश
थइ जाय. जेम दधि मथतां थकां ठांटो उमी-
ने मुखमां पमी जाय, तथा चजविहार उपवा-
स होय; अने वर्षाकालमां मेघनो ठांटो मुख-
मां पमी जाय, तो पच्चख्काण ज्ञांगे नहीं.

त्रीजो (पछन्नकाल के०) प्रछन्नकाल ते
कालनी प्रछन्नता जाणवी. जेम (मेहाइ के०)
मेघादि एटले मेघना वादले करीने ढंकाइ ग-
येला सूर्यनी खबर न पमे, तथा आदिशब्दथ-
की दिग् दाह, ग्रहादिक, रजोवृष्टि, पर्वत प्र-
मुख सर्व जाणी लेवुं. तिहां पर्वत अने वादळां
प्रमुखे अंतरित सूर्य देखाय नहीं; अथवा
रज उमवे करी न देखाय; तेवारे पोरिसीयादि-
कना कालनी खबर न पमतां अपूर्ण थयेलीने
संपूर्ण थयेली जाणीने, जमवा बेसी जाय तो

पच्चक्खाण भंग न थाय. परंतु जाणवामां आवे तो पछी अर्द्धो जम्यो थको होय तो पण एमज बेशी रहे, अने पोरिसी आदि पूर्ण थाय, पछी जमे तो भंग न थाय; परंतु हजी पूर्ण थइ नथी, एवुं जाणवामां आवे तो पण अटके नहीं अने जमे, तो पच्चक्खाण भंग थइ जाय ॥

चोथो (दिसिमोहो के०) दिसामोहेणं ते (दिसिविवज्जासु के०) दिशिना विपर्यासपणाथकी-जेवारे दिङ्मूढ थइ जाय, तेवारे पूर्वने पश्चिम करी जाणे अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे एम खबर न पम्वाथी अपूर्ण पच्चक्खाणे पण पूर्ण काल थयो जाणीने जमे तो पच्चक्खाण भंग नहीं अने दिङ्मोह मटी गया पछी जेवारे जाणवामां आवे तेवारे पूर्वनी पेठे अर्द्धो जम्यो थको होय तो पण पच्चक्खाण पूर्ण थाय तिहां सुधी एमज बेशी रहे अने काल पूरो थया पछी जमे ॥ २४ ॥

साहुवयण उग्घाडा,-पोरिसि तणु-सुब्भया

समाहित्ति ॥ संघाइकज्ज महत्तर, गिहत्थ बं-
दाइ सागारी ॥ २५ ॥

अर्थ–पांचमुं (उग्घाडा पोरिसि के०) उग्घाड पोरिसी एवुं (साहुवयण के०) साधुनुं वचन एटले बहुपडिपुन्ना पोरिसि एवुं सांज्ञलीने जो अपूर्ण पञ्चरकाणे जमे तो पण पोरिसी ज्ञंग न थाय, पछी कोइकना कहेवा उपरथी जाणवामां आवे के हजी लगण पोरिसीनो काल पूर्ण थयो नथी, तेवारे पूर्वोक्त रीते अर्द्धभुक्त रहे, अने पोरिसीनो काल पूर्ण थया पछी जमे ए साहुवयणेणं नामे आगार जाणवो.

छठो (तणु के०) शरीर तेनुं (सुज्ञया के०) स्वस्थता जे निराबाधपणुं तेने (समाहि के०) समाधि (इति के०) एम कहीये, एटला माटे ए सवसमाहिवत्तियागारेणं कहेवाय. इहां तीव्रशूलादिक रोग उपने थके, आर्त्त रौद्रनी सर्वथा निराशे जे शरीरनी स्व-

स्थता ते सर्व समाधि कहीये. तत्प्रत्ययिक जे कारण ते सर्वसमाधिवर्त्तिताकार कहीये. ते समाधिने निमित्ते जे औषध पथ्यादिकनी प्रवृत्तिने विषे अपूर्ण प्रत्याख्याने जमतां पण पच्चक्खाण ज्ञंग थाय नहीं.

सातमुं (संघाइकज्ज के०) संघादिकनुं कोइ कार्य उपने थके वडेरानी आज्ञा पाले, तेने (महत्तर के०) महत्तरागार कहीये. ते आवी रीते के जे पच्चक्खाण कीधुं छे, तेनी अनुपालनाथकी पण जो निर्जरानी अपेक्षाये विचारीये तो महोटुं निर्जरा लाज्ञ हेतु कार्य छे, अने अन्य पुरुषोथी कार्य असाध्य छे, बीजा कोइ पुरुषथी थाय तेम नथी, एवुं कोइ संघनुं तथा आदि शब्द थकी चैत्य ग्लानादिकना कार्ये प्रयोजन छे, तेहिज आगार ते महत्तरागार कहीये. तिहां अपूर्ण काले जमतां पच्चक्खाण ज्ञंग न थाय.

आठमुं (गिहब्ब के०) गृहस्थनी नजर

पमे, तथा (बंदाइ के०) सर्पबंदिवानादिकनी नजर पमे, तेने (सागारी के०) सागारिआ-गारेणं कहिये. तिहां आगार एटले घर तेणे करी सहित छे जे तेने सागारि कहीये, तेनी नजरे देखतां साधुने आहार करवो कल्पे नहीं. केम के ए थकी प्रवचनोपघातादिक बहु दो-षनो संभव थाय, माटे साधुने जमतां थकां जो सागारी आवी पमे, अने ते जो चल होय, एटले तरत जवावालो होय तो क्षणेक बेसी रहे, अने तेने स्थिर रहेतो जाणे तो स्वाध्या-यादिकना भंगना भयथकी अन्यत्र जइने तेहिज आसने जमे, तो पच्चरकाण भंग न थाय. ए जेम गृहस्थने सागारी कहीये तेमज जे-हनी दृष्टिए देखतां अन्न खाइये ते पचे नहीं, तेने पण सागारिक कहीये तथा उपलक्षणे आदि शब्दथकी सर्प, अग्नि, प्रदीप, नरेलो, पा-णीनी रेल आवे, तथा गृहपातादिक एटले घर पडतुं होय, ए आगार पण लेवा. इत्यादिक

ज्ञपद्रवोना कारणे अन्यस्थानके जइ जमतां पण पच्चरकाण ज्ञंग न थाय ॥ २५ ॥

आउंटण--मंगाणं, गुरु पाहुणसाहु गुरुअ-ज्ञुठाणं ॥ परिठावण विहि--गहिए, जइण पाव-रण कम्पिट्टो ॥ २६ ॥

अर्थ—नवमो (अंगाणं के०) पग प्रमुख अंग तेनुं (आउंटण के०) आकुंचन एटले संकोचवुं तथा पसारवुं ते अणखमते करवुं पमे, एटला माटे एने आउट्टणपसारेणं आगार कहीये, तेथी जमतां थकां कांइक पोतानां आसनादिक चलायमान थाय, तो पच्चरकाण ज्ञंग न थाय.

दशमो (गुरु के०) पोताना गुरु आचार्यादि आवे अथवा कोइ महोटो (पाहुणसाहु के०) प्राहुणो साधु आवे थके जमतां उठवुं पडे तो (गुरुअज्ञुठाणं के०) गुरुअप्नुठाणेणं आगार थाय, एटले ते आवेला आचार्यादिक गुरुनां विनयादिक करवा माटे अभ्युत्थानादिक साच-

ववा सारु उठवुं पके तो फरी तेमज बेसीने जमे
तो पच्चक्खाण न्नंग न थाय ॥

अगियारमो (परिठावण के०) जे अन्न परठवातुं होय ते (विहिगहिए के०) विधिये ग्रहण करेलुं होय ते उपवासादिक पच्चक्खाणमां पण लेवुं पके तेने पारिठावणियागारेणं कहीये, एटले जे विधिये करी निर्दोषपणे ग्रहण कर्युं, अने विधिये वहेंची आप्युं होय, पछी अन्य साधुये विधिये भुक्त कर्या थकी कांइक आहार उगर्यो ते पारिष्ठापन योग्य थयुं, परंतु ते अधिक आहारने परठवतां दोष उपजे छे, एवुं जाणीने तेहवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञाये आहारतां पच्चक्खाण न्नंग न थाय. तिहां एटलुं विशेष जे चउविहार उपवासमांहे पाणीनुं पारिठावणियागारेणं थाय, तथा तिविहार उपवासना पच्चखाणमां अन्नादिकनुं पारिठावणियागारेणं थाय, परंतु विगयादिकनुं पारिठावणियागारेणं न थाय,

अने बीजा सर्व पच्चक्खाणोने विषे थाय. ए आगार यतिने होय परंतु पाठ संलग्न छे माटे गृहस्थने पण पाठमां कहेवाय छे.

बारमो (जइण के०) यतिने अर्थे आगार जाणवो ते यतिने अर्थे (पावरण के०) प्रावरणना पच्चक्खाणे (कडिपट्टो के०) चोलपट्ट तेहनो आगार जाणवो, एटले वस्त्र मुकी नग्न थइ बेठो होय अने गृहस्थ आवे एटले लज्जाने माटे उठीने चोलपट्ट पहेरे, तेने चोलपट्टागारेणं कहीये एथी पच्चक्खाण भंग न थाय. ए आगार पण यतिने होय ॥ २६ ॥

खरडिय लूहिअ डोवा,--इ लेव संसठ डुच्च मंडाई ॥ उक्खित्त पिंडविगई,--णं मक्खियं अंगुलीहिं मणा ॥ २७ ॥

अर्थ—तेरमो, प्रथम (खरडिय के०) खरड्यो होय अने पछी तेने (लूहिअ के०) लुंछी नांख्यो होय एटले खरड्यो ते लेप अने लुंछ्युं ते अलेप एवो (डोवाइ के०) डोयो

चाटुवो प्रमुख होय ते (लेव के०) लेवालेवेणं आगार जाणवो. एटले भोजननुं भाजन अथवा चाटुवा प्रमुख होय ते अकल्पनीय एवा विगय अने शाक प्रमुख अन्नादिके खरड्या होय, पछी ते कडछी प्रमुखने लुंछीने अलेप कीधां होय, तो पण कांइक विगयादिक अवयवना सद्भावे सहित छे; तेवा भाजने करी आयंबिलादिक पच्चरकाणवालाने जमतांलेतां पच्चरकाण भंग थाय नही.

चौदमो गिहछसंसठेणं एटले भक्तदायक गृहस्थसंबंधि विगयादिके वघारादिके (संसठ के०) संसृष्ट एटले मिश्र कीधुं एवुं (रुच्च के०) शाकादिक करंबादिक तथा (मंमाई के०) मांमादिक ते लगारेक हाथे गोळ प्रमुखे चोपमा कीधा होय, तेने गृहस्थसंसृष्ट कहीये, ते निविना पच्चरकाणे लेवा कल्पे तथा आयंबिलमां पण किंचिन्मात्र तैलादिके स्निग्ध हाथे लगामेला एवा मंमकादिक होय ते पण यतिने

लेतां पच्चरकाण ज्ञंग न थाय.

पन्नरमो (पिंडविगईणं के०) पिंरूप विगयनुं (उक्खित्त के०) उत्क्षिप्त एटले पाबुं लेवुं एटला माटे एने उक्खित्तविवेगेणं नामे आगार कहीये. एटले ए ज्ञाव जे मांडा प्रमुख अन्न तथा पूपिकादिक ऊपर गोळ प्रमुख तथा माखणादिक मूक्यां होय, ते फरी पाबा तेना उपरथी उपाडी पण लीधा होय एटले ए गोळ माखणादिक जे पिंरूविगय बे ते एवां बे, के जे पदार्थ उपर राखेलां होय, तेने फरी जेवारे तेना उपरथी पाबां उद्धरी लइये तेवारे ते निःशेषपणे एटले बधां पाबां लेवाइ शकाय नही, कांइक पण रोटला प्रमुखने लागेलां थकांज रही जाय, माटे जेना उपरथी पिंरूविगइ अलगी करी लीधी होय एवा रोटला प्रमुखने विगइना पच्चरकाणवालो, जो गृहस्थना घरथी वहोरीने ज्ञुंजे, तो पच्चरकाण ज्ञंग न थाय.

सोलमो (मक्खियं के०) मसळ्युं (अंगु-

लीहिं के०) अंगुलीयें करीने (मणा के०) लगारेक एटले ए भाव जे अंगुलिये घृतादिक चोपडीने मांमा प्रमुख करे तेने पडुच्चमक्खिएणं कहीये. ते सर्वथा रूक्ष एवा मंडकादिक होय तेने लगारेक स्नेहवंत सुकुमारता उपजाववाने अर्थे लहचूइ प्रमुख अंगुलीये करी म्रक्षित कीधुं होय ते नीवि पच्चक्खाणमां लेतां पच्चक्खाण भंग न थाय, परंतु घृतादिकनी धाराये करी म्रक्षित करे, तो लेवुं कल्पे नहीं. ए सोल आगार अशन आश्री कह्या ॥ २७ ॥

हवे पाणस्सना ब आगारनो अर्थ कहे बे.

लेवाडं आयामा-इ इअर सोवीरमह-मुसिणजलं ॥ धोअण बहुल ससिडं, उस्सेइम इअर सिबविणा ॥२८॥ दारं ॥४॥

अर्थ—प्रथम (लेवाडं के०) लेपकृत पाणी ते कोने कहीये ? के (आयामाइ के०) आचाम्लादि--उसामण आदिशब्द थकी आंबली त-

आ ज्ञाहनुं पाणी पण जाणवुं. एटला माटे ए आगारनुं नाम लेवेणवा कहीये.

बीजो (इअर के०) इत्तर एटले पूर्वोक्त लेप थकी उलटुं अलेपकृत पाणी लेवुं, ते माटे ए आगारनुं नाम अलेवेणं वा जाणवुं. ते (सोवीरं के०) सौवीर--कांजी धोयण आदिशब्दथी गडूल जरवाणी प्रमुख जाणवुं.

त्रीजो (अछं के०) अछ ते निर्मल पाणी (उसिणजलं के०) ऊष्ण पाणी एटले त्रिदंडोत्कालिक ऊष्ण जल अथवा बीजुं पण निर्मल पाणी नितर्युं फलादिकनुं धोयण जाणवुं, एटला माटे अछेणवा नाम कहीये.

चोथो (धोअण के०) चोखा प्रमुखना धोयण प्रमुखनुं पाणी तेने (बहुल के०) बहुलेप कहीये एटला माटे एनुं बहुलेवेणवा एवुं नाम छे. ए तंडुलधोवनादिक गंडुल पांणी जाणवुं.

पांचमो (ससित्थं के०) सीथ सहित पाणी ते (उस्सेइम के०) आटाथी खरड्या हाथनुं

धोयण एटले उत्सेदिम एवुं पिष्टजलनुं नाम छे ए-
टला माटे ससित्थेण वा एवुं ए आगारनुं नामछे.
छठो ए पूर्वोक्त पांचमा ससित्थेण वा ए
आगारथी (इअर के०) इतर ते आटावाला
हाथनुं धोयण तेने वस्त्रादिके करी गळ्युं होय,
तेथी ते (सित्थविणा के०) सीथ विनानुं जा-
णवुं, एटले अन्नादिक आटाना दाणाना स्वाद
विनानुं थाय, एटला माटे तेनुं नाम असित्थेण
वा कहेवाय. ए ७ आगार पाणीना कह्या. तेनी
साथे पूर्वे कहेला सोल आगार मेलवीये, तवारे
सर्व मली बावीश आगारोनी संख्या थाय ॥२७॥
अहीं प्रत्येक आगारे वा शब्द मूकेलो
छे ते एक एकथी वीजा बीजामां विशेष देखा-
डवाने माटे छे, एटले लेपथी अलेप विशेष,
अलेपथी अछ विशेष, अछथी बहुलेप विशेष,
बहुलेपथी ससित्थ विशेष, ससित्थथी असित्थ वि-
शेष जाणवो, परंतु लेपादिकनुं पाणी लीये, तो
पण उपवासादिकनो ज्ञंग थाय नही. इति

भावः ॥ ए प्रकारे अपुनरुक्त एटले फरी न उच्चरीये एवा बावीश आगारोना अर्थनुं व्याख्यान लेशथी देखाडयुं. ए आगारोना अर्थनुं चोथुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल चालीश थया ॥ हवे दश विगइना स्वरूपनुं पांचमुं द्वार कहे छे.

पण चउ चउ चउ छु छुविह, छ भक्क छुद्धाइ विगइ इगवीसं ॥ ति छु ति चउविह अभक्का, चउ महुमाइ विगइ बार ॥ ३ए ॥

अर्थ–जे इंद्रियादिकने पुष्ट करे, मन, वचन अने कायाना योगने अप्रशस्त विकार उपजावे, ते विगइ कहीये, ते विगइ दश भेदे छे. तेमांथी चार विगइ तो साधु अने श्रावक बेहुने अभक्ष्यज छे. एटले भक्षण करवा योग्य नथी, अने छ भक्ष्य विगइ साधु अने श्रावक बेहुने भक्ष्य करवा योग्य छे. माटे एने भक्ष्य विगइ कहीये, तेना उत्तर भेद एकवीश थाय ते कहे छे.

प्रथम छुध विगइ (पण के०) पांच भेदे

बे, बीजी दहीं विगइ (चउ के०) चार जेदे बे, त्रीजी घृतविगइ (चउ के०) चार जेदे बे, चोथी तेल विगइ (चउ के०) चार जेदे बे, पांचमी गोळविगइ (डु के०) बे जेदे बे, बही पक्वान्नविगइ (डुविह के०) द्विविध एटले बे जेदे बे, ए (डुद्धाइ के०) डुग्धादिक (ब के०) ब (जरक के०) जदाण करवा योग्य (विगइ के०) विगइ बे, तेना सर्व मली उत्तरजेद (इगवीसं के०) एकवीश थाय बे.

हवे चार अजक्ष्य विगइना उत्तर जेद कहे बे. प्रथम मधु विगइ (ति के०) त्रण जेद बे, बीजी मदिरा विगइ (डु के०) बे जेदे बे, त्रीजी मांस विगइ (ति के०) त्रण जेदे बे, चोथी माखण विगइ (चउविह के०) चार जेदे बे. ए (महुमाई के०) मधु आदिक (चउ के०) चार (अजरका के०) अजक्ष्य (विगइ के०) विगइ बे, तेना सर्व मली उत्तर जेद (बार के०) बार थाय ते सर्व नामपूर्वक आ-

गल कहेशे ॥ २ए ॥

हवे प्रथम ठ जद्दय विगइना एकवीश
जेद व्यक्तपणे कहे ठे.

खीर घय दहि अ तिल्लं, गुम पक्कन्नं ठ जक्क विगईउ ॥ गो महिसी उट्टि अय एलगाण पण डुद्ध अह चउरो ॥ ३० ॥

अर्थ–प्रथम ठ जद्दय विगयनां नाम कहे ठे. एक (खीर के०) डुध, बीजो (घय के०) घृत, त्रीजो (दहि के०) दधि.-दहीं (अ के०) वली चोथो (तिल्लं के०) तैल, पांचमो (गुम के०) गोल, ठहो (पक्कन्नं के०) पक्वान्न, ए (ठ के०) ठ (जक्क विगईउ के०) जद्दय-विगय जाणवा. एटले ए ठ विगइ जे ठे, ते साधु तथा श्रावकने जद्दाण करवा योग्य ठे, माटे एने जद्दय विगय कह्या. हवे ए ठ जद्दय विगयना उत्तर जेदनां नाम कहे ठे.

तिहां प्रथम डूधविगयनुं नाम कह्युं ठे, माटे डूधना उत्तर जेद कही देखाके ठे. एक

(गो के०) गायनुं दूध, बीजुं (महिसी के०) भेषनुं दूध, त्रीजुं (उट्टि के०) उंटणीनुं दूध, चोथुं (अय के०) अजा एटले गलीनुं दूध, पांचमुं (एलगाण के०) एरुका ते गाडरीनुं दूध ए (पण के०) पांच जातिनां (दुरु के०) दूध ते सर्व विगई जाणवां, अने शेष मनुष्यणी तथा बीजा पशुआदिकनां जे दुध थाय छे ते विगइमां गणाय नही. (अह के०) अथ एटले हवे (चउरो के०) चार जातिनुं घृत तथा चार जातिनुं दहीं कहे छे ॥ ३० ॥

घय दहिआ उट्टि विणा, तिल सरिसव अयसि लट्ट तिल्ल चऊ ॥ दवगुम पिंमगुमा दो, पक्कन्नं तिल्ल-घय-तलियं ॥ ३१ ॥ दारं ॥ ५ ॥

अर्थ–प्रथम (घय के०) घृत जाणवुं, बीजी (दहिया के०) दधि जाणवुं, ए बे विगइना एक (उट्टिविणा के०) उंटणीना विना बाकी चार चार भेद जाणवा. केम के उंटणीनु दूध जमाय नहीं, माटे ते विना बाकी चार,

एक गायना दहींनुं घी, बीजुं नेषना दहींनुं घी, त्रीजुं बालीना दहींनुं घी, अने चोथुं गारुरना दहींनुं घी ए चार नेद घृतना जाणवा, तथा दहींना पण एज चार नेद. एक गायना दूधनुं दहीं, बीजुं भेषना दूधनुं दहीं, त्रीजुं बालीना दूधनुं दहीं अने चोथुं गाडरना दूधनुं दहीं, ए चार दहींना नेद विगइरूप जाणवा.

हवे तेल विगयना चार नेद कहे बे. एक (तिल के०) तिलनुं तेल, बीजुं (सरिसव के०) सरशवनुं तेल, त्रीजुं (अयसि के०) अलसीनुं तेल अने चोथुं (लट्ट के०) काबरीकसुंबा धान्यनुं तेल, ए (तिल्ल के०) तेल विगइना (चऊ के०) चार नेद विगइयाता रूपे जाणवा. अने बीजा एरंमीयानां फूलां, दिडोल, मधुकफल, नालियेर, खदिर, शिंशपादिक यावत् लक्षपाकादिक सर्व जातिनां तेल ते नीवियातां जाणवां.

हवे गोल विगइना बे भेद कहे ले. एक (दवगुड के०) द्रव्यगोल ते ढीलो राबडीयो रसरूप गोल जाणवो, बीजो (पिंडगुडा के०) पिंड रूप गोल ते काठो विविध जातिनो गोल जाणवो, ए (दो के०) बे प्रकारना गोल जाणवा.

हवे (पक्कन्नं के०) पक्वान्न विगइना बे भेद कहे ले, तेमां एक तो पूर्वे जे चार जातिनां तेल कह्यां ले, तेमां तल्युं होय तेने (तिल्लतलियं के०) तेलमां तलेलुं पक्वान्न कहीये, बीजुं पूर्वे जे चार जातिनां घृत कह्यां ले, तेमां तल्युं होय तेने (घयतलियं के०) घृतमां तलेलुं पक्वान्न कहीये. तलियं शब्द बे स्थानके जोडवो. ए रीते दूधनां पांच, घृतनां चार, दहींनां चार, तेलनां चार, गोलनां बे अने पक्वान्ननां बे मली एकवीश भेद भक्ष्य विगयना कह्या. ए विगयना नामनुं पांचमुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल पचास थया ॥

हवे ए भक्ष्य विगयना निवीयाता त्रीश कराय
छे तेना भेदोनुं बहुं द्वार कहे छे.

पयसाडि खीर पेया,--वलेहि दुद्धट्टि दुद्ध-
विगइगया॥ दक्ख बहु अप्प तंडुल, तच्चुन्नंबिल-
सहिअ दुद्धे ॥ ३२ ॥

अर्थ–प्रथम दूधना पांच निवियाता थाय
ते कहे छे. एक (दक्ख के०) द्राख अने टो-
परादिक नाखीने दूध रांध्युं होय तेने (पयसाडि
के०) पयसाडी (बासुदी) कहीये, बीजुं (बहुतं-
दुल के०) घणा चोखा नांखीने दूध रांध्युं होय
तेने (खीर के०) खीर कहीये, त्रीजुं (अप्पतंदु-
ल के०) अल्प तंदुल एटले थोडा चोखा नांखीने
दूध रांध्युं होय तेने (पेया के०) पेया (दुधपाक)
कहिये, चोथुं (तच्चुन्न के०) ते चोखाना चूर्ण करी
सहित एटले ते चोखानो आटो लोक भाषाये
फूकरणुं कहे छे, ते नांखीने, दूध पचाव्युं होय,
रांध्युं होय तेने (अवलेहि के०) अवलेहिका
कहिये, पांचमुं (अंबिलसहिअ के०) खाटा

रसे करी आढ-कांजीप्रमुख खटाशे सहित दुध ऊष्ण करे, अथवा ए लोक न्नाषाये दूधमां खटाश होय, तेमाटे एने फेदरी कहे ढे; अथवा त्रण दिवस प्रसूत गोदुग्धनां बलहटां(बळी) ते (डुद्दी के०) दुद्दी कहीये, ए पांच (दुद्दे के०) दुग्धना (विगइगया के०) विकृतिगता एटले निवियाता जाणवा. न्नेदांतरे एना पण बीजा न्नेदो थाय ढे ॥ ३१ ॥

हवे घृतविगइ तथा दहीविगइनां पांच पाच निवियाता कहे ढे

निप्नंजण वीसंदण, पक्कोसहितरिय किट्टि पक्कघयं ॥ दहिए करंब सिहरिणि, सलवणदहि घोल घोलवमा ॥ ३३ ॥

अर्थ—एक पक्कान्न तल्या पढी उतर्युं जे बळेलुं घृत तेने (निप्नंजण के०) निप्नंजण एटले निर्न्नंजन घृत, पक्कान्ननुं तलण घृत कहीये; बीजुं दहींनी तरी अने धान्यनी कणक बेहु एकठा मेलवीने नीपजाव्युं जे ड्रव्य विषेश ते कु

छुरी इति जाषा सपादलक्ष (माळवा) देश प्रसिद्ध ते (वीसंदण के०) विसंदन एटले विस्पंदन कहीये, त्रीजुं (पक्कासहितरिय के०) पक्वोषधितरित एटले औषधिने घृत साथे पचावीये तेनी उपर जे घृतनी तरिका वले ठे, एवुं कूरिया सरिखुं घृत पचीने थाय, ते घीनी उपरली तरी कहीये, चोथुं घृतनो मेल उतरे तेने (किट्टि के०) घृतनो मेल ते कीटुं कहीये, पांचमुं (पक्कघयं के०) पाकुं घृत ते औषधिये पचावेलुं घृत जाणवुं, खयर, आमला, ब्राह्मी प्रमुख औषधिये करी पचाव्युं होय ते जाणवुं, एना जेदांतर घणा थाय.

हवे दहींना पांच निवियाता कहे ठे. प्रथम (दहिए के०) दहींने विषे उंदन एटले कूर एकतुं मेलवीने कीधुं ते दधि सीधोरो(दूध अने जातमां मेलवण तथा द्राक्ष, मरी विगेरे मसालो नांखी रात्रे मुकी राख्युं होय ते बीजे दिवसे सवारे काममा आवे ते) इत्यादि लोक

जाषाये कहे बे, तेने (करंब के०) करंबो कहीये, बीजुं खांड नांखीने हाथथी मथन करेलुं दहीं तथा खांडयुक्त मथेलुं (बणी काढेलुं दहीं) तेने (सिहरिणी के०) शिखरिणी कहीये, त्रीजुं लूणमा कण नांखीने मथेलुं वस्त्रे अणगलयुं जे दहीं, ते (सलवणदहि के०) लवणसहित दधि कहीये, चोथुं लुगडाथी गाणेलुं, मथेलुं दहीं तेने (घोल के०) घोळेलुं दहीं कहीये, पांचमुं दहींना घोलयुक्त वटक(वडां) करवां ते कांजीवडां, दहीं वडां तथा दहीं गाणीने तपावे, पछी मांहे वडां नांखे, तेने (घोलवडा के०) घोलवडां कहीये. इहां विवेकीने एटलुं विशेष के जिहां विदल-युक्त करवुं पडे, तिहां दहीं तथा बास जे वडामांहे नांखवी होय तेने सारी रीते ऊष्ण करी नांखीये तेवारे श्रावकने जक्षण करवा योग्य थाय, अन्यथा घोलवडां बावीश अजक्ष्यमां गणाय ते जक्षण करवा योग्य नथी. अकल्पनीय जाणवां ॥ ३३ ॥

हवे तेल तथा गोल विगइना पांच पांच
निवीयाता कहे छे.

तिलकुट्टी निब्भंजण, पक्कतिल पक्कुसहि-
तरिय तिल्लमली ॥ सक्कर गुलवाणय पा,-य खंड
अधकढिय इक्कुरसो ॥ ३४ ॥

अर्थ—प्रथम (तिलकुट्टी के०) तिल तथा
गोल कूटीने खांडीने एकठां करिये, ते तिलवट
कहीये, बीजुं तल्या पक्वान्नथी उतरेलुं, दाझेलुं-
बलेलुं तेल एटले पक्वान्ननुं तलण जाणवुं,
अथवा केरी प्रमुखादिकना सरसीयादिक तेल
ते (निब्भंजण के०)निब्भंजण एटले निर्भंजन
जाणवुं, त्रीजुं सर्व औषधवाळां तेल एटले ला-
क्षादिक द्रव्यथी पकावेलां तेलने (पक्कतिल
के०) औषधपक्व तेल कहिये, चोथुं तेलमांहे
नारायणादिक औषधी पचाव्या पछी औषध
उपर तरी वळे ते (पक्कुसहितरिय के०)
पक्वौषधितरित तेल एटले पक्वौषधिथी

वलेली तरि कहीये. पांचमुं (तिल्लमली के०) तेलनी मली एटले तेलनो मेल—कीटी जाणवी. ए पांच नीवियाता तेलनां जाणवां. एना पण भेदांतरे घणा भेदो थाय.

हवे गोळना नीवियाता कहे छे. एक (सक्कर के०) साकर—मिश्री, बीजो (गुलवाणय के०) गोलवाणी तथा रांधेलुं गलमाणुं अखात्रीजे कराय छे ते देश प्रसिद्ध छे, त्रीजो (पाय के०) गोलनी पांति (चासणी) ते पाकगुरु जेणे करी खाजादिक लेपीये छीये, एने मालवादिक देशने विषे काकबपांति एम भाषाये कहे छे, चोथो (खंरु के०) खांडनी सर्वजाति, पांचमो (अधकढिय इक्कुरसो के०) अर्धो कढेलो इक्षु एटले सेलडी तेनो रस ए पांच भेद नीवियाता गोलना जाणवा. एना पण भेदांतर घणा थाय छे ॥ ३४ ॥

हवे कडाविगइना पांच नीवियाता कहे छे.

पूरियतवपूआ बिय, पूअ तन्नेह तुरिय

घाणाई ॥ गुलहाणी जललप्पसि, य पंचमो पूत्तिकय-पूउं ॥ ३५ ॥

अर्थ-(पूरिअतवपूआ के०) पूर्यो एटले ढांक्यो छे सर्व तावडो जेणे एवा पूडला उपर (बिअपूअ के०) बीजो पुडलो तली काढीये, ते बीजो पूडलो नीवीयातो जाणवो, एटले घृतादिक पूरित एवो जे तवो तेने विषे एक पूपे करी पूर्यो समस्त तवो तेहमां एक वार तली, वली तेहिज पूपिकादिक पर्पटकादिके अपूरित स्नेह-तेल एवा तवामां बीजी वार तथा त्रीजी वार क्षेपवीने तली काढीये जे पक्वान ते निवीयातुं जाणवुं.

बीजुं (तन्नेह के०) तेथी अन्य एटले त्रण घाण तली काढया पछी उपरांत बीजुं घृत क्षेप्युं नथी एवुं जे तवामांहेलुं मूलगुं घृत एटले त्रण घाणनां तलणना घृत मांहे तल्या जे(तुरियघाणाई के०)चोथा घाणवा आदिक ते सर्व बीजुं नीवीयातुं जाणवुं, तथा त्रीजुं (गुलहाणी के०)

गोळधाणी करवी, ते त्रीजुं निवीयातुं जाणवुं.

चोथुं सुकुमारिकादिक काढ्या पछी एटले पक्वान्न तळो काढ्या पछी उद्धृत (वधेलुं) जे घृतादिक तेणे करी खरडेलो जे तवो तेने विषे पाणी साथे रांधी एवी जे लापसी, गहूंनुं ऊरण गोळनुं पाणी घृतादिक भेळीने सीजवे छे, एने मरुदेशे प्रसिद्धपणे लापसी तथा लगतु कहे छे ते (जललपसिय के०) जळ लापसी निवीयातुं जाणवुं. एटले तावडीनी चीगट टालवा सारुं मांहे लोट नांखी पाणी साथे लापसी करीये ते जाणवी. (पंचमो के०) पांचमुं (पुत्तिकयपूउ के०) पोतकृत पूरलो ते घृत तेले खरडेला तवाने वीषे गुडाकिनुं पोतुं आपी गल्या पुरा करे छे, एटले पक्वान्न तल्या पछी खरड्या ताव्या मांहे मोळादिकनुं पोतुं देइने पुडलो सीजवीये ते निवीयातुं जाणवुं ॥ ए छ जण्ह विगयना त्रीश निवीयातां कह्यां.

जिहां घी अने तेलमां पाणीनो भाग आवे ते नीवियाता तल्या चणादि सर्व जाणवा, अने जे कढाइमांहेथी घी तथा तेल उपर फरी वळे नही, चिलगिलाट न थाय एवुं तळेलुं होय, ते पण विगयातुं नही कहेवाय. इत्यादिक परंपरागत लेवानो विचार बहु प्रकारे छे, ते गच्छ समाचारीगत प्रसंगथी योगादिकमांहे कल्पाकल्प विभागे लखीये छैये.

लहचूई,पूपिकादि, पोतकृतपूपक, वेढमी, तद्दिनकृत करंब, घोलफूलवघारित पूरण, वघारिका, पटीरढी, मथित अगलित तक्रादिक, 'कस्मिन्नपि योगे' कोइ पण योगने विषे न कल्पे अनेरी योग विना निवीमां कल्पे.

'लहिंगडुं, ढोढरी, वघारिक वडां घारवडां, साज्यपक्व खीचडी, सेवतिका, वघारित चणकादिक, उत्तराध्ययन योगने विषे आचारांग मध्यगत सप्तसप्तकाध्ययनने विषे चमरोद्देशक

१ जुवारना आटानी राब.

अनुज्ञा यावत् भगवतीयोगने विषे न कल्पे, बीजा सर्व योगमध्ये कल्पे.

पुढोगरी अने फूंकरणुं, उकलधुं, वाशी करंब, तिलवटी, कुल्लर, निवीयातां त्रिगर गांठीयाना घारा, दलिया, गुंदविना मगीयादि, औषधादि मोदक, पेटक खंभा, सिता, वरिसोलां, वासी गुरुपाक, गुंद·ाक, वगर तल्यां कांकरियां, अनु(त्)कालित इक्षुरस, दिनत्रयावधि प्रसूत गोदुग्ध बलहट्टी, अंगाराथी उतारी आज्यादि मिश्रित पाछला दिवसनी पचावेली तिलवटी, पर्पटीकादि, गुडादिके मिश्रित न करेली ते दिवसे करेल तिलवटी, इत्यादिक नीवीयातां श्रीआवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययनादि सर्व योगने विषे प्रायः कल्पे. एवो विचार प्रसंगथी जाणवा माटे लख्यो छे॥३५॥

हवे गिहत्थसंसठ्ठेणं ए आगारवडे नीवीनां पच्चक्खाणमांहे जे नीवीयातां साधुने कल्पे, ते संसृष्ट द्रव्य कहीये, ते संसृष्ट द्रव्य जाणवाने कहे छे.

दुद्ध दही चउरंगुल, दवगुम घय तिल्ल एग भत्तुवरिं ॥ पिंमगुल मरकणाणं, अद्दामलयं च संसठं ॥ ३६ ॥

अर्थ-(दुद्ध के०) दुग्ध अने (दही के०) दधि मांहे कूर प्रमुख नाखीये एटले दूध दहीं मिश्रित कुरादिक होय, ते जो दूध तथा दहीं कुरथी (चउरंगुल के०) चार अंगुल उपर चमे तेने संसृष्ट द्रव्य कहीये, ते नीवियातुं नीवीमां कल्पे एटले भात, रोटली उपर दूध, दहीं, चार अंगुल प्रमाण उंचुं चड्युं होय, तो नीवीप्रमुख मांहे साधुने कल्पे अने चार अंगुलथी अधिक पांच आदिक अंगुलना प्रारंभथी जेवारे उंचुं चमे, तेवारे ते विगइ जाणवुं, माटे ते न कल्पे.

अने (दवगुरू के०) द्रव्यगोल एटले ढीलो नरम गोळ अने (घय के०) घृत (तिल्ल के०) तेल ए त्रणे ज्यां सुधी (भत्तुवरिं के०) भक्त जे भात अथवा रोटली ते उपरे (एग के०) एक अंगुल प्रमाण उंचां चड्यां होय त्यां सुधी

संसृष्ट द्रव्य कहेवाय, एटले नीवियातुं कहे-
वाय, ते लेवुं कल्पे अने बीजा अंगुलथी प्रारं-
भीने उंचा चमेलां देखाय, तवारे विकृत द्रव्य
एटले विगय द्रव्य जाणवां, ते लेवां क-
ल्पे नहीं.

(पिंमगुल के०) पिंमगोल एटले काग
गोल साथे (मरकणाणं के०) मसल्युं जे चू-
रमुं प्रमुख तेमांहे (अद्दामलयं के०) आर्द्रा-
मलक एटले शण पीलुना महोर ते समान न-
हाना कणीयाना जेवा प्रमाणवाला एवा गोलना
बहु खंम रहे, तो पण तेने (च के०) वली
(संसठं के०) संसृष्ट द्रव्य कहिये. ते नीवी-
यातामांहे लेवा कल्पे परंतु एथी महोटा खंम
गोलना रहे तो ते विकृतिगत जाणवा, ते
कल्पे नहीं ॥ ३६ ॥

हवे वली एहिज नीवियातानुं स्वरूप दर्शाववा
कांइक विशेष कहे छे.

दव्वहया विगइ विगइ-गयं पुणो तेण तं

हयं दव्वं ॥ उद्धरिए तत्तंम्मिय, उक्किठ-दव्वं इमं चन्ने ॥ ३७ ॥

अर्थ-(दव्व के०) द्रव्य जे कलम शाली चोखा प्रमुख तेणे (हया के०) हणी निर्वीर्य करी एवी जे क्षीरादिक (विगइ के०) विगइ तथा कणिकादिके हणी एवी जे घृतादिक विगइ तेने (विगइगयं के०) विकृतिगत एटले नीवियातुं कहीये. (तेण के०) ते कारण माटे (पुणो के०) वली ते तंडुलादिक हणयुं एवुं जे विकृतिगत (तं के०) तेने (हयं दव्वं के०) हत द्रव्य कहीये. तथा सूखडी तावडामांहेथी (उद्धरिए के०) उद्धर्या पछी एटले सूखडी काहाडी लीधा पछी उगर्युं जे घृत (तत् के०) ते टाढुं थया पछी (तम्मिय के०) तेमां लोट नांखीने हलाविये ते (उक्किठदव्वं के०) उत्कृष्ट द्रव्य कहेवाय एटले विगय जाणवुं (इमं चन्ने के०) एम अनेरा आचार्य कहे छे. इति गाथार्थः ॥ ३७ ॥

इहां भावार्थ ए छे जे अन्न प्रमुख द्रव्ये विगइना पुद्गल हएया, तेवारे विगयनो स्वाद फरी गयो, तेथी ते नीवीयातुं कहेवाय. परंतु विगइ न कहेवाय, एटला माटे ते नीवीना पच्चरकाण वालाने लेवी कल्पे.

अने सुकुमारिकादिक सुखडीने तावडामां-हेथी काढ्या पछी उगर्युं जे घृतादिक तेने विषे चूला उपर छते अग्निसंयोगथी तपे थके तेमांहे क्षेपव्युं जे कणिकादिक दल प्रमुख तेने उत्कृष्ट द्रव्य कहीये, ते विकृतिगत जाणवुं. ते केम ? चूरिम पूर्वे कडाह विगइ थई भग्न कणिका कीधी ते उष्ण घृत गोल परस्परे द्रव्य हत थइने पछी तेमां कणिका क्षेप करी मोदक बांध्या एवुं जे चुरमादिक ते विकृतिगत जाणवुं, पण विगय समजवी नहि, एनुं नाम उत्कृष्ट द्रव्य जाणवुं. एम केटलाएक आचार्य कहे छे. नामांतरे गीतार्थाभिप्राये तो एम के जो चु-ल्हाना माथाथी उतर्या पछी शीत थया केडे

जे कणिकादिक क्षेपवीये, ते तथाविध पाका-
भावथी विकृतिगत कहीये, अन्यथा परिपक्व
विशेष थये द्रव्यगत कहीये, पण विगइ तथा
निर्विकृतिक न कहीये, एवुं व्याख्यान प्रवचन-
सारोद्धारवृत्तिना अभिप्रायथी लख्युं छे, पण
तिहां एम कह्युं छे, जे पंडितोए भली परें विचा-
रवुं, जे माटे निर्विकृतिक अनेक भेद छे ते
बहुश्रुतनी आचरणा परंपराथी जाणवां ॥३७॥
हवे केटलीएक वस्तुनां नाम उत्तम द्रव्य कह्यां
छे, ते देखाडे छे,

तिलसंकुलि वरसोलाई, रायणंबाइ दरक-
वाणाई ॥ मोलीतिल्लाईया, सरसुत्तम दव्व
लेवकडा ॥ ३८ ॥

अर्थ-(तिल के०) तेलथी नीपनी एवी
(संकुलि के०) तिल सांकली तथा खारेक,
टोपरा, सिंगोडा प्रमुख नाहोलानां हारडा तेने
(वरसोलाई के०) वरसोलां कहीये, अने आ-
दिशब्दथकी साकर खांडना विकार साकरीया

पापड, नालिकेर, खांड, [illegible], पाक, सर्व मेवा प्रमुख, तथा (रायण के०) रायण (अंबाइ के०) आंबादिक घटले आम्रादिक फल सर्व अचित्त कर्यां पाकादिके नीपजाव्यां मधुकादिकनां, नालिकेरादिकनां, (द [illegible]ई के०) द्राखवाणी प्रमुख, [illegible] वाणी प्रमुख (डोलीतिल्लाईया के०)मोली (महुमां) नुं तेल, आदि शब्दथकी नालिकेर, सरशव, प्रमुखनुं तेल, एरंड प्रमुखनुं तेल जाणवुं. अक्खोडादिक मेवा हलवा प्रमुख ए सर्व (सरसुत्तम दव्व के०) सरस उत्तम द्रव्य कहीये तथा एने (लेवकडा के०) लेपकृत पण कहीये. ए नीवीमां कल्पनीय जाणवां ॥ ३७ ॥

हवे ए सर्व पदार्थ कारणे लेवां कल्पे, पण सहजपणे रसगृद्धताये लेवां कल्पे नहीं, ते कहे छे.

विगइगया संसट्ठा, उत्तमदव्वाइ निविगइयंमि ॥ कारणजायं मुत्तुं, कप्पंति न भुत्तुं जं वुत्तं ॥ ३८ ॥

अर्थ—एक (विगइगया के०) विकृतिगता एटले दूध प्रमुख विगइथी उत्पन्न थया जे मी-वीयाता जे संख्याये त्रीश पूर्वे कह्या छे ते, बीजा (संसठ्ठा के०) संसृष्ट द्रव्य जे करंबादिक, मगदल, पापडी पिंडादिक, त्रीजा (उत्तम दव्वाइं के०) उत्तम द्रव्यादिक ते तिलसांकली, साकर, मेवादिक सरसोत्तम द्रव्य जे पूर्वे कही आव्या ते ए त्रण प्रकारनी वस्तु ते (निव्विगइयंमि के०) नीवीना पच्चक्खाणने विषे कोइ (कारण-जायं के०) कारणजातं एटले पुष्टालंबन विशेष प्रयोजनरूप वातादिक कारण (मुत्तुं के०) मूकीने, साधुने (भुत्तुं के०) भोगववुं, लेवुं (न के०) नहीं (कप्पंति के०) कल्पे. जेमे जाव-जीव सुधी छ विगयनां पच्चक्खाण होय, किं वा तथाविध विशेष तपे उजमाल होय, किंवा वैयाव— करवाने उजमाल होय, ज्ञानादिकनो उद्यमी होय, तेवारे शरीरे ग्लानादिक निमित्ते औषधादिक कारणे लेवां कल्पे, अन्यथा कारण

विना लेवा कल्पे नही. (जं के०) जेमाटे (वुत्तं के०) कह्युं छे, ते आगली गाथाये कहे छे. ॥ ३ए ॥

विगइं विगइभीउ, विगइगयं जो अ भुंजए साहू ॥ विगई विगइसहावा, विगई विगइं बला नेइ ॥ ४० ॥

अर्थ—(विगइं के०) दूध प्रमुख जे विगइ छे ते प्रत्ये अने (विगइगयं के०) विकृतिगत जे क्षीरादिक त्रिविध द्रव्य नीवीयाता कह्या छे ते प्रत्ये (विगइ के०) विगति एटले विरुद्धगति ते नरक, तिर्यंच, कुदेव, कुमाणसत्व रूप जे माठी गतियो छे तेनाथकी (भीउ के०) भीती राखतो एटले बीहीतो अथवा संयम ते गति अने तेनो प्रतिपक्षी जे असंयम ते विगति जाणवी, तेवी विरुद्धगतिथकी बीहितो एवो (जो के०) जे (अ के०) वली (साहू के०) साधु ते (भुंजए के०) भुंजे एटले खाय ते साधुने (विगई के०) विगइ

ते (विगइं के०) विगति जे नरकादिकनी विरुद्ध गति तेने विषे (बला के०) बलात्कारे एटले ते साधु जो के दुर्गतिमां जवाने नथी वांछतो तो पण बलात्कारे तेने माठी गति प्रत्ये (नेइ के०) पहोंचाडे. ते (विगई के०) विगइ केहेवी छे ? तो के (विगइसहावा के०) विकृति स्वन्नाव, एटले विकार उपजाववानो स्वन्नाव छे जेने एवी छे. केम के ए विकृत ते अवश्य शब्दादिक कामन्नोगने वधारे एवी छे, माटे कारण विना विगयादिक न लेवां, अने श्रावकने पण निवी प्रमुखने पच्चरकाणे कोइ महोटा कारण विना तथा विशेष तप विना नीवियाता लेवा कल्पे नहि, एनो विस्तार श्रीआवश्यकनिर्युक्तिनी वृत्तिथी तथा प्रवचनसारोद्धारनी वृत्तिआदिक ग्रंथथी जाणवो. अहीं संक्षेप मात्र लख्यो छे ॥ ४० ॥

हवे चार अन्नक्ष्य विगय छे, तेना उत्तर न्नेद कहे छे.

कुत्तिय मच्छिय ज्ञामर, महु तिहा कठ पिठ मज्ज डुहा ॥ जल-थल-खगमंस तिहा, घय-घ मक्कण चउ अनक्का ॥४१॥ दारं ॥६॥

अर्थ-तिहां प्रथम मधु विगयना ज्ञेद कहे छे. एक (कुत्तिय के०) कुत्तां-बगतरां जंगल मध्ये थाय छे ते वर्षाकाले विशेष थाय छे, तेहनुं मध, बीजुं (मच्छिय के०) माखीनुं मध, अने त्रीजुं (ज्ञामर के०) ज्ञमरानुं मध एवं (तिहा के०) त्रण प्रकारनुं (महु के०) मधु एटले मध जाणवुं, तथा एक (कठ के०) काष्ठ ते धाउडी प्रमुख काष्टथी, महुडादिकथी नीपन्युं मद्य, बीजुं (पिठ के०) पिष्ट ते ज्वारप्रमुखना आटादिकथी नीपनी मदिरा ए (मज्ज के०) मद्य अेटले मदिरा ते (डुहा के०) बे प्रकारनी जाणवी. हवे मांसना ज्ञेद कहे छे. एक (जल के०) जलचर जीव जे मत्स्यादिक तेनुं. बीजुं (थल के०) स्थलचर जीव जे द्विपदचतुष्पदादिक तेनुं, त्रीजुं (खग

के०) खेचर जीव जे पक्षीआदिक तेनुं, ए (तिहा के०) त्रिधा एटले त्रण प्रकारनुं (मंस के०) मांस जाणवुं, तथा (घयव के०) घृतवत् एटले जेम घृत, गाय भेंष गाडरी अने बाली ए चार प्रकारे कह्युं तेम (मक्कण के०) माखण पण एहज चार प्रकारनुं जाणवुं, पण एटलुं विशेष के जे माखण छे, ते सर्व (चउ अभक्का के०) चारे प्रकारनुं अभक्ष्यज छे. अने घृत जे छे, ते चारे प्रकारनुं भक्ष्य विगयमां कह्युं छे. जे माटे बोज थइ खटाशे चलित रसपणुं पामीये एवी एक मदिरा, बीजुं छासथी बाहेर नीकल्युं एवुं माखण, त्रीजुं जीवित शरीरथी अलगुं थयुं एवुं मांस, रुधिर ते पण एमज जाणवुं, तथा चोथुं मधुपुष्पथी उपन्युं मधु, ए चारे पदार्थोने विषे अंतरमुहूर्त्त मध्ये असंख्याता बे इंद्रिय जीव उपजे, तेमां मांसपेशीमध्ये तो पक्क तथा अपक्व तथा अग्नि उपरे पच्यमान एवा थका पण तेमांहे

असंख्य बे इंद्रिय तथा पंचेंद्रिय तथा निगोद जीव अनंता पण पोते पोतानी मेले उपजता कह्या छे, ते माटे ए चार विगय जे छे, ते सर्वथा अभक्ष्य वर्जनीय कही छे. ए त्रीश निविगइनुं छठ्ठुं द्वार पूर्ण थयुं. उत्तर बोल ७० थया ॥ ४१ ॥

हवे पच्चक्खाणना बे भांगानुं सातमुं द्वार कहे छे.

पच्चक्खाण बे भेदे छे, एक मूलगुणरुप अने बीजुं उत्तरगुणरुप. तिहां साधुने मूलगुण ते पांच महाव्रत अने उत्तरगुण ते पिंडविशुद्ध्यादिक जाणवां, तथा श्रावकने मूलगुण ते पांच अणुव्रत अने उत्तरगुण ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत जाणवां. तिहां सर्व पच्चक्खाणादिक तेहना भांगा जे रीते थाय, ते रीते कहे छे.

तेमां सर्व उत्तरगुण पच्चक्खाण अनागतादिक दश प्रकारे पूर्वे कह्यां, अने देशोत्तर गुण

पच्चरकाण सात प्रकारे—ते त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत मली थाय. तथा वली एक इत्वर अने बीजुं यावत्कथिक, ए बे जेदे उत्तर गुण प्रत्याख्यान, तेमां साधुने इत्वरगुण पच्च-रकाण ते कांइक अजिग्रहादिक जाणवां, अने यावत्कथिक ते पिंमविशुद्ध्यादिक तथा अजि-यंत्रितादिक जे डुर्जिक्षादिके पण अजग्न होय—जंग न थाय, ते सर्व यावत्कथिक जाणवां; अने श्रावकने तो इत्वर ते चार शिक्षाव्रतादिक ठे अने यावत्कथिक त्रण गुणव्रतादिक ठे. ते श्रावक बे जेदे ठे, एक अविरति सम्यग्दृष्टि ते केवल सम्यग्दर्शन युक्त कृष्ण श्रेणिकादि-कनी परे जाणवा, अने बीजा विरति सम्यग्-दृष्टि ते वली बे जेदे एक साजिग्रही अने बीजा निरजिग्रही.

ते वली विजज्यमान थका आठ जेद थाय, ते केवी रीते? तो के एक डुविध त्रिविध, बीजो द्विविध द्विविध, त्रीजो द्विविध एकविध,

चोथो एकविध त्रिविध, पांचमो एकविध द्वि-विध, ठगो एकविध एकविध, ए ठ न्नांगा पांच व्रत आश्रयी थाय, अने कोइएक उत्तरगुण-मांहेलुं कोइएक व्रत लीये, ते सातमो न्नांगो जाणवो, अने आठमो न्नांगो कोइ नियम मात्र नज लीये ते जाणवो. ए रीते पुर्वोक्त पाच अणुव्रतादिक तेने ठ न्नांगे गुणीये तेवारे त्रीश न्नंग थाय, तेनी साथे एक उत्तरगुणनो न्नांगो मेलवीये, तेवारे एकत्रीश न्नांगा थाय, तेनी साथे वली कोइ नियम मात्र व्रत न लीये, तेनो एक न्नांगो मेलवीये तेवारे बत्रीश न्नेद श्रावक सम्यग्दर्शनी शंका कांक्षादि रहित अमूढदृष्टिपणे जाणवा. इत्यादिक न्नेदनी वक्त-व्यता बहु ठे, पण इहां मुख्यताये उंगणप ास न्नांगा थाय, ते न्नांगा गाथाना अर्थे कहे ठे.

मण वयण काय मणवय, मणतणु वय-तणु । तिजोगि सगि सत्त ॥ कर कारणुमइ डु-तिजुय, तिकालि सीयालन्नंगसयं ॥ ४२ ॥

अर्थ—एक प्राणातिपातादिकने (मण के०) मने करी न करुं, बीजो (वयण के०) वचने करी न करुं, त्रीजो (काय के०) कायाये करी न करुं, चोथो (मणवय के०) मन अने वचने करी न करुं. पांचमो (मणतणु के०) मन अने कायाये करी न करुं, छट्ठो (वयतणु के०) वचन अने कायाये करी न करुं, सातमो (तिजोगि के०) मन, वचन अने काया, ए त्रणे योगे करी न करुं, ए एक संयोगी (सगि के०) सात जांगा थया.

ते सात जांगा (कर के०) करवा आश्रयी जाणवा. तेमज (सत्त के०) सात जांगा (कार के०) करावचा आश्रयी जाणवा, अने सात जांगा (अणुमइ के०) अनुमति आपवान एटले अनुमोदन देवाना पण जाणवा.

ते आवी रीते के—प्राणातिपातादिकने मने करी न करावुं, बीजो वचने करी न करावुं, त्रीजो कायाये करी न करावुं, चोथो मन

अने वचने करी न करावुं, पांचमो मन अने कायाये करी न करावुं, छठो वचन अने कायाये करी न करावुं, सातमो मन, वचन अने कायाये करी न करावुं, ए सात करावबाना जांगा कह्या. हवे सात अनुमोदवाना कहे छे. एक प्राणातिपातादिकने मने करी न अनुमोदुं; बीजो वचने करी न अनुमोदुं. त्रीजो कायाये करी न अनुमोदुं, चोथो मन अने वचने करी न अनुमोदुं, पांचमो मन अने कायाये करी न अनुमोदुं, छठो वचन अने कायाये करी न अनुमोदुं, सातमो मन, वचन अने कायाये करी न अनुमोदुं, ए सात जांगा अनुमोदन देवाआश्रयी कह्या, एम सात करवाना, सात करावबाना अने सात अनुमोदवाना मली एकवीश जांगा थया.

हवे (छुतिजुअ के०) छिक त्रिक योग सहित सात सात जांगा करीये, ते आवी रीते के–एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं,

न करावुं. बीजो वचने करी न करुं, न करावुं. त्रीजो कायाये करी न करुं न करावुं. चोथो मन अने वचने करी न करुं, न करावुं. पांचमो मन अने कायाये करी न करुं, न करावुं. छठो वचन अने कायाये करी न करुं, न करावुं. सातमो मन, वचन अने काया, ए त्रणे करी न करुं, न करावुं. ए करवा करावबा आश्री सात भेद कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न अनुमोदुं; बीजो वचने करी न करुं, न अनुमोदुं; त्रीजो कायाये करी न करुं, न अनुमोदुं; चोथो मन अने वचने करी न करुं न अनुमोदुं; पांचमो मन अने कायाये करी न करुं न अनुमोदुं; छठो वचन अने कायाये करी न करुं, न अनुमोदुं; सातमो मन वचन अने काया, ए त्रणे करी न करुं, न अनुमोदुं. ए सात भंग न करवा तथा न अनुमोदवा आश्री कह्या. तथा एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करावुं, न

अनुमोदुं; बीजो वचने करी न करावुं, न अनु-मोदुं; त्रीजो कायाये करी न करावुं, न अनु-मोदुं; चोथो मने वचने करी न करावुं, न अनुमोदुं; पांचमो मने कायाये करी न करावुं, न अनुमोदुं; छठो वचने कायाये करी न करावुं, न अनुमोदुं; सातमो मन, वचन अने कायाये करी न करावुं, न अनुमोदुं; ए न करावववा न अनुमोदवा आश्री सात ज्ञंग कह्या. एम सात न करवा न करावववा आश्री अने सात न करवा न अनुमोदवा आश्री तथा सात न करावववा न अनुमोदवा आश्री. एवं सर्व मली द्विकसंयोगे एकवीश ज्ञंग थया. तेनी साथे पूर्वोक्त एक संयोगना एकवीश मेलवतां, बहेंतालीश ज्ञांगा थया.

हवे त्रिक संयोगे सात ज्ञंग थाय, ते कहे छे. एक प्राणातिपातादिकने मने करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोडुं; बीजो वचने करी न करुं, न करावुं अने न अनुमोदुं; त्रीजो

कायाये करी न करुं, न करावुं अने न अनुमो-
दुं; चोथो मन अने वचने करी, न करुं, न
करावुं अने न अनुमोदुं; पांचमो मन, अने
कायाये करी न करुं, न करावुं अने न अनु-
मोदुं; छठो वचन अने कायाये करी न करुं,
न करावुं अने न अनुमोदुं. सातमो मन, व-
चन अने कायाये करी न करुं, न करावुं अने
न अनुमोदुं; ए त्रिकसंयोगी सात भांगा थया.
ते पूर्वोक्त बहेंतालीश साथे मेलवतां सर्व म-
ली ओगणपचास भांगारूप ते अणुव्रत, गुण-
व्रत अने अभिग्रहादिकना भेद उपजे, तेने
(तिकालि के०) त्रण काल ते अतीत, अना-
गत अने वर्त्तमान, ए त्रण काले करी गुणीये,
तेवारे (सीयालभंगसयं के०) एकसोने सुड-
तालीश (१४७) भांगा थाय. माटे जे एटला
भांगा जाणे, ते पच्चक्खाणनो कुशल कहीये.
यडुक्तं ॥ सीयालं भंगसयं, जस्स विसुद्धिए
होइ उवलद्धं॥सो खलु पच्चक्खाणे, कुसलो सेसा

अकुसला य ॥१॥ इति ॥ एना विशेषे भांगा षड्भंगीना श्रावकना व्रत संबंधी थाय ते कहे छे. गाथा ॥ तेरसकोमी सयाइं, चुलसीइं जुयाई बारसय लस्का ॥ सत्तासीइ सहस्सा, दोय सया तह डुरग्गहिया ॥ १ ॥ तेरशें कोमी, चोरासी कोमी, बारलाख सत्यासी हजार बशें ने बे थाय. एमज नवभंगीना नवाणुं हजार नवशें ने नवाणुं कोडी, उपर नवाणुं लाख, नवाणुं हजार नवशें ने नवाणुं एटला भांगा थाय. ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए ए एमज एकवीश भंगी तथा ओगणपच्चास भंगीना विशेष भांगा थाय, ते सर्व आवश्यकबृहद्वृत्तिथी, तथा दीपिकाथी तथा प्रवचनसारोद्धारवृत्तिथी, तथा श्रावकव्रतभंगप्रकरणवृत्तिथी, तथा देवकुलिकाथकी जाणवा. ते पच्चक्खाणना कुशल होय, तेणे विचारवा.

हवे ए पच्चरकाणनुं स्वरूप कहे छे.

एयं च उत्तकाले, सयं च मणवयण तं

णाहिं पालणियं ॥ जाणगजाणगपासि,-त्ति भंगचउगे तिसु अणुन्ना ॥ ४२ ॥ दारं ॥ ३ ॥

अर्थ-(एयं च के०) ए पूर्वोक्त वळी (उत्तकाले के०) उक्तकाल जे पोरिसीयादिक काल प्रमाण रूप ते (सयं च के०) पोतानी मेळे जेवी रीते बोल्युं होय-यथोक्तरूपे जे भंगादिके लीधुं होय, ते भंगादिके (मणवयण-तणूहिं के०) मन, वचन अने कायाये करी (पालणियं के०) पालवा योग्य छे-पाळवुं.[1] ते (जाणगजाणग पासि के०) जाण, अजाण्या पासे करे (इत्ति के०) एम (भंगचउगे के०) भंगच-

---

[1]अहीं कोइ शंका करे के प्राणातिपातना व्रतवाळो जेम व्रत भंगना भयथी हिंसा करावे नहि तेम व्रतपच्चख्खाण वाळाने पण बीजाने आहार वहोराववो युक्त नथी. तेनुं शास्त्रकार समाधान करे छे के-पच्चख्खाण त्रण करण अने त्रण योगे थतुं नथी. तेथी पच्चख्खाण छते व्रतवाळाने वैयावच्च करवी ए प्रधानतर गुण होवाथी, गुर्वादिकने आहार आपता दोष न लागे ला-भज थाय.

तुष्के एटले चार ज्ञांगाने विषे करे; तेमां (ति-
सु अणुन्ना के०) पहेला त्रण ज्ञांगाने विषे अ-
नुज्ञा एटले आज्ञा छे, एटले ए पच्चरकाणने क-
रवा करावववा रूप चउज्ञंगी थाय ते कहे छे.—
एक पच्चरकाणनो करनार शिष्य पण जाण
होय, अने बीजा पच्चरकाण करावनार गुरु पण
जाण होय, ए प्रथम ज्ञंग शुद्ध जाणवो. बीजो
प चरकाण करावनार गुरु जाण होय अने पच्च-
रकाण करनार शिष्य अजाण होय, ए बीजो
ज्ञांगो पण शुद्ध जाणवो. त्रीजो पच्चरकाण क-
रनार शिष्य जाण होय अने पच्चरकाणनो क-
रावनार गुरु अजाण होय, ए त्रीजो ज्ञांगो पण
शुद्ध जाणवो. चोथो पच्चरकाण करनार शिष्य
अने पच्चरकाण करावनार गुरु, ए बेहु अजाण
होय, ते चोथो ज्ञांगो अशुद्ध जाणवो. ए रीते
चार ज्ञागामाहेथी त्रण ज्ञागे पच्चरकाण कर-
वानी आज्ञा छे, अने चोथा ज्ञांगाने विषे आ-
ज्ञा नथी ॥ ए मूलगुण, उत्तरगुणरूप प च्चरका-

एनुं सातमुं द्वार थयुं. उत्तर भेद व्याशी थया ॥ ४३ ॥

हवे पूर्वोक्त भंगादिके विचारीने पण जेम संयमयोग हीन थाय नही, ते रीते पच्चक्खाण कीधुं थकुं पण छ प्रकारनी शुद्धिये करी सफल थाय, माटे पच्चक्खाणनी छ विशुद्धिनुं आठमुं द्वार कहे छे.

फासिय पालिय सोहिय, तीरिय किट्टिय आराहिय छ सुद्धं ॥ पच्चक्खाणं फासिय, विहि-णोचिय--कालि जं पत्तं ॥ ४४ ॥

अर्थ—एक (फासिय के०) स्पृष्टं एटले पच्चख्खाण फरश्युं, बीजुं (पालिय के०) पा-लित एटले पच्चक्खाण पाल्युं, त्रीजुं (सोहिय के०) शोभित एटले पच्चक्खाण शोभाव्युं, चोथुं (तीरिय के०) तीर्ण एटले पच्चख्खाण तीर्युं, पाचमुं (किट्टिय के०) कीर्त्तित एटले पच्च-ख्खाण कीर्त्युं, छठुं (आराहिय के०) आराधि-त एटले पच्चख्खाण आराध्युं ए (छ सुद्धं के०)

छ प्रकारनी शुद्धिए करी शुद्ध एवुं (प ्ख्खाणं के०) पच्चख्खाण, फलदायक होय. हवे ए छ विशुद्धिना अर्थ कहे छे.

तिहां प्रथम सम्यक् प्रकारे (विहिणोचिय-कालि के०) विधिये करी उचित काले एटले उचितवेलाये (जं पत्तं के०) जे पच्चख्खाण प्राप्त थयुं एटले सूर्योदयथी पहेलां प ्ख्खाण उचितकाले जे पाम्युं, एटले जे पच्चख्खाण कीधुं, ते यावन्मात्र जेटला काल लगण ग्रहण कर्युं, तावन्मात्र तेटला काल लगे पहोंचाड्युं तेने (फासिय के०) फरस्युं कहीये ॥ ४४ ॥

पालिय पुण पुण सरियं, सोहिय गुरुदत्त सेस भोयणज ॥ तीरिय समहियकाला, किट्टिय भोयणसमय सरणा ॥ ४५ ॥

अर्थ—बीजुं ज्यां लगे पच्चख्खाण पूरुं न थाय, तिहां लगे (पुणपुण के०) वारंवार उपयोग देइने सावधानताये (सरियं के०) संभार्यूं जे महारे अमुक पच्चख्खाण आजे छे, ए

रीते पच्चक्खाणने स्मरणमां राखवुं, ते (पालि-य के०) पाळ्युं कहीये.

बीजुं (सोहिय के०) शोभित एटले शो-भाव्युं, ते आहारादिक लाव्या होइये ते प्रथम (गुरुदत्त के०) गुर्वादिकने निमंत्री-आपीने पछी (सेस के०) शेष रह्युं होय जे (भोयण-उ के०) भोजन तेने पोते लेवा थकी, एटले पच्चक्खाण कीधुं छे ते पूरण थया पछी ते वस्तु लावी पहेला गुरुने आपी पछी पोते वावरे ते (सोहिय के०) पच्चक्खाण शोभाव्युं कहीये. चोथुं (समहियकाला के०) समधिककाल ते पच्चक्खाणनो काल पूर्ण थया पछी पण थोडो अ-धिक काल लगे धीरज राखीने सबुर करीने पछी पच्चक्खाण पारे तेने (तीरिय के०) पच्चक्खाण तीर्ण एटले तीर्युं कहीये. पांचमुं (भोयण-समय के०) भोजनना समयने विषे भोजननी वेलाये (संरणा के०) संभारवाथी, जे फलाणुं अ-मुक पच्चक्खाण हतुं, ते आज महारुं पूर्ण थयुं छे

माटे हवे अशन करुं! आरोगुं! निस्तारुं! इत्यादिक विनय भाषा साचवीने जमवुं, तेने (किट्टिय के०) पच्चरका ग कीर्त्युं कहीये ॥ ४५ ॥

इअ पडिअरिअं आरा,-हियं तु अहवा छ सुद्धि सद्दहणा ॥ जाणण विणयणुभासण, अणुपालण भावसुद्धित्ति ॥ ४६ ॥ दारं ॥ ए ॥

अर्थ—छठुं (इअ के०) ए सर्व प्रकारे करी (पडिअरियं के०) प्रतिचरितं एटले आचर्युं जे पच्चरकाण एटले ए सर्व प्रकारे संपूर्ण निश्राये पमाड्युं निराशंसपणे श्री जिनाज्ञा पालन पूर्वक संयमयात्रा निर्वाहक षट्कारण साधनपूर्वक अप्रमादपणे महोटा कर्म .यने कारणे थयुं तेने (आराहियं के०) आराधितं एटले आराध्युं कहिये. (अहवा के०) अथवा प्रकारांतरे करी (तु के०) वली पण पच्चरकाणनी (छ सुद्धि के०) छ शुद्धि कहे छे. प्रथम सम्यग्दर्शनी श्रद्धावंतना मुखथी पच्चरकाण करवुं, तेने निःशंकता आचारयुक्त

शुद्ध सद्दहणा पूर्वक करवुं, एटले करेला पच्चरकाण उपर शुद्ध भाव होय ते (सद्दहणा के०) सद्दहणा शुद्धि जाणवी. बीजी पच्चरकाणने द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावथी जाणीने तथा मूल उत्तरगुणे भेद भंगादिके जाणीने वली जाणनी पासे पच्चरकाण करे, ते (जाणण के०) जाणवापणुं ए बीजो अधिकार शुद्ध जाणवो. त्रीजी सुज्ञानादिक आचारसंयुक्त, अतिचार अविधि रहित गुरुनी पासे वांदणां देवा प्रमुख विनय साचवीने पच्चरकाण करवुं, ते (विणय के०) विनयशुद्धि जाणवी. चोथी गुर्वादिक कहेता होय ते प्रत्ये आगारादिकनुं पोते भांखवुं. एटले गुरु पच्चरकाण करावे अने पाछलथी पोते आगार उच्चरे, ते (अणुभासण के०) अनुभाषणशुद्धि जाणवी. पांचमी निराशंसपणे रूडी रीते पाले, जो विषम भय कष्ट आवी उपजे तो पण दृढ रहे, परंतु पच्चरकाण भंग न करे, पच्चरकाणथी चूके नहीं, ते (अ-

णुपालण के०) अनुपालणा शुद्धि जाणवी. वळी पूर्वोक्त सर्वप्रकारथी निर्जरारूप इहलोक परलोकनी वांछा रहितपणे आशंकादि दोषे करी रहित ते (भावसुद्धित्ति के०) भावशुद्धि छे, इति एटले एम जाणवुं. ए छ शुद्धि पण समस्त सर्वे पच्चक्खाणोने विषे जाणवी. एम भंगादि विशुद्धिना विस्तारनां बीजक ग्रंथांतरथी जाणवां. एटले ए आठमुं छ शुद्धिनु द्वार थयुं॥ उत्तर बोल अठाशी थया ॥ ४६ ॥

हवे पच्चक्खाणनुं फल बे प्रकारे थाय, तेनुं नवमुं द्वार कहे छे.

पच्चक्खाणस्स फलं, इह परलोए य होइ दुविहं तु ॥ इहलोए धम्मिल्लाइ, दामन्नगमाइ परलोए ॥ ४७ ॥ दारं ॥ ए ॥

अर्थ—(पच्चक्खाणस्स फलं के०) पच्चक्खाणनुं फल ते (इह परलोए य के०) इह लोक तथा परलोक आश्री (दुविहं तु के०) बे प्रकारनुं वळी (होइ के०) होय. तेमां कोइ-

एक प्राणीने इहलोके एज भवमां तुरत फल थाय अने कोइएकने परलोके एटले परभवे फल थाय, तिहां (इहलोए के०) आ लोकआश्रयी तो (धम्मिल्लाइ के०) धम्मिलादिकनो दृष्टांत वसुदेवहिंडीग्रंथथी जाणवो. एटले धम्मिल्ले उत्तरगुण पच्चख्खाण चारित्ररूप ब महीना पर्यंत आयंबिल प्रमुख तप कर्युं, तेथी तेहीज भवे घणी लब्धि उपनी, शरीरना मल मूत्र सर्व औषधरूप थयां, राजसंपदा भोगवी मोक्षपदवी पाम्यो अने (परलोए के०) परलोकनेविषे एटले परभवमां (दामन्नगमाइ के०) दामन्नकादि प्रमुखना एटले दामनक नामे व्यवहारीना पुत्रनो दृष्टांत श्रीआवश्यक निर्युक्तिप्रमुख ग्रंथथकी जाणवो. एटले पच्चक्खाण फलनुं नवमुं द्वार थयुं. उत्तर बोल नेवुं थया ॥ ४७ ॥

एमां आ नव आश्रयी पच्चक्खाणना फल संबंधी धम्मिल्लकुमारादिकनो दृष्टांत कह्यो छे,

तेनी कथा संक्षेपथी लखीये ठीए—कुशाग्र नगरमां सुरेंद्रदत्त नामे सार्थवाहनी सुजद्रा नामनी स्त्रीथी धम्मिल्ल नामे बहोंतर कलामां प्रवीण एवो पुत्र थयो. ते यौवनावस्था पाम्यो पण जितेंद्रिय होवाथी जोगने वांठतो नहोतो पण मातपिताए यशोमति कन्या साथे परणाव्यो. पठी बलात्कारे दुर्ललितागोष्ठि वेश्या पासे मुक्यो. त्यां वसंततिलका वेश्या साथे आसक्त थयो. बार वर्ष पठी तेने निर्धन जाणी अक्काए काढी मुक्यो. अनुक्रमे तेना मातपिता मरण पाम्या अने तेनी पत्नि पोताना पिताना घरे गइ एथी पोते दुःखित थइ मरणनी इछाये उद्यानमां गयो. त्यां अगरूदत्त राजर्षिने जोइ नमस्कार करी पोतानुं दुःख कह्युं जे स्त्री आसक्तने दुःखनुं शुं कहेवुं ? मुनिये पोतानुं चरित्र कही तेने प्रतिबोध्यो पण विषयनी इछा तृप्त थइ नहि. ठेवटे मुनिये कह्युं के तपवडे करीने इष्टनी प्राप्ति थाय ठे. एवुं सांजली

तेणे द्रव्य साधुलिंग लेइ ब मास लगी आयं-
बिल तप कीधो. पबी मुनिने नमी वेश मुकी
भूतगृह पर्वते गुफामां सुतो. त्यां देववाणी
थइ के ए तप प्रभावथी तुं विद्याधर राजानी
बत्रीश कन्या पामीश. एवा वखतमां कोइ स्त्री
गुफा द्वारे आवी कहेवा लागी, भो ! धम्मि-
ल्ल इंहा आवो, रथमां बेसो, एम सांभळी
रथे बेठो. प्रभाते पिशाच तुल्य देखी रथमां
रहेल धाव माताने निभ्रंछी. पबी आगळ चा-
लतां एक गाम आव्युं तिहां एक अश्वने स-
शल्य देखी धम्मिल्ले तेनी चिकित्सा करी, तेथी
अश्वना स्वामिए तेनो सत्कार कीधो, अने
रात्रि तिहां रह्या. धाव माताए कन्यानुं सर्व
स्वरुप कह्युं के मगधदेशना राजा शत्रुदमन-
नी पुत्री विमला नामनी पुरुष द्वेशीणी बे ते
सुरेंद्रदत्तना पुत्र धम्मिल्लने देखी अनुरागिणी
थइ अनें भूतगृहे पाणी ग्रहणनो संकेत कीधो
पण ते न आव्यो अने तमने आव्या देखी ते

विरक्त थइ. हुं तो एनी धाव माता बुं क्रमे क्रमे तमारा विषे एने रागिणी करीश. त्यार पछी तेओ चंपाये गया त्यां राजसुता कपिला साथे ते परण्यो. अनुक्रमे बे विद्याधर राजानी बत्रीश कन्याओने ते परण्यो. सर्व मळी पांत्रीश स्त्री साथे अनुक्रमे ज्ञोग ज्ञोगववा लाग्यो. एक वखते मुनिने आवेला जाणी बंदन करी पूर्वज्ञव संबधी पृछा करी तेवारे धर्मरुचि गुरुए कह्युं के पुलिंदना ज्ञवे पांच मत्स्यने बचाव्या, त्यांथी मरण पामी पल्लिपति सुत थइ अणसण करी मरण पामी, तुं धम्मिल्ल कुमार थयो. एवुं धर्मरुचि गुरुनुं वचन सांज्ञळी ते विरक्त थइ दीक्षा ग्रहण करी अच्युते गयो. तिहांथी महा विदेहमां सुकुल पामी बोधि लाज्ञ पामी चारित्र पाळी सिद्धि पदने वरशे.

अने परज्ञवे दामन्नकादिकने फल थयुं बे ते दामन्नकनो दृष्टांत संक्षेप मात्रे लखीये बीये— राजपुर नगरे एक कुलगर रहेतो हतो, तेनो

जिनदास नामे श्रावक मित्र हतो. तेनी संगतथी कोइक दिवसे ते साधु पासे गयो, अने त्यां मत्स्य-ना मांसनो नियम लीधो. अनुक्रमे दुर्भिक्ष थयुं, तेवारे घणा लोक मत्स्याहारी थके संबंधी पुरुषे बलात्कारे तेने द्रह समीपे आण्यो. तिहां ते जालमां नाखेला मत्स्यने जोइने मूकी आपे. एम त्रण दिवस सुधी बलात्कार कराव्यो, ते-वारे एक मत्स्यनी पांख त्रूटी देखी बलात्कारे तेथी निवर्त्यो. पछी अणसण लेइ मरण पामी राजगृह नगरे शेठनो पुत्र थयो. तेनुं दामन्नक नाम दीधुं. ते आठ वर्षनो थयो तेवारे तेनुं कुल मरकीना रोगथी मरण पाम्युं, उछिन्न थयुं; ते-वारे ते दामन्नक कोइ साग[illegible] व्यवहारीने घरे दुःखित थको रह्यो. एकदा साधुनुं युगल भिक्षाने अर्थे ते व्यवहारीने घेर आव्युं, तिहां ते बाल[illegible]ने देखीने परस्पर साधु बोल्या जे ए बालक ए घरनो स्वामी थशे. ते प्रछन्नप्र[illegible]त्ति घरना अधीशे जाणी, तेवारे अमर्षपणे करी ते

बालकने मारवा नणी अंत्यजने आप्यो. तेणे अभिज्ञान देखाडवा निमित्ते तेनी टचली अंगुली छेदी अने अतिशय नय देखाडी परहो काढ्यो. पछी ते बालक अनुक्रमे नाठो थको ते शेठनुं जिहां गोकुल छे, ते ग्रामे आव्यो. तिहां ते गोकुलना स्वामीये तेने स्वरूपवान् तथा विनीत देखी पुत्रपणे थाप्यो. अनुक्रमे यौवन पाम्यो. पछी केटलाएक वर्षांतरे तिहां सागरदत्त शेठ आव्यो, तेणे तेने देखीने उलख्यो, ते वारे कोइ कार्यनुं निमित्त करी लेख लखीने आप्यो, तेमां शेठे पोताना पुत्रने लख्युं जे एने विष आपजो. एवो लेख आपी पोताने नगरे मोकल्यो, ते श्रांत थयो थको उद्यानमांहे कामदेवना प्रासादे आवी सूतो. तिहा वरार्थिनी एवी शेठनी पुत्री कामदेव पूजवा आवी, तिहा तेणे तेने सूतो देखी कागलमा पोताना पिताना अक्षर देखी कागल वांच्यो. तेमां विष देवानुं लख्युं जोइने पोतानुं नाम

विषा ठे तेथी तेनी इच्छक थइ मनमा विचार्युं
जे महारा पिताये सुंदर स्वरूपवान् जाणी वर
मोकल्यो ठे, पण विष देजो एवुं लख्युं छे ते
महारा पिता कागल लखतां भूली गया ठे.
विषाने स्थानके विष लखाइ गयुं ठे अने
कामदेवे पण महारा उपर प्रसन्न थइने ए वर
मुजने आप्यो, माटे कागलमां विष लख्युं हतुं
तिहां विषा देजो एम कन्याये अंजन शला-
काये लखीने पाठो लेख तेने ठकाणे मूकी दीधो.
अनुक्रमे ते घेरं आव्यो, तिहां तरत लग्न लेइ
कन्या परणावीने जामाता कीधो. एवी वात
सांभलीने शेठ घेर आव्यो. क्रोधांत थको
कहेवा लाग्यो जे मातृपूजन निमित्ते पाणि ग्रहण
मांगलिक वधाववा भणी जमाइने मोकलो.
अने शेठ मारवा सारु अत्यंजने संकेत कराव्यो.
हवे ते मातृपूजन निमित्ते जांय एटला-
मां विकालवेला जाणी नवपरणीत हतो, माटे
शेठनो पुत्र कहेवा लाग्यो के तमारीवती हुं

मातृपूजन करवा जाजवुं, एम कही ते गयो. एटलामां वच्चे रस्तामां अंत्यजे तेनो संकेत जाणी ते शेठना पुत्रने जमाइ समजी मारी नांख्यो; न्नवितव्यताथी बलवत्तर कोइ नथी. पछी ते पुत्रमरणनुं वृत्तांत सांन्नलीनें हृदयस्फोट थइ शेठ पण मरण पाम्यो. अनुक्रमे घरनो स्वामी दामन्नक थयो. रुषिन्नाषित वचन अन्यथा न थाय.

अनुक्रमे एकदा पाछले पहोरे पाहरी देता एक मंगल पाठके गाथा कही. तद्यथा ॥ अणुपुंखमावहंतावि, अन्नबा तस्स बहु गुणा हुंति ॥ सुह डुरककम्म फुरंतो, जस्स कयंतो वहइ परकं ॥ १ ॥ ए गाथानो अर्थ सांन्नली एक लक्नुं दान दीधुं, एम त्रण वार कथा सांन्नली त्रण लक्ष दान दीधुं. राजाये ते वात वात सांन्नळीने पोतानी पासे तेन्गव्यो. पछी सर्व वीतक वात राजा आगल कही, राजा हर्ष पाम्यो थको तेने नगरशेठनी पदवीये स्था-

थो. एकदा गुरु आव्या सांजली वांदवा गया, तिहां धर्मदेशना सांभली अने पुरातन जव मत्स्य मांस पच्चक्खाणादिक सर्व सांजयुं, तेथी बोधिलाज पाम्यो; धर्मानुष्ठान साचवी देवलोके गयो. तिहांथी महाविदेहमां सुकुलमां उपजशे, तिहां बोधिलाज पामी चारित्र लही केवलज्ञान पामी परंपराये मोक्षसुख पामशे, अने केटलाएक तेहीज जवे सिद्धि पामे. ए बे प्रकारे फलनुं नवमुं द्वार थयुं ॥

एटले सर्व मुलगुण प्रत्याख्यान सर्व उत्तरगुण प्रत्याख्यान तथा अजिग्रहादिक देश उत्तरगुण पण होय, अने श्रावकने देश मूलगुण प्रत्याख्यान ते अणुव्रत तथा देश उत्तर गुण प्रत्याख्यान ते गुणव्रत अने शिक्षाव्रत जाणवां. ते वली बे बे जेदे. एक इत्वर ते त्रणकालि अनागतादि पच्चक्खाण मूल उत्तर गुण पच्चक्खाण अने देश उत्तरगुण पच्चक्खाण ते शिक्षाव्रतादि तथा देशे मूलगुण पच्चक्खाण अने सर्व-

थी उत्तरगुण पच्चक्खाण अने मूलगुण क्रियारूपे एवुं पच्चक्खाण धम्मिल्लादिकने जाणवुं. इत्यादिक पच्चक्खाणना भंग विकल्प घणा छे, ते गुरुना विनयथी जाणीये, माटे यथागृहीत भंगे प[illegible]क्खाण आराधवां, तेनुं गमन छेल्ली गाथावडे कहे छे ॥ ४७ ॥

हवे ग्रंथ समाप्ति अर्थे गाथा कहे छे.

पच्चक्खाणमिणं से,-विऊण भावेण जिणवरुद्दिठं ॥ पत्ता अणंत-जीवा, सासयसुक्खं अणाबाहं ॥ ४८ ॥

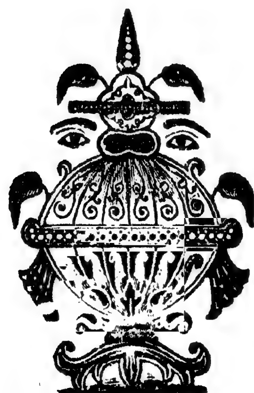
॥ इति प्रत्याख्यानभाष्यं संपूर्णम् ॥

अर्थ-(पच्चक्खाणं के०) पच्चक्खाण ते (इणं के०) ए यथोक्त कह्युं ते प्रत्ये (भावेण के०) भावे करीने एटले भावसहित, श्रद्धाये करी निःशंकित सम्यग्दर्शन सहित जे रीते (जिणवर के०) जिनेश्वर भगवाने ज्ञान क्रिया सहित उभयनयसम्मत (उद्दिठं के०) कह्युं छे, प्रकाश्युं छे ते प्रकारे, एवा गुणधारण रूप प[illegible]क्खा-

णने (सेविऊण के०) सेवीने, आदरीने, पालीने त्रिकालापे ाये (अणंतजीवा के०) अनंत जीव भव्यप्राणी ते (सासय दुरकं के०) शाश्वतां सुख (अणाबाहं के०) अनाबाध अव्याबाध–निराबाध, एटले नथी कोइ बाधा जिहां एवुं जे मोक्षस्थानक ते प्रत्ये (पत्ता के०) पाम्या, पामे छे अने पामशे. ॥ ४७ ॥

इति भाष्यत्रयवार्त्तिक,–मेतद्विवृण्वतार्ज्जितंसुकृतं ।
तेन स्ताद्भविकलोक,-स्सततं निरपायसौख्यरतः॥१॥

॥इति भाष्यत्रयं बाला बोधसहितं समाप्तम्॥



॥ अथ उपदेशरत्नकोशः ॥

उवएसरयणकोसं, नासिअनीसेसलोगदोगच्चं ॥ उवएसरयणमालं, वुछं नमिऊण वीरजिणं ॥ १ ॥

अर्थ–(नासिअनीसेसलोगदोगच्चं) नाश कर्यां छे समस्त लोकनां दारिद्र्य जेणे एवा (वीरजिणं) वीर जिनने (नमिऊण) नमस्कार करीने (उवएसरयणमालं) उपदेश रूप रत्ननी माला छे जेने विषे एवा (उवएसरयणकोसं) उपदेश रूप रत्नना भंडारने (वुछं) हुं कहीश.

जीवदयाइ रमिज्जइ, इंदियवग्गो दमिज्जइ सया वि ॥ सच्चं चेव चविज्जइ, धम्मस्स रहस्समिणमेव ॥ २ ॥

अर्थ–(जीवदयाइ) जीव दयाने विषे (रमिज्जइ) रमण करीये. (इंदियवग्गो)

इंद्रियोना समुहने (दमिज्जइ) दमन करीये. (सच्चं) सत्यने (चेव) निश्चे (चविज्जइ) बोलीये (इणमेव) आज (धम्मस्स) धर्मनुं (रहस्सं) रहस्य–तत्त्व छे. ॥ २ ॥

सीलं न हु खंमिज्जइ, न संवसिज्जइ समं कुसीलेहिं ॥ गुरुवयणं न खलिज्जइ, जइ नज्जइ धम्मपरमत्थो ॥ ३ ॥

अर्थ–(सीलं) शीयल व्रतने (हु) निश्चे (न खंमिज्जइ) न खंडन करीये. (कुसीलेहिं) कुशीलिया (समं) साथे (न संवसिज्जइ) न वास करीये. (गुरुवयणं) गुरुना वचनने (न खलिज्जइ) न उल्लंघन करीये. ए प्रकारे (जइ) यतिए (धम्मपरमत्थो) धर्मनो परमार्थ (नज्जइ) जाणवो. ॥ ३ ॥

चवलं न चंकमिज्जइ, विरइज्जइ नेव उज्ज्मो वेसो ॥ वंकं न पलोइज्जइ, हुंठा वि भणंति किं पिसुणा ॥ ४ ॥

अर्थ–(चवलं) चपलताए (न चंकमि-

जाइ) न चालीए. (उप्भडो) उद्भट (वेसो) वेष (नेव) नहिज (विरइज्जाइ) धारण करीये. (वंकं) वांकी दृष्टिए (न पलोइज्जाइ) न जोईये. तो (रुठा वि) क्रोध पामेला एवा पण (पिसुणा) चाडीयाउ (किं) शुं (जणंति) कहे–कही शके ? ॥ ४ ॥

नियमिज्जइ नियजीहा, अविआरिअं नेव किज्जए कज्जं । न कुलक्कमो अ लुप्पइ, कुविउ किं कुणइ कलिकालो ॥ ५ ॥

अर्थ–(नियजीहा) आपणी पोतानी जीह्वाने (नियमिज्जइ) नियममां राखीये,(अविआरिअं) अविचार्युं (कज्जं) कार्य (नेव) नहींज (किज्जए) करीए, (अ) वली (कुलक्कमो) कुलाचारने (न लुप्पइ) न लोपीये, तो (कुविउ) कोप पामेलो एवो (कलिकालो) कलिकाल (किं) शुं (कुणइ) करे–करी शके ? ५

मम्मं न उ लविज्जइ, कस्स वि आलं न

दिजाइ कया वि ॥ को वि न उक्कोसिज्जाइ, सज्जणमग्गो इमो डुग्गो ॥ ६ ॥

अर्थ—कोइने (उ) वळी (मम्मं) मर्म वचन (न लविज्जइ) न कहीये. (कस्स वि) कोइने (कया वि) कदापि (आलं) कलंक (न दिज्जइ) न दइये. (को वि) कोइने पण (न उक्कोसिज्जइ) आक्रोश न करीये. (इमो) आ (सज्जणमग्गो) सज्जननो मार्ग (डुग्गो) डुर्ग-किल्ला समान छे. अर्थात् ते कोइथी पराजव पामे नहीं ॥ ६ ॥

सवस्स उवयरिज्जाइ, न पम्हसिज्जाइ परस्स उवयारो । विहलं अवलंबिज्जाइ, उवएसो एस विउसाणं ॥ ७ ।

अर्थ—(सवस्स) सर्वने (उवयरिज्जाइ) उपकार करीये. (परस्स) परनो (उवयारो) उपकार (न पम्हसिज्जाइ) न विसारीये. (विहलं) डुःखीने (अवलंबिज्जाइ) अवलंबन आपीये. (एस) आ (उवएसो) उपदेश

(विउसाणं) विद्वानोनो ढे ॥ ७ ॥

को वि न अप्नत्थिजाइ, किजाइ कस्स वि न पत्थणाजंगो। दीणं न य जंपिजाइ, जिविजाइ जाव जीअलोए ॥ ८ ॥

अर्थ-(को वि) कोईने पण(न अप्नत्थिजाइ) अभ्यर्थना-प्रार्थना करीये नहीं. (कस्स वि) कोइनी (पत्थणाजंगो) प्रार्थनानो जंग (न किजाइ) न करीये. (य) वली (दीणं) दीन वचन (न जंपिजाइ) न बोलीये. (जाव) ज्यां सुधी (जीअलोए) जीवलोकने विषे (जिविजाइ) जीवीये त्यां सुधी ॥ ८ ॥

अप्पा न पसंसिजाइ, निंदिजाइ दुजाणो वि न कया वि ॥ बहु बहुसो न हसिजाइ, लप्नइ गुरुअत्तणं तेण ॥ ९ ॥

अर्थ-(कया वि) कदापि (अप्पा) आत्मानी (न पसंसिजाइ) प्रशंसा न करीये. (दुजाणो वि) दुर्जननी पण (न निंदिजाइ) निंदा न करीये. (बहु) घणुं (बहुसो)

घणी वार (न हसिज्जइ) न हसीये. (तेण) तेथी करीने (गुरुअत्तणं) मोटाईपणुं (लब्भई) पामीये. ॥ ए ॥

रिउणो न वीससिज्जइ, कया वि वंचिज्जए न वीसत्थो ॥ न कयग्घेहिं हविज्जइ, एसो नायस्स नीसंदो ॥ १० ॥

अर्थ-(रिउणो) शत्रुनो (न वीससिज्जइ) विश्वास न करीये. (कया वि) कदापि (वीसत्थो) विश्वासुने (न वंचिज्जए) छेतरीये नहि. (कयग्घेहिं) कृतघ्न एटले कर्या कामना हणनारा (न हविज्जइ) न थईये. (एसो) आ (नायस्स) न्यायनो (नीसंदो) मार्ग छे. ॥ १० ॥

रच्चिज्जइ सुगुणेसु, बज्झइ राउ न नेहवज्जेसु ॥ किज्जइ पत्त परिरका, दरकाण इमो अ कसवट्टो ॥ ११ ॥

अर्थ-(सुगुणेसु) सारा गुणीने विषे (रच्चिज्जइ) राजी थईये. (नेहवज्जेसु) साचा

स्नेह रहित पुरुषोने विषे (राउं) राग (न बज्झइ) न बांधीये. (पत्तपरिरका) पात्रनी परीक्षा (किज्जइ) करीये. (इमो अ) आज (दरकाण) माह्या पुरुषोनी (कसवट्टो) कसोटीनो पथ्थर छे. ॥ ११ ॥

नाकज्जमायरिज्जइ, अप्पा पाम्जिए न वयणिज्जे॥ न य साहसं चइज्जइ, उन्निज्जइ तेण जगहथ्थो ॥ १२ ॥

अर्थ–(अकज्जं) अकार्यने (न आयरिज्जइ) आचरीये अथवा आदरीये नहीं. (अप्पा) आत्माने (वयणिज्जे) निंद्य वचनादिकमां (न पाम्जिए) न पामीये. (य) वली (साहसं) साहस [साहसिकपणा] ने (न चइज्जइ) न तजीये. (तेण) तेथी (जगहथ्थो) जगतमां हाथ (उन्निज्जइ) उन्नो राखीये ॥१२॥

वसणे वि न मुज्झिजइ, मुच्चइ माणो न नाम मरणे वि ॥ विहवक्खए वि दिज्जइ, वयमसिधारं खु धीराणं ॥ १३ ॥

अर्थ-(वसणे वि) व्यसन-दुखमां पण (न मुज्झिज्जइ) न मुंझाइए, (मरणे वि) मरण थाय तो पण (नाम) कोमल आमंत्रणने विषे छे. (माणो) धर्मनुं बहुमान (न मुच्चइ) न मूकीये. (विहवक्खए वि) लक्ष्मीनो क्षय थये छते पण (दिज्जइ) दान दईये. एवुं (धीराणं) धीर पुरुषोनुं (असिधारं) खड्गनी धार जेवुं (वयं) व्रत छे (खु) निश्चे ॥१३॥

अइनेहो न वहिजइ, रूसिजइ नय पिये वि पयदिअहं । वद्धारिजाइ न कली, जलंजली दिजइ दुहाणं ॥ १४ ॥

अर्थ-(अइनेहो) अति स्नेह (न वहिज्जइ) न वहन करीये-न धरीये. (य) वली (पियेवि) प्रिय माणस उपर पण (पइदिअहं) निरंतर (न रूसिज्जइ) रोष न करीये. (कली) कजीयो [न वद्धारिज्जइ] वधारीये नहीं. ए रीते [दुहाणं] दुःखोने [जलंजली] जलांजली दइए ॥ १४ ॥

न कुसंगेण वसिज्जइ, बालस्स वि घिप्पए हिअं वयणं ॥ अनयाउ निवट्टिज्जइ, न होइ वयणिज्जया एवं. ॥ १५ ॥

अर्थ–[कुसंगेण] कुसंगीनी साथे [न वसिज्जइ] न वसीये. [बालस्स वि] बालकनुं पण (हिअं) हितकारी [वयणं] वचन [घिप्पए] ग्रहण करीये. [अनयाउ] अन्यायथी [निवट्टिज्जइ] निवर्तन पामीये. [एवं] एम करवाथी [वयणिज्जया] वचनीयता एटले निंदा [न होइ] न होय ॥ १५ ॥

विहवे वि न मच्चिज्जइ, न विसीइज्जइ असंपयाए वि ॥ वट्टिज्जइ समभावे, न होइ रणरणइ संतावो ॥ १६ ॥

अर्थ–(विहवे वि) वैभवने विषे पण (न मच्चिज्जइ) न माचीये–न गर्व करीये. (असंपयाए वि) संपत्ति रहितपणामां पण (न विसीइज्जइ) विषाद–खेद न करीये. (समभावे) समताने विषे (वट्टिज्जइ) व-

ीये. तो (रणरणइ) सारा मा‍ठा ‍ ागमा (संतावो) संताप (न होइ) न होय ॥ १६ ॥

वन्निज्जइ भिच्चगुणो, न परुक्खं न य सुअ‌स्स पच्चक्खं ॥ महिला उ नोभयावि हु, न नस्सए जेण माहप्पं ॥ १७ ॥

अर्थ–[भिच्चगुणो] भृत्य-चाकरना गुण [परुक्खं] परोक्षपणे [न वन्निज्जइ] न वखाणीये. [य] वली [सुअस्स] पुत्रना गुण [पच्चक्खं] प्रत्यक्षपणे [न] न वखाणीये. [उ] परंतु [महिला] स्त्रीना गुण [उभया वि] बन्ने प्रकारे पण-परोक्ष के प्रत्यक्षपणे पण [न] वखाणीये [हु] निश्चे. [जेण] जेथी [माहप्पं] पोतानुं माहात्म्य-मोटाईपणुं [न नस्सए] नाश न पामे. ॥ १७ ॥

जंपिज्जइ पिअवयणं, किज्जइ विणउ अ दिज्जए दाणं ॥परगुणगहणं किज्जइ, अमूलमंतं वसीकरणं ॥ १८ ॥

अर्थ–[पिअवयणं] प्रिय वचन [जंपि-

ज्जई] बोलीये. [विणउ] विनय करीये. (दाणं) दान (दिज्जए) दईए. (अ) वली (परगुणगहणं) परना गुणनुं ग्रहण (किज्जइ) करीये. ए (अमूलमंतं) अमूल्य मंत्र (वसीकरणं) वशीकरणनो छे ॥ १८ ॥

पत्थावे जंपिज्जइ, सम्माणिज्जइ खलोवि बहुमज्झे ॥ नज्जइ सपरविसेसो, सयलत्था तस्स सिज्झंति ॥ १९ ॥

अर्थ—(पत्थावे) पस्तावे-योग्य समये (जंपिज्जइ) बोलीये. (बहुमज्झे) घणा माणसोनी मध्ये (खलो वि) खल माणसनुं पण (संमाणिज्जइ) सन्मान करीये. (सपरविसेसो) पोतानो अने परनो विशेष—भेद (नज्जइ) जाणीये. तो (तस्स) ते माणसने(सयलत्था)सकल अर्थो (सिज्झंति) सिद्ध थाय छे ॥१९॥

मंतंताण न पासे, गम्मइ नइ परग्गहे अवीएहिं ॥ पडिवन्नं पालिज्जइ, सुकुलीणत्तं हवइ एवं ॥ २० ॥

अर्थ-(मंतंताण) मंत्र तथा तंत्रने (न पासे (न जोइए,) अबीयेहिं (बीजा विना-एकला (परग्गहे) पर घेर (नइ गम्मइ) न जईए. पडिवन्नं [प्रतिपन्न-अंगीकार करेलुं (पालिज्जइ) पालीये. (एवं) एम करवाथी [सुकुलीणत्तं] सारुं कुलीनपणुं [हवइ] थायछे ॥ २० ॥

भुंजइ भुंजाविज्जइ, पुछिज्ज मणोगयं क-हिज्ज सयं ॥ दिज्जइ लिज्जइ उचियं, इछि-ज्जइ जइ थिरं पिम्मं ॥ २१ ॥

अर्थ-[जइ] जो [थिरं] स्थिर एवा [पिम्मं] प्रेमने [इछिज्जइ] इछिए तो मित्रने घेर [भुंजइ] भोजन करीये. [भुंजाविज्जइ] तेने भोजन करावीये [मणोगयं] मनमां रहेलो विचार [पुछिज्ज] पूछीये अने [सयं] आपणे पोते [कहिज्ज] कहीये [उचियं] योग्य वस्तु [दिज्जइ] दईए अने [लिज्जइ] लईये. ॥२१॥

को वि न अवमन्निज्जइ, न य गव्विज्जइ

गुणेहिं निअएहिं । न विम्हउं वहिज्जइ, बहुर-
यणा जेणिमा पुहवी ॥ २२ ॥

अर्थ–[को वि] कोईने पण [न अवम-
न्निज्जइ) अपमान न करीये (य) वळी (निअ-
एहिं) पोताना (गुणेहिं) गुणोए करीने (न
गव्विज्जइ) गर्व न करीये [विम्हउं] विस्मय
(न वहिज्जइ) न वहन करीये (जेण) जे
कारण माटे (इमा) आ (पुहवी) पृथ्वी
(बहुरयणा) बहु रत्नवाळी छे. ॥ २२ ॥

आरंभिज्जइ लहुअं, किज्जइ कज्ज महंत-
मवि पछा ॥ न य उक्करिसो किज्जइ, लब्भइ गुरु-
अत्तणं जेण ॥ २३ ॥

अर्थ–प्रथम (लहुअं) नानुं काम (आरं-
भिज्जइ) आरंभ करीये (पछा) पछीथी (क-
ज्जमहंतं) मोटुं कार्य (अवि) पण (किज्ज-
इ) करीये (य) वळी (उक्करिसो) उत्कर्ष
(न किज्जइ) न करीये (जेण) जेथी (गु-
रुअत्तणं) गुरुत्व–मोटाई(लब्भइ) पामीये ॥२३॥

झाइज्जइ परमप्पा, अप्पसमाणो गणि-ज्जइ परो । किज्जइ न राग दोसो, छिन्निज्जइ तेण संसारो ॥ २४ ॥

अर्थ–[परमप्पा] परमात्मानुं [झाइज्जइ] ध्यान करीये (अप्पसमाणो) आपणा आत्मा समान [परो] परने (गणिज्जइ) गणीये. (राग दोसो) राग अने द्वेष (न किज्जइ) न करीये. (तेण) तेथी करीने [संसारो] संसार [छिन्निज्जइ] छेदीये. ॥ २४ ॥

उवएसरयणमालं, जो एवं ठवइ सुठु नि-अकंठे । सो नर सिवसुहलछी–वछयले रमइ-सछाइं ॥ २५ ॥

अर्थ–(एवं) ए प्रकारे (जो) जे माणस [उवएसरयणमालं] उपदेश रुप रत्ननी माला ने (सुठु) सारी रीते (निअकंठे) पोताना कं-ठने विषे [ठवइ] स्थापन करे छे. [सो] ते (नरं) माणस [सिवसुहलछीवछयले] शिव सुख रुपी लक्ष्मीना वक्षःस्थलने विषे

[सच्छाइं] स्वेछा थी (रमइ) रमे छे. ॥ २५॥

एअं पउमजिणेसर,–सूरिवयणगुंफरम्मिअं वहउ । भव्वजणो कंठगयं, विउलं उवएसमालमिणं ॥ २६ ॥

अर्थ–[एअं] ए प्रकारे [पउमजिणेसर-सूरिवयणगुंफरम्मिअं] पद्म जिनेश्वर सूरिना वचननी रचनावडे करीने रमणिक एवी [विउलं] विस्तीर्ण (इणं) आ [उवएसमालं] उपदेशमालाने [भव्वजणो] भव्य जन [कंठगयं] कंठगत [वहउ] वहन करो अर्थात कंठे धारण करो. ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ इति उपदेशरत्नकोशः समाप्तः ॥





श्रीरत्नाकरपंचविंशतिका



श्रेयःश्रियां मंगलकेलिसद्म, नरेन्द्रदेवेन्द्र-नतांघ्रिपद्म । सर्वज्ञ सर्वातिशयप्रधान, चिरं जय ज्ञानकलानिधान ॥ १ ॥

अर्थ–[श्रेयःश्रिया] मोक्षरूपी लक्ष्मीना [मंगलकेलिसद्म] मांगलिक क्रीडाना गृह समान [नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांघ्रिपद्म] राजाउं अने देवेन्द्रोवमे नमस्कार कराया ठे चरण कमल जेना एवा वली [सर्वातिशयप्रधान] सर्व-चोत्रीश अतिशये करीने प्रधान एवा वली [ज्ञान-कलानिधान] केवलज्ञान अने कलाना ज्ञंडार एवा [सर्वज्ञ] हे सर्वज्ञ प्रज्ञु! [चिरं]चिर-काल सुधी [जय] जय पामो ॥ १ ॥

जगत्त्रयाधार कृपावतार, दुर्वारसंसारवि-कारवैद्य । श्रीवीतराग त्वयि मुग्धज्ञावा,–द्विज्ञ

प्रज्ञो विज्ञपयामि किंचित् ॥ २ ॥

अर्थ–(जगत्त्रयाधार] त्रण जगतना आधारभूत एवा वली (कृपावतार) कृपाने माटे छे अवतार एटले जन्म जेनां एवा वली (दुर्वारसंसारविकारवैद्य) दुःखे करी वारी शकाय एवा संसारना विकारनो नाश करवामां वैद्य समान वली [विज्ञ] विशेष ज्ञानवंत एवा [श्रीवीतरागप्रज्ञो] हे वीतराग प्रभु ! [त्वयि] तमारे विषे (मुग्धभावात्) मुग्धपणा थकी [किंचित्] कांईक [विज्ञपयामि] हुं विनंति करुंछुं ॥ २ ॥

किं बाललीलाकलितो न बालः, पित्रोः पुरो जल्पति निर्विकल्पः । तथा यथार्थं कथयामि नाथ, निजाशयं सानुशयस्तवाग्रे ॥ ३ ॥

अर्थ–(बाललीलाकलितः) बालकनी क्रीडाए करीने युक्त अने (निर्विकल्पः) विकल्प रहित एवो [बालः] बालक [पित्रोः] मा बापनी [पुरः] पासे सत्य वचनने (किं) शुं

[न जल्पति] नथी बोलतो, अर्थात् बोले छे ज. (तथा) तेवी रीते [नाथ] हे नाथ ! [सानुशयः] पश्चात्तापे करी सहित एवो हुं [तव] तमारी (अग्रे) आगळ [निजाशयं] मारा-पोताना अभिप्रायने (यथार्थं) सत्य रीते [कथयामि] कहुं छुं ॥ ३ ॥

दत्तं न दानं परिशीलितं च, न शालि शीलं न तपोऽभितप्तम् । शुभो न भावोऽप्यभव-वन्नवेऽस्मिन्, विभो मया भ्रांतमहो मुधैव ॥४॥

अर्थ–(विभो) हे प्रभु ! (मया) में (दानं) दान (न दत्तं) दीधुं नथी. (च) वळी (शालि) सुंदर एवुं (शीलं) शीयल व्रत (न परिशीलितं) पाळ्युं नथी. वळी (तपः) तप (न तप्तं) तप्युं [कर्युं] नथी. वळी (शुभः) शुभ एवो (भावः) भाव (अपि) पण (न अभवत्) थयो नथी. (अहो) अहो ! (अस्मिन्) आ (भवे) संसारमां (मुधैव) फोगटज (भ्रांतं) भगवडे भमायुं छे–हुं भम्यो छुं ॥ ४ ॥

कार

दग्धोऽग्निना क्रोधमयेन दष्टो, दुष्टेन लोजा-ख्यमहोरगेण । ग्रस्तोऽजिमानाजगरेण माया,-जालेन बद्धोऽस्मि कथं जजे त्वाम् ॥ ५ ॥

अर्थ—हुं [क्रोधमयेन] क्रोध रूपी [अग्नि-ना] अग्निवमे [दग्धः] बळेलो [अस्मि] छुं. वली [दुष्टेन] दुष्ट एवा (लोजाख्यमहोरगेण) लोज नामना मोटा सर्पवमे [दष्टः] मंखाएलो छुं. वली (अजिमानाजगरेण)अजिमान रूपी अजगरवमे [ग्रस्तः] गळाएलो छुं. वली (माया-जालेन) माया रूपी जाळवमे (बद्धः) बंधाये-लो छुं. तेथी [त्वां] तमने (कथं) शी रीते [जजे] हुं भजुं ? ॥ ५ ॥

कृतं मयाऽमुत्र हितं न चेह, लोकेऽपि-लोकेश सुखं न मेऽजूत् । अस्मादृशां केवलमेव जन्म, जिनेश जज्ञे जवपूरणाय ॥ ६ ॥

अर्थ—(लोकेश) हे लोकना ईश ! (मया) में [अमुत्र] परलोकने विषे [च] तथा [इह] आ [लोकेऽपि] लोकने विषे पण [हितं] हि-

तकारी कार्य [न कृतं] कर्युं नथी, तेथी [मे] मने [सुखं] सुख (न अभूत्) न थयुं. तो [जिनेश] हे जिनेश ! [अस्मादृशां] अमारा जेवानो (जन्म) जन्म [केवलं) केवळ (भवपूरणाय एव) भवोने पूरण करवा माटे ज (जङ्गे) थयो छे. ॥ ६ ॥

मन्ये मनो यन्न मनोज्ञवृत्त, त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात्। द्रुतं महानंदरसं कठोर,—मस्मादृशां देव तदश्मतोऽपि ॥ ७ ॥

अर्थ—[मनोज्ञवृत्त] सुंदर छे आचरण जेनुं एवा (देव) हे देव ! (यत्) जे कारण माटे [अस्मादृशां] अमारा जेवानुं (मनः) मन (त्वदास्यपीयूषमयूखलाभात्) तमारा मुख रूपी चंद्रना लाभथी (महानंदरसं) मोटा आनंदना रसने [न द्रुतं] द्रव्युं नहीं [तत्] ते कारण माटे अमारुं मन (अश्मतोऽपि) पत्थरथी पण ('कठोरं) कठोर छे एम (मन्ये) हुं मानुं छुं. ॥ ७ ॥

त्वत्तः सुदुष्प्राप्यमिदं मयाप्तं, रत्नत्रयं भूरिभवभ्रमेण । प्रमादनिद्रावशतो गतं तत्, कस्याग्रतो नायक ! पूत्करोमि ॥ ८ ॥

अर्थ–(मया) में (भूरिभवभ्रमेण) घणा भवमां भ्रमण करवाए करीने (त्वत्तः) तमारा थकी (इदं) आ [सुदुष्प्राप्यं] अति दुष्प्राप्य (रत्नत्रयं) रत्नत्रयीने (आप्तं) मेळवी हती (तत्) ते (प्रमादनिद्रावशतः) प्रमाद अने निद्राना वशथी (गतं) जती रही तो (नायक) हे नायक ! (कस्य) कोनी [अग्रतः] आगळ (पूत्करोमि) हुं पोकार करुं ? ॥ ८ ॥

वैराग्यरंगः परवंचनाय, धर्मोपदेशो जनरंजनाय । वादाय विद्याध्ययनं च मेऽभूत्, कियद्ब्रुवे ? हास्यकरं स्वमीश ! ॥९॥

अर्थ–(मे) मारो (वैराग्यरंगः) वैराग्यनो रंग (परवंचनाय) परने छेतरवा माटे (धर्मोपदेशः) धर्मनो उपदेश (जनरंजनाय) लोकने रंजन करवा माटे (च) अने (विद्याध्ययनं)

विद्यानो अभ्यास (वादाय) वाद विवादने माटे (अभूत्) थयो. (ईश) हे ईश! [त्वं] मारुं-पोतानुं [हास्यकरं] हास्यकारक-कृत्यादिक (कियत्) केटलुंक [ब्रुवे] कहुं? ॥ ९ ॥

परापवादेन मुखं सदोषं, नेत्रं परस्त्रीजन-वीक्षणेन। चेतः परापायविचिंतनेन, कृतं भवि-ष्यामि कथं विभोऽहम् ॥ १० ॥

अर्थ—में (परापवादेन) परनिंदावडे (मुखं) मुखने, [परस्त्रीजनवीक्षणेन] परनी स्त्रीओने जोवावडे (नेत्रं) नेत्रने, (परापायविचिंतनेन) परनुं माठुं चिंतववावडे (चेतः) चितने [सदोषं] दोषवाळुं (कृतं) कर्युं. तो (विभो) हे विभो! [अहं] हुं (कथं) शी रीते (भविष्यामि) थईश?--मारुं शुं थशे? ॥ १० ॥

विडंबितं यत्स्मरघस्मरार्ति,—दशावशात्स्वं विषयान्धलेन। प्रकाशितं तद्भवतो ह्रियैव, स-र्वज्ञ! सर्वं स्वयमेव वेत्सि ॥ ११ ॥

अर्थ—(विषयांधलेन) विषयोमां अंध

थयेला एवा में (स्मरघस्मरार्तिदशावशात्) कामदेव रुपी ज्ञक्षकनी पीमानी दशाना वशथी (यत्) जे (स्वं) मारा आत्माने [विडंबितं] विडंबना पमाडी (तत्) ते [ज्ञवतः] आपनी पासे (ह्रिया एव) लज्जाथी ज [प्रकाशितं] में प्रकाश कर्युं ढे. केमके (सर्वज्ञ) हे सर्वज्ञ ! (स्वयमेव) तमे पोते ज [सर्वं] सर्व (वेत्सि) जाणो ढो. ॥ ११ ॥

ध्वस्तोऽन्यमंत्रैः परमेष्ठिमंत्रः, कुशास्त्रवाक्यै-र्निहतागमोक्तिः । कर्तुं वृथा कर्म कुदेवसंगा-द-वांढि ही नाथ मति ज्रमो मे ॥ १२ ॥

अर्थ—में (अन्यमंत्रैः) बीजा मंत्रोए करीने [परमेष्ठिमंत्रः] परमेष्ठि मंत्र (ध्वस्तः) नाश पमाड्यो—अवगणना करी, (कुशास्त्रवाक्यैः) कुशास्त्रनां वाक्योये करीनें [आगमोक्तिः] आगमनां वचनो [निहता] हणी नांख्यां-ढांकी दीधां अर्थात् न सांज्ञळ्या अने [कुदे-वसंगात्] कुदेवना संगथी (कर्म) कर्मने (वृथा) फोगट (कर्तुं) करवाने (अवांढि)

वांछ्युं, ते सर्व [नाथ] हे नाथ! (मे) मारो (मतिभ्रमः) मतिनो विभ्रम थयो छे [ही] निश्चे.

विमुच्य दृग्लक्ष्यगतं भवंतं, ध्याता मया मूढधिया हृदन्तः। कटाक्षवक्षोजगभीरनाभी,-कटीतटीयाः सुदृशां विलासाः

अर्थ–(मूढधिया) मूढ बुद्धिवाळा (मया) में [दृग्लक्ष्यगतं] दृष्टि लक्ष्यमां आवेला एवा (भवन्तं) आपने [विमुच्य] मूकीने (हृदन्तः) हृदयमां (सुदृशां) स्त्रीयोना (कटाक्षवक्षोजगभीरनाभीकटीतटीयाः) कटाक्ष, स्तन, गंभीर नाभी तथा कटी तटना (विलासाः) विलासोनुं (ध्याताः) ध्यान कर्युं छे. ॥ १३ ॥

लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन, यो मानसो रागलवो विलग्नः। न शुद्धसिद्धांतपयोधिमध्ये, धौतोऽप्यगात्तारक! कारणं किम्? ॥१४॥

अर्थ–(लोलेक्षणावक्त्रनिरीक्षणेन) चपल नेत्रवाळी स्त्रीयोनां मुख जोवाथी (मानसो) मन संबंधि [यः] जे (रागलवः) रागना

लेश [विलग्नः] लागेलो छे, ते (शुद्धसिद्धान्त-पयोधिमध्ये) पवित्र सिद्धान्त रूपी समुद्रमां (धौतोऽपि) धोया छतां पण (न अगात्) गयो नहीं तो (तारक) हे तारनार प्रभु ! [किं कारणं) तेनुं शुं कारण ? ॥ १४ ॥

अंगं न चंगं न गणो गुणानां, न निर्मलः कोऽपि कलाविलासः । स्फुरत्प्रभा न प्रभुता च काऽपि, तथाप्यहंकारकदर्थितोऽहम् ॥ १५ ॥

अर्थ—मारुं (अंगं) शरीर (चंगं) सुंदर (न) नथी, वली (गुणानां) गुणोनो (गणः) समुह (न) नथी. वली (निर्मलः) निर्मळ एवो [कोऽपि] कोई पण (कलाविलासः) कलानो विलास (न) नथी. (च) वली (स्फुरत्प्रभा) स्फुरायमान छे कांति जेनी एवी (काऽपि) कोई पण (प्रभुता) प्रभुता (न) नथी. [तथापि] तो पण (अहं) हुं (अहंकारकदर्थितः) अहंकारथी कदर्थना पामेलो छुं. ॥ १५ ॥

आयुर्गलत्याशु न पापबुद्धि—र्गतं वयो नो

विषयाभिलाषः । यत्नश्च भैषज्यविधौ न धर्मे, स्वामिन्महामोहविडम्बना मे ॥ १६ ॥

अर्थ–(मे) मारुं (आयुः) आयुष्य (आशु) शीघ्रताथी [गलति] जाय छे, पण (पापबुद्धिः) पापनी बुद्धि (न) जती नथी. वली (वयः) वय [गतं] गयुं, पण [विषयाभिलाषः] विषयोनी इच्छा (नो) गई नहीं. [च] वली (भैषज्यविधौ) औषधनी विधिमां (यत्नः) यत्न कर्यो, पण (धर्मे) धर्ममां (न) यत्न कर्यो नहीं, ते सर्व (स्वामिन्) हे स्वामिन् ! (महामोहविडम्बना) मोटा मोहनी विटंबना छे.

नात्मा न पुण्यं न भवो न पापं, मया विटानां कटुगीरपीयम् । अधारि कर्णे त्वयि केवलार्के, परिस्फुटे सत्यपि देवधिङ्माम् ॥ १७ ॥

अर्थ–(देव) हे देव ! [केवलार्के] केवल ज्ञान रूपी सूर्य समान [त्वयि] तमे (परिस्फुटे) अति प्रगट [सत्यपि] छतां पण (आत्मा) आत्मा-जीव (न) नथी, (पुण्यं) पुण्य (न) नथी, (भवः) जन्म (न) नथी तथा

(पापं) पाप [न] नथी. (इयम्) एवी [वि टानां] नास्तिक लोकोनी [कटुगीः] कटु वाणी [अपि] पण (मया) में [कर्णे] कर्णने विषे (अधारि) धारण करी. माटे [मां] मने (धिक्) धिक्कार छे ॥ १७ ॥

न देवपूजा न च पात्रपूजा, न श्राद्धधर्मश्च न साधुधर्मः । लब्ध्वापि मानुष्यमिदं समस्तं, कृतं मयारण्यविलापतुल्यम् ॥ १८ ॥

अर्थ—(मया) में [देवपूजा] देवनी पूजा (न) न करी, [च] वली (पात्रपूजा) पात्र नी पूजा (न) न करी. (श्राद्धधर्मः) श्रावकनो धर्म [न] न पाल्यो. (च) वली [साधुधर्मः] साधुनो धर्म [न] न पाल्यो, [इदं] आ (मा- नुष्यं) मनुष्य ज्ञव (लब्ध्वा) पामीने [अपि] पण (समस्तं) सर्व [अरण्यविलापतुल्यं] अ रण्यमां करेला विलापनी बराबर (कृतं) कर्युं.

चक्रे मयाऽसत्स्वपि कामधेनु,—कल्पद्रु- चिन्तामणिषु स्पृहार्तिः । न जैनधर्मे स्फुट- शर्मदेऽपि, जिनेश! मे पश्य विमूढज्ञावम् ॥

अर्थ–(मया) में (असत्सु) असत्य एवा (कामधेनुकल्पद्रुचिन्तामणिषु) कामधेनु, कल्प-वृक्ष अने चिंतामणि रत्नने विषे (अपि) पण (स्पृहार्तिः) वांछानी पीडा [चक्रे] करी. परंतु [स्फुटशर्मदे] प्रगट सुख आपनार एवा (अपि) पण [जैनधर्मे] जैन धर्मने विषे (न) वांछा करी नहीं. माटे (जिनेश) हे जिनेश्वर! (मे) मारा (विमूढभावं) मूढपणाने [पश्य] तमे जुओ ॥ १ए ॥

सद्भोगलीला न च रोगकीला, धनागमो नो निधनागमश्च। दारा न कारा नरकस्य चित्ते, व्यचिंति नित्यं मयकाऽधमेन ॥

अर्थ–(अधमेन) अधम एवा [मयका] में (नित्यं) हमेशां (चित्ते) चित्तमां (सद्भोगलीला) सारा सारा भोगनी लीला [व्यचिंति] चिंतवी, (च) पण (रोगकीला) रोग रूप खीलो [न] चिंतव्यो नहीं. (धनागमः) धननी प्राप्ति चिंतवी. [च] पण (निधनागमः)

मरणनी प्राप्ति (नो) चिंतवी नहीं. (दारा) स्त्री चिंतवी, पण [नरकस्य] नरकनुं [कारा] कारागृह (न) चिंतव्युं नहीं ॥ २० ॥

स्थितं न साधोर्हृदि साधुवृत्तात्, परोपकारान्न यशोऽर्जितं च । कृतं न तीर्थोद्धरणादिकृत्यं, मया मुधा हारितमेव जन्म ॥ २१ ॥

अर्थ-(मया) में [साधुवृत्तात्] सारा आचरणथी (साधोः) साधु पुरुषना (हृदि) हृदयमां [न स्थितं] रहेवायुं नथी. वली [परोपकारात्] परोपकार करवाथी (यशः) यश (न अर्जितं) उपार्जन कर्यो नथी. (च) वली (तीर्थोद्धरणादिकृत्यं) तीर्थनो उद्धार विगेरे कार्य (न कृतं) कर्युं नथी. तेथी [जन्म] जन्म [मुधा] फोगट (हारितं) गुमाव्यो छे (एव) निश्चे ॥ २१ ॥

वैराग्यरंगो न गुरूदितेषु, न दुर्जनानां वचनेषु शान्तिः । नाध्यात्मलेशो मम कोऽपि देव, तार्यः कथंकारमयं भवाब्धिः ॥२२॥

अर्थ-(मम) मने (गुरूदितेषु) गुरुना

वचनोने विषे–वचनोवमे (वैराग्यरंगः) वैराग्य नो रंग (न) थयो नहीं. (दुर्जनानां) दुष्ट जनोनां (वचनेषु) वचनोने विषे (शांतिः) शांति (न) थई नहीं. वली (कोऽपि) कांई पण (अध्यात्मलेशः) अध्यात्मनो लेश (न) थयो नहीं. तो (देव) हे देव ! (अयं) आ (भवाब्धिः) भवसागर (कथंकारं) शी रीते (तार्यः) मारे तरवो ? ॥ २२ ॥

पूर्वे भवेऽकारि मया न पुण्य,–मागामिजन्मन्यपि नो करिष्ये। यदीदृशोऽहं मम तेन नष्टा, भूतोद्भवद्भाविभवत्रयीश ! ॥२३॥

अर्थ–(मया) में (पूर्वे) पूर्व (भवे) भवमां [पुण्यं] पुण्य (न अकारि) कर्युं नथी, अने (आगामिजन्मनि) आवता जन्मने विषे (अपि) पण (नो करिष्ये) करीश नहीं.(यत्) जे कारण माटे [अहं) हुं (ईदृशः) एवो छुं. [तेन] ते कारणथी (ईश) हे ईश ! (मम] मारा [भूतोद्भवद्भाविभवत्रयी] भूत, वर्त्तमान, अने भविष्य ए त्रणे भवो (नष्टा) नाश पाम्या.

किं वा मुधाऽहं बहुधा सुधाभुक्, पूज्य त्वदग्रेचरितं स्वकीयम् । जल्पामि यस्मान्निजगत्स्वरूप, निरूपकस्त्वं कियदेतदत्र ॥२४॥

अर्थ–(वा) अथवा तो (सुधाभुक्पूज्य) हे देवोना पूज्य! अथवा हे देव ! हे पूज्य ! [त्वदग्रे] तमारी पासे (अहं) हुं (स्वकीयं) मारूं पोतानुं (चरितं) चरित्र (बहुधा) बहु प्रकारे (मुधा) फोगट (किं) शुं (जल्पामि) कहुं ? (यस्मात्) जे कारण माटे [त्वं] तमे [त्रिजगत्स्वरूपनिरूपकः] त्रण जगतना स्वरूपनुं निरूपण करनारा छो, अथवा हे त्रण जगतना स्वरुपवाळा ! सर्वज्ञ छो, तेथी (अत्र) अहि–तमारे विषे (एतद्) आ–मारुं चरित्र (कियत्) शुं मात्र छे ? ॥२४॥

दीनोद्धारधुरंधरस्त्वदपरो नास्ते मदन्यः कृपा–पात्रं नात्र जने जिनेश्वर तथाप्येतां न याचे श्रियम् । किं त्वर्हन्निदमेव केवलमहो सद्बोधिरत्नं शिवं, श्रीरत्नाकर! मंगलैकनिलय! श्रेयस्करं प्रार्थये ॥२५॥

अर्थ--(जिनेश्वर) हे जिनेश्वर ! (त्वदपरः) तमाराथी बीजो कोइ (दीनोद्धारधुरंधरः] दीन लोकनो उद्धार करवामां धुरंधर (नास्ते) नथी, अने (मदन्यः) माराथी बीजो कोई (अत्र) आ (जने) लोकमां (कृपापात्रं) कृपानुं पात्र (न) नथी, (तथापि) तो पण (एतां) आ--प्रत्यक्ष (श्रियं] लक्ष्मी धनने [न याचे) हुं मागतो नथी. (किं तु) परंतु (श्री रत्नाकर) हे मोक्ष लक्ष्मीना सागर समान अने (मंगलैकनिलय) मंगलना अद्वितीय स्थान रूप एवा (अहो अर्हन्) हे अर्हन् देव ! (केवलं) फकत (इदं) आ [शिवं] मोक्ष फळ आपनोर अने (श्रेयस्करं) कल्याणकारी (सद्बोधिरत्नं) सारा बोधि रत्न--सम्यक्त्वनी (एव] ज (प्रार्थये) हुं प्रार्थना करुंछुं. आ श्लोकमां "श्री रत्नाकर" शब्दवडे स्तुति कर्ताए पोतानुं " रत्नाकर सूरि ".एवुं नाम पण सूचव्युं छे.

॥ इति श्रीरत्नाकरपञ्चविंशतिका समाप्ता ॥

शुद्धिपत्रिका.

पृष्टाङ्क.	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	१०	चार थुइ एटले	चार थुइ अथवा
६५	६	अप्पडिहयवराण	अप्पडि यवरनाण
७५	१३	वीरथुइ	वीरथुई
११३	४	ग बीअं	दुगि बीअं
१४१	८	तेन	तेने
१५५	१९	उक्कपप्कोड	उक्कपप्फोड
१६६	१५	वद्ध	बद्ध
१६६	१७	बुद्धिये	बुद्धिये
१७२	१४	तिछयराण	तित्थयराण
१८८	७	बाहिर्दिशी	बहिर्दिशीर्थी
१८९	१२	पाण	पाणी
१९६	१	सज्झाओ	सज्झाओ
२०५	६	ते शिक्षाव्रता–	ते गुणव्रत शिक्षाव्रता–
२०८	११	चउविहार प्रमुख करीये,	अनशन करिये,
२२५	७	द्धित्रिधाहार	द्विविधाहार
२७८	९	जललपासिय	जलल्पासिय
३०२	१६	भागामाहेथी	भागामांहेथी
”	”	भागे	भांगे
३०७	५	मल	मूल
३११	१६	सुरेंद्रदत्तना	समुद्रदत्तना
३१२	१	माता छुं	माता कमलानामे छुं
३१६	१४	कथा	गाथा
३२६	१८	सिधारं	सिधारं